Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इंद्रप्रिया

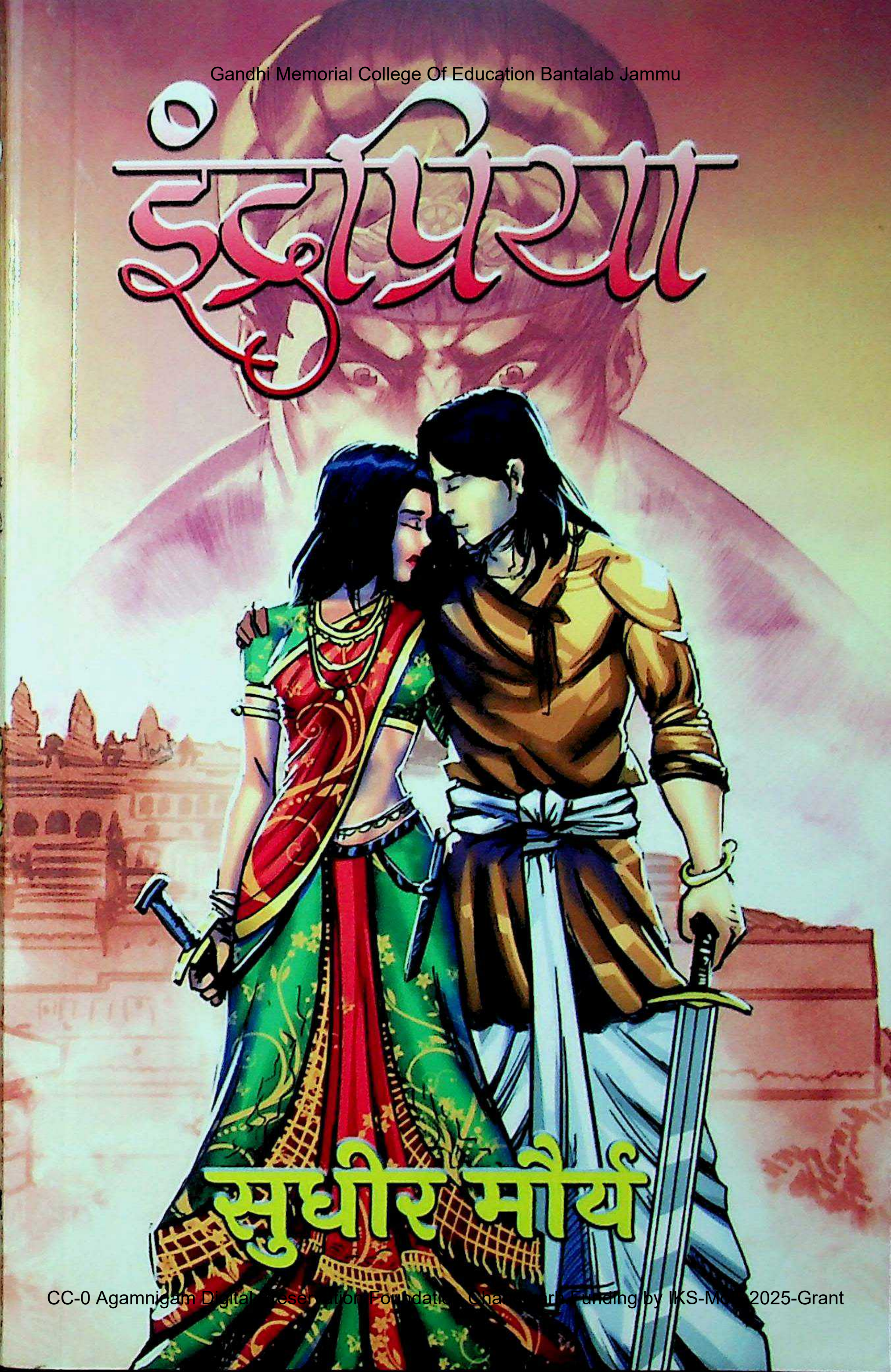

सुधीर मौर्य

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE 2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इंद्रप्रिया

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

सुधीर मौर्य

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu
Acc No.... 9652
Dated....... 19.12.2023

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उपन्यास : इंद्रप्रिया

लेखक – सुधीर मौर्य

© सुधीर मौर्य

कवर : BOOK BABU [Harendra]

प्रकाशन के सर्वाधिकार लेखक के पास सुरक्षित हैं, बिना अनुमति के पुस्तक के किसी भी भाग, कथा का प्रकाशन - किसी भी रूप में - वर्जित है। ऐसा पाये जाने पर कानूनी कार्रवाई अवश्यंभावी है।

संस्करण – प्रथम

मूल्य – 149 : 00 रूपये

प्रकाशक: साहित्य विमर्श प्रकाशन

प्रकाशक पता : 987, सेक्टर 09, गुरुग्राम, हरियाणा 122006,

दूरभाष संख्या : 9310599506

ईमेल आई डी : contact@sahityavimarsh.in

मुद्रक:

मणिपाल टेक्नोलॉजी लिमिटेड, मणिपाल

ISBN: 978-81-952171-0-6

उपन्यास के सभी पात्र, स्थान एवं घटनाएं काल्पनिक हैं। किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति, समुदाय अथवा स्थान से उनकी समानता संयोग मात्र होगी। उपन्यास में निहित तथ्यों का प्रयोग कहानी को रोचक बनाने के लिए किया गया है उनका वास्तविकता से कोई संबंध नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद की स्थिति में न्यायक्षेत्र गुरुग्राम ही रहेगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लेखकीय

ऐतिहासिक उपन्यास लिखना यद्यपि एक कठिन कार्य है किंतु फिर भी मैं इसमें अत्यंत आनंद का अनुभव करता हूं। इस उपन्यास और इससे पहले लिखे गए मेरे सारे ऐतिहासिक और पौराणिक उपन्यास जिन्हें मैं जब लिख रहा था उस समय मैंने स्वार्गिक आनंद का अनुभव किया।

इंद्रप्रिया वास्तव में मेरे लिए सिर्फ एक कथा या उपन्यास भर नहीं है अपितु यह दस्तावेज का एक हिस्सा है उस काल का जब भारत में मुगल सल्तनत अपने चरम पर थी। उस समय भारत पर मुगल बादशाह अकबर जिसे इतिहासकारों ने महान घोषित कर रखा है उसका अबाध शासन चालू था। मुगल बादशाह अकबर की महानता को महिमामंडन करने वाली अनेकों कहानियां उपन्यास लिखे गए। जब मैंने इस उपन्यास को लिखना आरंभ किया तो मेरे सामने कठिन चुनौती थी क्योंकि इस उपन्यास में मुगल बादशाह अकबर एक किरदार के रूप में उपस्थित था और मेरी लेखनी साक्ष्यों और तर्कों के आधार पर उसकी महानता को खंडित करने का प्रयास कर रही थी।

प्रस्तुत उपन्यास ओरछा की राजनर्तकी प्रवीन राय के जीवन पर आधारित है। प्रवीन राय जिनके ऊपर साक्षात सरस्वती का आशीर्वाद था, वह प्रवीन राय जिनके अंग में आम्रपाली का नृत्य निवास करता था, वह प्रवीन राय जिन्हें आचार्य केशव की शिष्या होने का गौरव हासिल था, वह प्रवीन राय जो ओरछा के राजकुमार इंद्रजीत के एकनिष्ठ प्रेयसी थी।

अपने काव्यचातुर्य, अपने नृत्य और अपनी प्रवीणता से प्रवीन राय ने ना केवल स्वयं को अमर कर दिया बल्कि उनके साथ-साथ उनके प्रेमी उनके पति राजकुमार इंद्रजीत का नाम भी अमर हो गया, ओरछा अमर हो गया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रवीन राय की महानता केवल इतनी भर नहीं है बल्कि उन्होंने मुगल बादशाह कामुक अकबर के दरबार में जाकर अपने वाकचातुर्य से उसे पराजित किया। वह घटना भारतीय इतिहास का एक स्वर्णिम पृष्ठ है।

अब इस उपन्यास के बारे में ज्यादा कुछ ना लिखकर मैं सीधे ये उपन्यास अपने पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता हूं और मुझे आशा है कि वह सदैव की भांति अपना प्रेम और स्नेह मुझे प्रदान करेंगे।

महान ईश्वर को नमन करते हुए...

- सुधीर मौर्य

संपर्क: ग्राम और पोस्ट-गंज जलालाबाद, जनपद-उन्नाव,
पिन-२०९८६९, उत्तर प्रदेश
ईमेल: sudheermaurya1979@rediffmail.com
Blog: www.sudheer-maurya.blogspot.com
Mob: 09619483963

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अतीत के खंडहरों में विलुप्त हो चुके ऐतिहासिक चरित्रों को आवाज दे देकर बुलाने, उन्हें पास बिठाकर,उनका हाथ थामकर उनकी कहानी सुनने वाले लेखक सुधीर मौर्या जी अपने नायकों के चयन के द्वारा सदैव ही मुझे चौंकाते रहे हैं। और इस बार तो मेरी जन्मभूमि बुंदेलखंड के ओरछा की 'रसिकप्रिया' 'राय प्रवीन' का पूर्ण जीवन वृतांत प्रस्तुत कर उन्होंने भावविभोर ही कर दिया। आपकी यह कृति इतिहास के शोधकर्ताओं के साथ-साथ रूमानी साहित्य के कद्रदानों के लिए एक उपहार सिद्ध होगी। अप्रतिम सौंदर्य की स्वामिनी, वाकपटु, नृत्य, संगीत, साहित्य सभी विधाओं में प्रवीण 'राय प्रवीन' की कथा प्रत्येक बुंदेली बाला के आदर्श चरित्र का साकार स्वरूप है।

बुंदेलखंड की बालिकाएं यथा रानी लक्ष्मीबाई एवं रानी दुर्गावती जहाँ अपनी वीरता, दूरदृष्टि और नेतृत्व योग्यताओं के लिए जानी जातीं हैं, वहीं अपने प्रेम और सम्मान की रक्षा के लिए जान की बाजी लगा देने वालीं मस्तानी और राय प्रवीन जैसी सुंदरियां भी बुंदेली कन्याओं के इतिहास में चार चाँद लगा रहीं हैं। कदाचित इतिहासकारों के पक्षपातपूर्ण रवैये के कारण ही बुंदेलखंड के इन रत्नों को समुचित पहचान व सम्मान नहीं दिया गया। तथापि संतोष का विषय है कि सुधीर मौर्या जी जैसे उत्साही, युवा एवं शोधार्थी लेखक ऐसे विस्मृत चरित्रों को प्रकाश में लाकर ऐतिहासिक साहित्य को समृद्ध करने का प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं।

बादशाह अकबर के दरबार में अपनी वाकपटुता से उसे निरूत्तर कर ओरछा सहित समस्त बुंदेलखंड के गौरव का मान रखनेवाली देवीसदृश 'राय प्रवीन' के संपूर्ण जीवनवृत्त को अपनी जानीमानी प्रवाहपूर्ण शैली में प्रस्तुत करने के लिए सुधीर मौर्या जी बहुत बधाई के पात्र हैं। यह उपन्यास आपकी साहित्यिक यात्रा में मील का पत्थर सिद्ध होगा, यही विश्वास एवं शुभेच्छा है।

- वफा फराज

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुक्रमणिका

मुक्ति	11
माधव का	17
वारद्वारा की पूर्णिमा	23
ओरछा	31
राय प्रवीना	37
पातुर	43
राजरानी	51
किरणवती	59
रुक्मणि कुंवरि का षडयंत्र	73
शाही फरमान	83
विजय	93
इंद्रप्रिया	105
युद्ध	115
अंतिम यात्रा	121

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रत्नाकर लालित सदा, परमानंदहि लीन,
अमल कमल करनीय कर, रमा की राय प्रवीन।
राय प्रवीन की शारदा, सुचि रुचि राजत अंग,
वीना पुस्तक धारिणी, राजहंस सुत संग।
--आचार्य केशवदास

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुक्ति

"हुकुम! इतने कम समय में इतनी अधिक मात्रा में कटार, बर्छी, भाले निर्मित करना कठिन कार्य है।"

जागीरदार की अत्यधिक संख्या में आयुध निर्माण करने की बात सुनकर भूरेलाल ने धौंकनी चला रही अपनी पत्नी पर एक दृष्टि डालकर, खड़े होकर, विनम्रता से हाथ जोड़कर, शीश झुकाकर कहा था।

"कठिन कार्य है, किन्तु असंभव तो नहीं। सुनो भूरेलाल, ये कार्य समय से पूर्ण हो जाना चाहिए। ये जो श्रमिक हैं," - जागीरदार ने वहाँ लोहा कूट रहे, उन्हें धार दे रहे श्रमिकों को इंगित करते हुए कहा - "आवश्यकता हो तो इनकी कार्यावधि में बढ़ोत्तरी करो, निद्रा और विश्राम कम करो। स्मरण रहे, इनमें से बहुत सारे अस्त्र-शस्त्र जोधपुर नरेश के पास भिजवाए जाने हैं।"

"हुकुम! हम सभी पहले से ही बहुत कम निद्रा और विश्राम ले कर सतत कार्य में जुटे हैं। आप तो जानते हैं हुकुम, ये अत्यंत परिश्रम भरा कार्य है। अब यदि इससे अधिक परिश्रम किया गया, तो थकान के कारण बीमार होने की आशंका है।" - भूरेलाल का स्वर अत्यधिक विनम्रता की वजह से क्षीण हो गया था।

"भूरेलाल, ये जोधपुर राज्य की रियासत है और हम यहाँ के जागीरदार। हमें बहाने सुनने का अभ्यास नहीं है। न ही तुमसे व्यर्थ में वार्तालाप करने का समय है। हम नहीं जानते, तुम्हें कैसे क्या करना है।" - जागीरदार ने वहाँ निकट ही खेल रहे एक पांच-छः वर्षीय बालक को देखते हुए आगे कहा - "चाहो तो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस बालक से श्रम करवाओ, किन्तु समय से कार्य पूर्ण करो। ये हमारा आदेश है और आदेश की अवेहलना का यहाँ क्या दंड मिलता है, हमें लगता है, पिछले बीस वर्षों में ये तुम भली-भांति जान गये होगे।" इसके बाद वो रोबीला जागीरदार अपने सैनिकों समेत वहाँ से अन्यत्र चला गया और भूरेलाल धौंकनी चला रही पत्नी के निकट धम्म से बैठकर वहाँ से कुछ दूरी पर मिट्टी से बने खिलौनों के साथ खेल रहे अपने पुत्र माधव को देखने लगा।

"कैसे होगा ये इतना कठिन कार्य, क्या हमें अपने पुत्र को अल्पायु में भट्ठी की आग में झुलसाना होगा?" भूरेलाल की पत्नी कह कर उठी और घड़े से एक मिट्टी के पात्र में पानी लाकर अपने पति को दिया।

पत्नी से पानी लेकर उससे अपने सूखते गले को गीला करके भूरेलाल ने कातर आँखों से आसमान की ओर देखते हुए कहा- "विधाता, क्या मेरी तरह मेरे पुत्र को भी इस निष्ठुर जागीरदार के कैदखाने में रहकर, भट्ठी में लोहा गलाते हुए, अपनी देह का लहू जलाना होगा? नहीं, मेरे ईश्वर अब रहम कर, अब मेरे पुत्र की खातिर हमें इस कैद से निकाल, जहाँ हम पिछले बीस वर्ष से बंदियों की भांति रात-दिन श्रम कर रहे हैं। मेरी इन आँखों में धुंधली होती मेरी मातृभूमि वारद्वारा की छवि बिल्कुल ही खत्म हो, उससे पहले एक बार हमें हमारी जन्मभूमि के दर्शन करवा दे।"

उस रात भूरेलाल बेचैनी में सिर्फ करवटें बदल रहा था। जमीन पर बिछे पुआल और कथरी का बिस्तर उसकी करवटों की वजह से एक जगह इकट्ठा हो गया था। नींद कहीं कोसों दूर तक नजर नहीं आ रही थी।

भूरेलाल की बगल में आँख बंद किये लेटी उसकी पत्नी अपने पति की करवटों से उसकी मनोदशा समझ रही थी। यहाँ एक जागीरदार के ताबे में भूरेलाल सपत्नीक लगभग बंदी जीवन जीते आया था। उसने इसे अपनी किस्मत का भाग समझकर स्वीकार भी कर लिया था पर - "अब उसके पुत्र को भी ऐसा ही जीवन बिताना पड़ेगा" - ऐसा सोचकर भूरेलाल अत्यंत व्यथित हो उठा था। व्यथित तो उसकी पत्नी भी थी।

"आपको क्या लगता है, आपकी प्रार्थना सुनकर ईश्वर हमें यहाँ से स्वतंत्र करवाने के लिए खुद आयेंगे?"- जब एक बार भूरेलाल ने अपनी
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पत्नी की तरफ करवट ली, तब उसकी पत्नी ने अपनी आँखें खोलकर उसे देखते हुए पूछा।

"मतलब क्या है तुम्हारा, क्या कहना चाहती हो?"- भूरेलाल अपनी पत्नी को देखते हुए झल्लाते हुए बोला - "ईश्वर से विनती करना और उनकी कृपा की राह देखना भी, अब मना है क्या?"

"हम गरीबों और असहायों के पास भगवान की प्रार्थना करने के अलावा और कोई अधिकार भी तो नहीं है, लेकिन...।"

"लेकिन क्या?" - पत्नी द्वारा बात अधूरी छोड़ देने से भूरेलाल की झल्लाहट और बढ़ गई थी।

"भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को अपनी बहन ब्याही थी, वे उनके परम मित्र भी थे।"

"मैंने तुझसे भगवान की प्रार्थना करने के बारे में बात की थी, तुझे रात की इस घड़ी भागवत बाँचने को नहीं कहा।" - पत्नी को यह बात कहकर भूरेलाल ने दूसरी ओर करवट ले ली।

"अरे, मैं कोई पंडित हूँ जो भागवत कहूँ। इतना ज्ञान हम मजूरो में कहाँ? मैं तो सिर्फ इतना जानती हूँ कि श्रीकृष्ण साक्षात भगवान थे और अर्जुन के मित्र भी।"

"ये तो सारी दुनिया जानती है।"- भूरेलाल अपनी पत्नी की बात सुन के वापस उसकी ओर पलटते हुए बोला - "ये बात मैं भी जानता हूँ, इसे बताने के लिए तुझे अपना मुँह धौंकनी जैसा चलाने की जरूरत नहीं है।"

भूरेलाल की कड़ाई से कही गई बात सुनकर उसकी पत्नी थोड़ी देर अबोल बनी रही और फिर तनिक हिम्मत जुटाकर बोली - "मैं तो सिर्फ ये बताना चाहती हूँ कि जब भगवान साक्षात इस धरती पर मौजूद थे, तब उन्होंने अपने सगे बहनोई और परम मित्र की सीधे कोई सहायता नहीं की। भगवान ने सारे काम अर्जुन को ही करने को कहा और खुद केवल उन कामों में सहायता की। और अब जबकि भगवान साक्षात पृथ्वी पर मौजूद नहीं हैं, तो वो केवल प्रार्थना सुनकर कैसे सबके काम पूरे कर देंगे।"

पत्नी की बात सुनकर भूरेलाल उठकर बैठ गया। उसे उठा देखकर उसकी पत्नी भी उठ गई।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"मतलब तुम कहना चाहती हो कि ईश्वर उनकी ही सहायता करता है, जो खुद अपनी सहायता करते हैं।"

भूरेलाल की पत्नी ने उसकी बात सुनकर केवल हामी में सर हिलाया।

"तो तुम ये कह रही हो कि अगर हम यहाँ से भागने का प्रयास करें, तो ईश्वर हमारी मदद करेगा?"

अबकी बार भूरेलाल की बात सुनकर उसकी पत्नी ने न केवल हामी में सर हिलाया, बल्कि वो मुस्कराई भी।

पत्नी को यूँ मुस्कराते देख भूरेलाल थोड़ी देर विचार पूर्ण मुद्रा में बैठा रहा और फिर आशा से उसका चेहरा चमक उठा।

✡✡✡

भूरेलाल की पत्नी ने सही कहा था।

ईश्वर उनकी सहायता करने को तत्पर रहते हैं, जो उनके लिए अपनी सहायता के अवसर उपलब्ध करवाता है। उस रात पत्नी की कही गई तर्कपूर्ण बातों का मर्म समझ कर ईश्वर पर भरोसा करके भूरेलाल अपने कुछ साथियों के साथ जोधपुर रियासत के इस गढ़ से भागने के लिए अवसर की तलाश में लग गया था।

वो रात अन्धकार में डूबी थी, जब दुर्ग के रक्षक सैनिकों ने अपने मनोरंजन के लिए उत्सव रचाया। दुर्ग के सैनिकों द्वारा मनाये गए इस उत्सव की कोई अनुमति न तो जोधपुर नरेश की तरफ से थी, न ही इसकी कोई सूचना रियासत के जागीरदार को थी। देर रात्रि उत्सव चलता रहा। सैनिक स्वादिष्ट भोजन के साथ मदिरा के पैमाने छलकाते रहे। आस-पास के इलाकों से गुप्त रूप से बुलाई गई पतुरियों के मादक नृत्य का असर मदिरा के असर के साथ मिलकर दुर्गरक्षक सैनिकों को नीम बेहोश करता रहा। सुन्दर पतुरियों के रक़्स और छलकती मदिरा का ये असर इतना प्रभावी था

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कि अर्धबेहोश सैनिक शीघ्र ही सम्पूर्ण चेतना खोकर पूर्णरूप से संज्ञा शून्य हो गए।

भूरेलाल ऐसे ही किसी सुअवसर की प्रतीक्षा में था। दुर्ग में मौजूद सैनिकों के यूँ चेतना शून्य हो जाने के बाद वह अपनी पत्नी, पुत्र माधव और साथियों के साथ वहाँ से निकल भागने के लिए उद्यत हो उठा। भूरेलाल लगभग बीस वर्षों से उस गढ़ में रह रहा था, इसलिए वो दुर्ग के चप्पे-चप्पे और सभी मार्गों से वाकिफ था। वो रात चन्द्रमा के बिना सूनी और काजल के समान अन्धकार में डूबी थी। ये अन्धकार भूरेलाल के लिए बड़ा सहायक था।

'पकड़े जाने पर कठोर दंड मिलना तय था। शायद जागीरदार क्रोध के आवेश में मृत्युदंड ही दे दे।'- भूरेलाल ने एक बार सोचा तो उसका हृदय काँप उठा। किन्तु अगले ही क्षण ही उसे अपनी पत्नी की बात स्मरण हो उठी – 'अपनी सहायता करने वालों की भगवान स्वयं सहायता करता है' - और वह मदिरा और पतुरियों के नृत्य से गाफिल हुए सैनिकों की दशा का लाभ उठाकर साहस समेट गुप्त रूप से कुटुम्ब और साथियों सहित वहाँ से पलायन कर गया।

कई दिनों के लगातार सफर, भूख और प्यास से विह्वल भूरेलाल ने जब आँखों के सामने बहती हुई बेतवा (वेत्रवती) नदी को देखा, तो उसकी आँखों से भी नदी बह उठी।

भूरेलाल ने बेतवा और उसके उत्तरी तट पर बसे ओरछा को प्रणाम किया और वहीं पर सकुशल कुटुंब सहित रहने लगे।

इस समय ओरछा में महाराज भारतीचंद का शासन था। भूरेलाल कुछ दिनों तक ओरछा में रुककर उनके कहने पर राज्य के लिए तीर, तलवार और ढाल आदि निर्मित करता रहा। भारतीचंद उसकी कर्मठता और विनम्रता से बड़े प्रसन्न थे। एक दिन भूरेलाल ने महाराज से अपने पैतृक ग्राम वारद्वारा जाने की अनुमति माँगी, जिसे महाराज भारतीचंद ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। वारद्वारा ग्राम ओरछा राज्य की एक रियासत कछौआ के अंतर्गत आता था।

महाराज भारतीचंद ने राजकीय कोष से धन देकर वारद्वारा गाँव में भूरेलाल के लिए एक मकान का निर्माण करवा दिया। भूरेलाल अब वहाँ प्रसन्नता से रहता और राज्य के लिए अस्त्र-शस्त्र का निर्माण करता। भूरेलाल की प्रसन्नता, अपने पुत्र माधव को देखकर और बढ़ जाती। उसका मन ये सोचकर सुकून

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पाता कि वो अपने पुत्र को जोधपुर की रियासत के बंदी माहौल की जगह अपनी मातृभूमि की खुली हवा दे पाने में सफल हुआ।

माधव का मन अपने पैतृक काम में नहीं लगता। वो बहुधा किसी पेड़ के नीचे या तालाब के किनारे शांतिपूर्ण अवस्था में बैठा रहता। कभी-कभी प्रकृति के दृश्यों को अपलक घंटों निहारा करता।

ऐसे ही एक दिन जब माधव सरोवर तट पर बैठा था, तभी उस के कंठ से गीत के बोल फूट पड़े। उस दिन से माधव अक्सर गीत गाने लगता और उसकी गायकी जो भी सुनता, उसके सुरीले कंठ की प्रशंसा करता। जल्दी ही माधव एक गायक के रूप में प्रसिद्ध होने लगा।

भूरेलाल ने पहले माधव को लौह-कार्य करने में लगाया पर उसका मन उसमें न लगा। पुत्र को विरक्त होता देख भूरेलाल चिंतित हुए। वो अब युवा अवस्था को भी प्राप्त कर रहा था। घर गृहस्थी में रमाने के लिए उसका विवाह करने की सोची। किन्तु माधव इसके लिए तैयार नहीं हुआ।

धीरे-धीरे माधव की आयु बीस वर्ष की हो चुकी थी। पुत्र के अनिश्चित भविष्य की चिंता में घिरे माता-पिता को एक और व्याधि ने आ घेरा। शीतला माता (चेचक) का प्रकोप पूरी कछौआ रियासत में फैला और इस महामारी ने माधव के माता-पिता को लील लिया।

***

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

माधव का अनुराग

पहले से ही विरक्त रहने वाले माधव का मन माता-पिता की मृत्यु से और अधिक विरक्त हो उठा। अब उसका जी वारद्वारा में एक पल को भी नहीं लगता। एक दिन गाँव में कुछ तीर्थयात्रियों ने पड़ाव किया। जब तक वे गाँव में रहे, माधव का अधिकतर समय उनके साथ बीतता। प्रभु की बातें सुनकर उसका विरक्त हृदय, ईश्वर की ओर अनुरक्त होता गया। माधव अब घर न जाकर उनके साथ ही रहने लगा। उनके साथ खाता, देव भजन करता और वहीं एक चटाई बिछाकर, उस पर सो जाता। जब तक तीर्थयात्रियों का डेरा वारद्वारा में रहा, तब तक माधव उनके साथ रहा और जब वे सब जाने लगे, वो भी उनके साथ हो लिया।

माधव उन तीर्थयात्रियों के साथ तीर्थयात्रा करते हुए काशी पहुँचा। यहाँ काशी में पावन गंगा के तट पर निर्मित पवित्र घाटों ने उसका मन मोह लिया।

सुबह-शाम जब माँ गंगा की आरती होती, तो माधव अपनी सुध-बुध खो बैठता। बाबा विश्वनाथ के सान्निध्य में उसे असीम सुख की प्राप्ति होती।

माधव को काशी के पवित्र गंगा तटों पर रहते हुए लगभग छः महीने हो रहे थे। एक रात्रि जब वो चटाई बिछाकर सोने जा रहा था, तब उसके कानों में एक कर्णप्रिय ध्वनि घुलने लगी। ये सुरीली ध्वनि बांसुरी से प्रस्फुटित हो रही थी।

माधव अवश होकर उस दिशा में चल पड़ा, जिधर से कर्णप्रिय बांसुरी की धुन आकर उसके कानों में रस घोल रही थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक संन्यासी आँखें मूंदे अपने ओठों से बांसुरी को चूमते हुए उससे मधुर स्वर उत्पन्न कर रहा था और बांसुरी के छिद्रों पर नृत्य करती उसके हाथों की उँगलियाँ उन स्वरों को लयबद्ध कर रही थी।

संन्यासी स्वयं बांसुरी से निकलते सुरों के आनंद में डूबा हुआ अपनी गर्दन को हल्के-हल्के झींक रहा था। उसकी पूरी देह मद्धम-मद्धम ऐसे हिल रही थी, जैसे कोई माँ अपने बच्चे को पालने में लिटाकर उसे धीरे-धीरे झुलाती है।

माधव ने इससे पहले कभी भी बांसुरी की इतनी सुरीली तान नहीं सुनी थी। उसे लगा, जैसे साक्षात श्रीकृष्ण वृंदावन से चलकर, काशी आकर, उसे बांसुरी की तान का रसपान करवा रहे हों।

माधव, वहीं उस संन्यासी के निकट बैठ गया और बांसुरी के अमृतमयी सुरों के प्रभाव से शीघ्र ही उसी अवस्था में पहुँच गया, जिस अवस्था में संन्यासी था। अब संन्यासी बांसुरी वादन कर रहा था और माधव उसकी धुन पर भजन गा रहा था।

माधव बांसुरी के सुरों के रसपान में कुछ यूँ खोया कि जब संन्यासी ने बांसुरी वादन रोक दिया, तब भी वो उसी अवस्था में नेत्र बंद किये आनन्दातिरेक में मंद-मंद झूमते हुए गाता रहा।

"तीर्थ पर आये हो?"- जब संन्यासी ने माधव से पूछा, तो उसका ध्यान टूटा।

"हाँ महाराज।"- माधव ने संन्यासी के प्रश्न का उत्तर आँखें खोल कर उनकी ओर हाथ जोड़ते हुए दिया।

"अच्छा गाते हो।"- संन्यासी ने माधव के सुरीले और लयबद्ध कंठ की प्रशंसा की।

"किन्तु महाराज, जो रस आपकी बांसुरी में है, वो मेरी गायकी में नहीं।"

"ये तो सब बंशी बजैय्या की कृपा का फल है। उन्हीं के प्रताप से मैं ये सुमधुर बांसुरी का वादन कर पाता हूँ।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहकर संन्यासी ने श्रीकृष्ण को प्रणाम किया तो माधव ने भी वही किया।

एक बृजलाल तो दूसरा माधव। एक-दूसरे के नाम जानकर उन्हें ऐसा लगा, जैसे उन्हें प्रभु श्रीकृष्ण ने किसी विशेष उद्देश्य से मिलाया हो।

माधव उस दिन से उस संन्यासी बृजलाल के साथ ही रहने लगा।

संन्यासी बृजलाल बांसुरी बजाता और माधव झूम-झूम के गाता रहता। कई दिनों तक काशी की वीथियों में बृजलाल और माधव कीर्तन-भजन करते घूमते रहे और फिर एक दिन पवित्र गंगा में स्नान कर बाबा विश्वनाथ को प्रणाम किया और वृंदावन की राह पकड़ी।

ये वो समय था, जब मेवाड़ की राजरानी अपने लौकिक पति की मृत्यु के उपरांत, अपने अलौकिक पति श्रीकृष्ण की धुन में सदेह उनमें समाहित हो गई थीं। वृंदावन ही नहीं समस्त भारतभूमि के जन उन्हें देवी मानकर राधा के समान सम्मान देने लगे थे। उन्हें पूजने लगे थे।

माधव पर भी मीराबाई का बड़ा प्रभाव पड़ा और वृंदावन पहुँचकर वो भी जगह-जगह श्रीकृष्ण के भजन गाने लगे। शीघ्र ही माधव की ख्याति समस्त वृंदावन में श्रीकृष्ण के परम भक्त और कुशल भजन गायक के रूप में हो गई। बहुत से लोग उन्हें सम्मान सहित बुलाते, उनसे भजन गाने का अनुरोध करते। जब वे गाते, तो वहाँ उपस्थित सभी जन भाव-विभोर हो उठते।

बंशी बजईया श्रीकृष्ण ने जिस उद्देश्य से माधव को बृजलाल से मिलाकर उन्हें वृंदावन आने को प्रेरित किया था, उस उद्देश्य की पूर्ति की मधुर पावन घड़ी उस रात्रि को थी, जिस रात्रि एक विधवा आश्रम के संचालक ने माधव को अपने आश्रम में कृष्णलीला के भजन सुनाने के लिए आमंत्रित किया।

माधव जब भजन गाते, तो युवक ही नहीं युवतियाँ भी उनके गायन पर झूम उठतीं। उनमें से कई माधव की ओर आकर्षित होती, किन्तु माधव कृष्ण भजन के अतिरिक्त किसी और की तरफ आकर्षित नहीं होते।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किन्तु, उस रात्रि उस विधवा आश्रम में अपने गायन पर झूम कर नृत्य करती उस अनुपम सौंदर्यशाली नर्तकी पर न केवल वो आकर्षित हो उठे, अपितु उस युवती के लिए उनके मन में प्रेम के अंकुर भी फूट पड़े। वो युवती तो माधव को देखते ही उन्हें अपना हृदय अर्पित कर चुकी थी।

यद्यपि माधव का हृदय प्रेम की अनुभूति पाकर अत्यंत प्रसन्न था, किन्तु उनके मन में ग्लानि भी थी। अवश्य ही प्रभु श्रीकृष्ण के प्रति भजन गाते हुए उनके समर्पण में कुछ कमी रह गई होगी, इसलिए उनके हृदय में उनके अतिरिक्त किसी अन्य का ध्यान जाग्रत हुआ।

माधव की इस मनःस्थिति का निवारण किया संन्यासी बृजलाल ने। बृजलाल ने भगवान कृष्ण के कर्मप्रधान उपदेशों को समझाते हुए, माधव को उस युवती से विवाह करने का परामर्श दिया। उन्होंने माधव से स्नेह भरे शब्दों में कहा- "जब ईश्वर किसी विरक्त के हृदय में अनुराग उत्पन्न करता है, तो उसमें कोई न कोई उद्देश्य निहित होता है। हो सकता है, भगवान श्रीकृष्ण तुम्हें किसी ऐसे कृत्य का माध्यम बना रहे हों, जो इतिहास के पृष्ठों को उज्ज्वल कर दे।"

बृजलाल के ज्ञानदर्शन के बाद माधव इसे अपने आराध्य श्रीकृष्ण की इच्छा मान कर युवती से विवाह करने को प्रसन्नता से सज्ज हो उठा।

जिस युवती ने माधव जैसे विरक्त युवक के हृदय में प्रेम की फुहार भर दी हो, निश्चय ही वो अगाध सुंदरता की स्वामिनी होगी। वो न केवल सौंदर्य की मणितारा थी, अपितु नृत्य कला में भी अत्यंत प्रवीण थी। माधव के गायन पर रीझ कर उन्मुक्त मन से प्रवीणता से नृत्य के समय वो ये कहाँ जानती होगी कि एक दिन उसकी ये नृत्य प्रवीणता इतिहास में 'प्रवीन' नाम को अक्षुण्ण कर देगी।

माधव का विवाह प्रस्ताव सुन कर उस युवती ने अपने भाग्य और ईश्वर दोनों को धन्यवाद दिया था। सत्य तो ये था कि वो हृदय से माधव को प्रेम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करने लगी थी और उसकी अर्धांगिनी बनना उसके लिए सौभाग्य की बात थी।

माधव को सच्चे मन से प्रेम करने वाली उस युवती का नाम सत्या था और उसका जन्म और बचपन के दिन बंगाल के किसी ग्राम में बीते थे। वृंदावन में एक विधवा आश्रम में वो काम-काज करके अपनी जीविका चलाती थी।

माधव ने विधवा आश्रम के संचालक से सत्या से विवाह करने की अनुमति माँगी, तो उसने स्वीकृति दे दी। और फिर संन्यासी बृजलाल ने माधव और सत्या का विधिवत पाणिग्रहण संस्कार करवाया।

विवाह होने के पश्चात पति-पत्नी कुछ दिन वृंदावन में निवास करते रहे और फिर बृजलाल की अनुमति और आशीर्वाद लेकर माधव अपनी पत्नी सत्या को लेकर अपने पैतृक ग्राम वारद्वारा लौट आया।

माधव आस-पास के ग्रामों में, मंदिरों में कीर्तन भजन करता और उसी से उसकी जीविका चलती। सुखपूर्वक रह रहे पति-पत्नी के जीवन में प्रसन्नता ने एक और दस्तक दी।

माधव उस रात्रि देर से घर आया। कछौआ में एक कीर्तन का कार्यक्रम था, वहाँ से आते हुए काफी रात्रि हो गयी थी। सत्या चिंतातुर हो घर के बाहर माधव की बाट जोहती कुछ बेचैनी और कुछ प्रसन्नता से टहल रही थी।

माधव ने दूर से ही चांदनी में सत्या को घर के बाहर टहलते देखा तो भाग के उसके पास पहुँच गया- "कीर्तन अधिक समय तक चलते रहे इसलिए विलम्ब हो गया।"- माधव ने देर से आने की सफाई देते हुए पत्नी को अंक में भर उसके गुलाब से कपोल का चुम्बन ले लिया।

पति के चुम्बन से उत्पन्न हुई लाज का निवारण करते हुए सत्या ने कहा- "चलिए हाथ-मुँह धोकर भोजन कर लीजिये।"

सत्या की बात सुन कर माधव ने उसके हाथ को चूमते हुए कहा- "जो हुक्म, देवी।"- सत्या लाज से दोहरी हो उठी और वो पति से हाथ छुड़ा के चौके में चली गई। माधव हाथ-पैर धोकर भोजन के लिए पीढ़े

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पर बैठ गया। सत्या ने आज कई प्रकार के व्यंजन बनाये थे, जिनमें दो तो मिष्ठान्न ही थे।

"क्या बात है? क्या आज कुछ विशेष दिन है, जो पति की सेवा में इतने सारे भोज्य पदार्थ?"- माधव ने भोजन आरम्भ करने से पहले भगवान को भोग अर्पित करते हुए पूछा।

"हाँ।"- सत्या ने सर झुकाते हुए कहा था। इस समय लाज उसके मुखड़े को लाल कर रही थी, जिसे दीवट के मद्धिम प्रकाश में भी माधव ने अनुभव कर लिया था।

"अच्छा! क्या है विशेष दिन आज?"- माधव ने मिष्ठान्न का एक टुकड़ा मुँह में डालकर पूछा।

सत्या मौन रही और उसके चेहरे की लाली में बढ़ोत्तरी हो गई।

"मैं भी तो जानूँ, आखिर क्या विशेष है आज के दिन में, जिसके कारण इतने स्वादिष्ट मिष्ठान का स्वाद पहली बार जिह्वा को मिल रहा है।"

"आप पिता बनने वाले है।"- कह कर सत्या ने एक पल के लिए पलकें उठाकर पति को देखा और फिर नतमुख हो गई।

'वो पिता बनने वाला है'- ये शुभ बात अपनी पत्नी के मुख से सुनकर माधव प्रसन्नता के अतिरेक में कुछ क्षण बस सत्या को निहारते हुए देखता रहा और फिर मिष्ठान्न का एक टुकड़ा उसकी ओर बढ़ाते हुए बोला- "सत्या, फिर तो इस मिष्ठान्न को खाने का पहला अधिकार तुम्हारा है।"

सत्या ने लजाते हुए पति को फिर देखा और हौले से अपना मुँह खोल दिया। माधव ने मिठाई को सत्या के मुँह में रख कर उसकी बाँह पकड़ के कुछ यूँ देखा कि वो लजाती-सकुचाती अपने पति के अंक में सिमट गई।

***

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वारद्वारा की पूर्णिमा

पूर्णिमा रात की वो शुभ घड़ी थी, जब चन्द्रमा की कलाओं से युक्त सत्या ने एक पुत्री को जन्म दिया।

पुत्री के मुख पर चंद्र-तारों की आभा और खिलते कमल पुष्प की सुंदरता देख कर माधव और सत्या के मुख भी पुष्प की भांति खिल उठे। पूर्णिमा की रात जन्म लेने के कारण सत्या ने अपनी पुत्री को पूर्णिमा पुकारा, तो माधव ने उसे नाम दिया सावित्री- सत्या की सावित्री।

पूर्णिमा की चन्द्र किरणों के प्रकाश में जन्मी कन्या की सखी बनकर चंद्रकलाएँ उसकी सुंदरता और आकर्षण को निखारते हुए उसे यौवन के नित नए सोपान चढ़ाने लगीं।

पुत्री की अठखेलियाँ देखकर माधव कभी कोई सुन्दर गीत की तान छोड़ता, तो सत्या नृत्य करने लगती। शिशु अवस्था से पूर्णिमा अपने पिता को गाते और माँ को नृत्य करते हुए, यूँ गंभीरता और मनोयोग से देखती, जैसे अपने माता-पिता से वो इन कलाओं को आत्मसात कर रही हो।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भारतभूमि की धरती का तो इतिहास ही रहा है कि यहाँ जन्मे होनहार बच्चे अत्यंत अल्प समय में विद्याओं को कुशलता पूर्वक ग्रहण कर लेते हैं। अभिमन्यु ने तो माता के गर्भ में ही पिता द्वारा माता को सुनाये जा रहे वृतांत को सुनकर चक्रव्यूह भेदन की कला सीख ली थी।

पूर्णिमा ज्यों-ज्यों आयु के सोपान चढ़ रही थी, त्यों-त्यों उसका यौवन का लावण्य दैदीप्यमान होता जा रहा था। उसका यौवन न केवल सुंदरता से निखर रहा था, अपितु गायन और नृत्य कलाओं से भी उसमे चार चाँद लग रहे थे। पूर्णिमा जब बारह बसंतों के ऋतुरस से भीगकर निखरी, तो उसका यौवन इंद्रसभा की किसी भी अप्सरा से अधिक लावण्यमय था। पिता और माता से मिली गायन और नृत्य की कलाएँ यदि वैशाली की आम्रपाली भी देखती, तो उसके अधरों से अपने अनुरूप नृत्य करने वाली युवती को देख कर स्वतः ही प्रशंसा में 'वाह-वाह, अप्रतिम नृत्य' निकल जाता।

सच में, देवी आम्रपाली के बाद नृत्य की देवी ने अपनी पूर्ण कृपा इस पूर्णिमा पर ही बरसाई थी। नृत्यदेवी और वाग्देवी के आशीर्वाद से यौवन सौष्ठव को प्राप्त हो रही पूर्णिमा को सत्या रासलीलाओं में अभिनय करवाने लगी।

उस दिन पूर्णिमा जब रासलीला में राधा का अभिनय कर रही थी, तो वारद्वारा में अपने दो अंगरक्षकों के साथ गुप्त रूप से कछौआ के जागीरदार इंद्रजीत पधारे। इंद्रजीत वेष बदल अपनी जागीर में यत्र-तत्र घूम कर अपनी प्रजा की कुशलता के बारे में स्वयं पता करते रहते थे। इसी क्रम में वो आज वारद्वारा आये थे। गाँव में हो रही रासलीला के मंचन को देखकर वो भी चुपचाप एक कोने में बैठकर, इसका आनंद लेने लगे। शीघ्र ही इंद्रजीत की दृष्टि राधा का अभिनय कर रही पूर्णिमा पर पड़ी और फिर उनकी आँखें उसके लावण्य से ओत-प्रोत सौंदर्य और कला में डूब गई।

रासलीला समाप्त होने के पश्चात भी इंद्रजीत न जाने कितनी घड़ी वहीं खोये-खोये बैठे रहे थे। अंगरक्षकों ने जब उन्हें स्मरण दिलाया कि रासलीला

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समाप्त हो गई है और अब इस स्थान पर हमारे अतिरिक्त कोई नहीं है, सब अपने घरों को जा चुके हैं तो उन्हें अपनी स्थिति का भान हुआ।

इंद्रजीत अनमने मन से कछौआ के अपने महल में लौट तो आये थे, किन्तु उनका हृदय वहीं वारद्वारा में रह गया था। रह-रह कर उनके नेत्रों के सामने उस कंचन देह वाली बालिका की छवि मुखरित हो उठती।

सूचि मंजन, अमलबास, अंगराग, मुखबास और मुखराग से अलंकृत वो नवअंकुरित युवती इंदजीत के लोचनों के सम्मुख सदैव ही नृत्य करती दिखाई देती। इंद्रजीत के हृदय का चैन तो पहले ही समाप्त हो गया था, अब उस अल्हड़ के नृत्य और अभिनय ने उनकी निद्रा का भी हरण कर डाला। भूख-प्यास लगभग तिरोहित हो चुकी थी।

इंद्रजीत की यह दशा उनके विश्वस्त अंगरक्षक लाखा से छिपी नहीं रही। एक दिन उसने जब इंद्रजीत से उनकी इस दशा का भेद जानना चाहा, तो इंद्रजीत ने लाखा को अपने मन की दशा का भेद कह दिया। लाखा ने अपने स्वामी को विश्वास दिलाया कि वो शीघ्र ही उस कन्या का भेद लेकर आएगा, जिसकी सुंदरता ने उसके स्वामी को विचलित कर दिया है।

लाखा ने जल्द ही वारद्वारा की उस सबसे सुन्दर कन्या का भेद पा लिया, जिसका नाम पूर्णिमा था और जिसे वारद्वारा गाँव के सारे निवासी पुनिया कह कर बुलाते थे।

इंद्रजीत ने जब उस लड़की का भेद सुना, तो उन्हें थोड़ी तसल्ली मिली। रात्रि में थोड़े से भोजन के पश्चात इंद्रजीत अपने भवन की अटारी पर चले गए और वारद्वारा गाँव की ओर मुख करके माधव लोहार की कन्या पूर्णिमा के विचारों में खो गए।

इंद्रजीत सारी रात भवन की अटारी पर अधीर हो पूर्णिमा के ख्यालों में खोये विचरते रहे थे और सुबह होते-होते उन्हें लगा कि यदि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुंदरता और कला की अवतार, इस देवी की छवि के दर्शन उनकी आँखों को शीघ्र ही नहीं हुए, तो उनके हृदय का स्पंदन रुक जायेगा।

☼☼☼

सरोवर में कुछ देर पाँव भिगोने के बाद पूर्णिमा ने उन्हें जलराशि से बाहर निकाला, तो ऐसा प्रतीत हुआ जैसे कैद से मुक्त होकर दीपक की रश्मियाँ आलोकित हो उठी हों।

वो जल में पाँव डाले हुए अब तक टूटे हुए घड़े के जिस टुकड़े को पत्थर पर घिस कर सुडौल कर रही थी, उससे अपने पाँव को हल्के-हल्के घिसने लगी। पुरवा-ग्राम की कन्याएँ और स्त्रियाँ पैरों को सुडौल और साफ़ करने के लिए इस विधि का प्रयोग अक्सर करती हैं।

पूर्णिमा की सखी जो आयु में उससे दो-तीन वर्ष अधिक थी, जो अब तक अपने पाँव सरोवर जल में डुबाये बैठी थी, वो धीरे से जल में उतर गई। जब वो घुटनों तक जल की गहराई में पहुँची, तो पूर्णिमा को साथ आते न देख उसे बुलाने के लिए उसकी ओर घूमी, तो उसने पूर्णिमा को गिट्टी से अपने परिष्कृत पाँव को ओर अधिक सुडौल करने में तल्लीन देखा।

"अरी पुनिया तनिक संभल के।"

"क्यों क्या हुआ महुवा, क्या कोई सर्प आ गया है?"- अपनी सखी महुवा की बात सुनकर पूर्णिमा ने अपने चारों ओर किसी सर्प या अन्य किसी कीट के होने की आशंका से देखा। आस-पास बढ़ी हुई घास से कभी सर्प, बिच्छू या कनखजूरे रेंगते हुए निकल आते थे, इसलिए जब भी पूर्णिमा और महुवा सरोवर के इस स्थान पर स्नान करने आती तो तनिक ज्यादा ही सावधान रहती थी।

वैसे सभी ग्राम वासी सरोवर पर बने घाट पर स्नान के लिए जाते थे। वहाँ स्त्री और पुरुषों के लिए पृथक-पृथक घाट बने हुए थे, लेकिन कभी-कभी महुवा और पूर्णिमा उस घाट से तनिक दूर, वन के मध्य में, इस एकांत

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्थान पर स्नान करने आतीं। यहाँ एकांत में उनके हृदय और देह को, जो बहुत तीव्रता से यौवन को प्राप्त हो रहे थे, प्रफुल्लित होकर बंधन रहित अठखेलियाँ करने का आनंद प्राप्त होता था।

"न री पुनिया, कोई सर्प या बिच्छू नहीं है। मैं तुझे पाँव घिसते देख सावधान कर रही थी, कि तू कहीं पाँव सुडौल करते-करते पद्म का वो चिन्ह न गोल कर दे, जिसे देख कर पंडित जी ने तेरे राजरानी बनने की भविष्यवाणी की है।"

"गांव-खेड़े की रासलीला में अभिनय करने वाली एक लोहार की कन्या राजरानी बनेगी?"- अपने पाँव पर बने पद्म के निशान को देखते हुए पूर्णिमा हँसकर बोली- "ब्राह्मण देवता का ये परिहास तू मेरे सामने बार-बार क्यों दोहराती रहती है? जरा बता तो तू मुझे महुवा।"

"ब्राह्मण धरती के देवता होते हैं, उनकी कही बातें परिहास नहीं होती। उनमें सत्यता होती है राजरानी।"

महुवा ने हाथ जोड़कर सर झुकाते हुए अपनी बात ऐसे कही, जैसे वो दासी हो और पूर्णिमा कोई रानी। महुवा की बात सुनकर पूर्णिमा ने उसे आँखें तरेर कर देखते हुए कहा- "देख महुवा, कल वैसे भी रासलीला में अपने खराब अभिनय से मैं पीड़ित हूँ, अब तू ये परिहास करके मेरी पीड़ा मत बढ़ा।"

अपने परिहास से पूर्णिमा को विचलित देख, आनंदित होते हुए महुवा बोली - "अच्छा पुनिया एक बात पूछूँ?"

"हाँ पूछ!"- पूर्णिमा अपने पाँव को पुन: जल में डालते हुए बोली।

"तू रानी बनने के बाद मुझे भूल तो नहीं जायेगी।"- कहते हुए महुवा का अधरों पर परिहास युक्त हास्य था, जिसे देख कर पूर्णिमा क्रोधित होकर बोली- "तू मानेगी नहीं न, अभी रुक।"- और इतना कहकर वो तीव्रता से पानी में खड़ी महुवा पर झपटी।

"क्षमा महारानी क्षमा"- कहते हुए महुवा पीछे हटी, लेकिन पूर्णिमा ने उसे पकड़ लिया। दोनों सखियाँ कुछ देर तक, यूँ ही हास-परिहास

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करते हुए जल-विहार का आनंद लेती रही और फिर अधिक समय हुआ जान, घर जाने का विचार किया।

महुवा ने जैसे ही डुबकी लगा कर सर ऊपर निकाला, तो उसे वहाँ दो अश्वारोही खड़े दिखाई दिए।

"माधव लोहार का घर किस दिशा में है?"- उनमें से एक ने रोबीले स्वर में पूछा।

सामने यूँ दो अश्वारोहियों को देखकर भयभीत महुवा गीले वस्त्रों से झलकते अपने यौवन अंगों को हाथों की कोहनी से छिपाते हुए कुछ बोल पाती, उससे पहले 'हर-हर गंगे' का स्वर उच्चारण करते हुए पूर्णिमा ने अपनी दोनों सुडौल-मृणाल बाँहों को ऊपर किये अपने उज्ज्वल मुख को जल सतह से ऊपर किया।

उन दोनों अश्वारोहियों में से एक अश्वारोही ने जल सतह से ऊपर आये पूर्णिमा के मुख को प्रसन्नता और विस्मय से देखा। पूर्णिमा के मुख पर जल की बूँदें उस समय ऐसे सुशोभित हो रही थी, जैसे चंद्र रात में तारे सुशोभित होते हैं।

"पूर्णिमा।"- अपने ओठों से पूर्णिमा का नाम किसी मंत्र की तरह लेते हुए इंद्रजीत अश्व से उतरे तो लाखा भी अश्व से उतर गया।

पूर्णिमा के मदलोचन नदी की सतह से जैसे ही ऊपर आये सामने दो राजसी अश्वारोहियों को देखकर ठिठक कर अधमुँदे हो गए। उसने अपने पिता से सुन रखा था कि उसके बाबा भूरेलाल बरछी, तीर, कटार आदि बनाने में सिद्धहस्त थे और तब उनके घर इसी प्रयोजन से राजसी पुरुष आया करते थे। किन्तु पिता माधव अपना पैतृक व्यवसाय छोड़कर कीर्तन-भजन से परिवार का भरणपोषण करने लगे, तो राजसी पुरुषों का आना बंद हो गया।

पूर्णिमा को यूँ सामने देख इंद्रजीत की आँखें उस पर ठहर गईं, स्वयं पर ठहरी राजसी आँखों से अचकचा कर पूर्णिमा ने जल के भीतर तुरंत अपने घुटने मोड़े, तो उसकी गर्दन तक की देह जलचादर में ढँक गई। इंद्रजीत पूर्णिमा के रूप लावण्य और लज्जाशीलता दोनों से प्रभावित हुए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वारद्वारा की पूर्णिमा।

हृदय में नारियों के लिए सम्मान होने के कारण अपनी त्रुटि का भान होते ही इंद्रजीत ने अपनी दृष्टि सरोवर से दूसरी ओर वन की तरफ फेर ली। लाखा ने भी उनका अनुकरण किया।

राजसी पुरुषों द्वारा यूँ सम्मान का प्रदर्शन करते हुए, स्नान कर रही युवतियों से, स्वयं दृष्टि हटा लेना, पूर्णिमा और महुवा को भला लगा। उनके भीतर का भय जाता रहा।

यद्यपि राजसी पुरुषों के यूँ अचानक सामने आने से पूर्णिमा को अपनी देह की अवस्था के कारण लज्जा का अनुभव जरूर हुआ था, किन्तु संभवतः वो भयभीत नहीं हुई थी। भयभीत होने की प्रवृत्ति बचपन से ही उसके भीतर न के बराबर थी।

स्थिर और सौम्य स्वर में पूर्णिमा ने जब माधव लोहार अर्थात अपने ही घर का पता इंद्रजीत को बताया, तो वे अश्व पर बैठ उस ओर निकल गए। यद्यपि पूर्णिमा के सौंदर्य को निहारने की तीव्र लालसा उनके भीतर थी, किन्तु फिर भी स्नान कर रही उस कन्या को देखना, जो उन्हें जानती तक न हो, उन्हें अनैतिक लगा।

"उज्ज्वल शशि के समान मुख, कमल-पुष्प से भी अधिक सुन्दर नयन, रजत-रश्मियों को धूमिल कर देने वाली देह कांति, भौंरों को भूल-भुलैया में फँसाने वाले केश, उन्नत कूच-युगल, पुष्ट नितम्ब। अहा क्या अनुपम सौंदर्य है।"- लाखा अपना अश्व इंद्रजीत के अश्व के करीब लाकर बोला, तो इंद्रजीत ने उसे विशेष नेत्रों से देखने के बाद पूछा- "क्यों रे लाखा, तुमने जलराशि में ग्रीवा तक जलमग्न पूर्णिमा का ये सौंदर्य कौन से ज्ञान चक्षुओं से देख लिया।"

"कुँवर, मैं होने वाली महारानी पूर्णिमा की बात नहीं कर रहा हूँ, उनकी देह से तो बालिका होने के चिन्ह भी अभी तक पूरी तरह विदा नहीं हुए, मैं तो उनके साथ नदी में स्नान कर रही पूर्ण यौवन को प्राप्त कर चुकी महुवा के बारे में बोल रहा हूँ।"

लाखा की बात सुन कर इंद्रजीत मंद-मंद मुस्काते हुए बोले- "तो लाखा तुमने न केवल हमारी मनप्रिया की खोज खबर की, बल्कि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपने लिए भी एक प्रियतमा ढूँढ ली। ठीक है, हम माधव से बात करते समय महुवा को भी ओरछा भेजने की बात कहेंगे।"

"जी अन्नदाता, सेवक पर यूँ ही कृपा बनाये रहें।"- लाखा आनंदित होते हुए बोला।

इंद्रजीत कुछ समय पूर्णिमा में खोये धीरे-धीरे अश्व चलाते रहे और फिर ओठों में बुदबुदाए- "सच अभी उसकी देह से बालिका होने के सारे चिन्ह जाने शेष हैं। किन्तु अभी हमने उसकी अधखुली आँखों से जो प्रीत बाण खाये हैं, उसमें लड़कपन के साथ यौवन भी घुला हुआ था।"

"सुंदरता अभी उन पर मेघों के समान आच्छादित हो रही है, तो जब वो यौवन को प्राप्त करेंगी, तो क्या होगा कुँवर? उन जैसी सुन्दर और कलावंत कन्या समस्त ओरछा राज्य में दूजी न होगी।"

इंद्रजीत ने लाखा की बात सुनी और ठंडी सांस भरकर अश्व को एड़ लगा दी। अब वे शीघ्रातिशीघ्र माधव लोहार के घर पहुँच जाना चाहते थे।

***

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ओरछा

अश्वारोहियों के जाने के बाद पूर्णिमा और महुवा शीघ्रता से सरोवर से बाहर आयीं। पास ही वन में एक स्थूल तने वाले वृक्ष के पीछे वस्त्र बदले और तितलियों-सी उड़ती गाँव की ओर भागीं।

पूर्णिमा सारे मार्ग यही विचार करती रही कि राज पुरुष न जाने क्यों उसके घर आये होंगे?

जब वो घर पहुँची, तो एक अश्वारोही पुरुष तल्प पर बैठा था, दूसरा समीप ही सतर्कता से खड़ा था। पिता निकट ही भूमि पर बैठे थे और माता गुड़ का रस घोल रही थी।

पूर्णिमा अपने साथ महुवा को भी ले आयी थी, शायद इस कारण कि अगर अश्वारोही ने सरोवर में नहाने वाली बात बता दी, तो पिता की डांट से बचने के लिए अपने से बड़ी आयु की सखी का सहारा ले सके।

माधव ने दरवाजे पर खड़ी पूर्णिमा और महुवा को देखा, तो आवाज़ देकर भीतर बुला लिया। दोनों सहमे मृग शावक की भांति आकर खड़ी हो गईं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"अरे खड़ी क्यों हो? प्रणाम करो! ये कुँवर इंद्रजीत हैं, ओरछा के राजकुमार। महाराज मधुकर शाह के पुत्र।"- पिता की बात सुन कर पूर्णिमा ने इंद्रजीत को प्रणाम किया। महुवा ने भी वैसा ही किया। इंद्रजीत ने पूर्णिमा की रस गंगा में स्नान करते हुए प्रणाम का सहृदयता से उत्तर दिया।

पूर्णिमा इंद्रजीत के राजकुमार होने के बाद भी शिष्टता पूर्ण उत्तर से चकित हुई। उसने कुँवर इंद्रजीत का नाम सुना था, किन्तु कभी दर्शन नहीं किये थे। जिसे वो सामान्य राज पुरुष समझ रही थी, वो ओरछा के राजकुमार उनके घर किस उद्देश्य से आये होंगे? अब ये प्रश्न उसे भीतर ही भीतर उलझा रहा था।

सत्या अब तक गुड़ घोल चुकी थी। उनके कहने पर पूर्णिमा ने जब रस से भरा पात्र कुँवर इंद्रजीत को दिया, तो उसका हाथ काँप रहा था। और जब पात्र लेते समय इंद्रजीत की उँगलियों का स्पर्श पूर्णिमा की उँगलियों को हुआ, तो उसकी देह का शेष लड़कपन भी पलायन कर गया। यौवन का मलय समीर बहा और उसने मेघों से प्रार्थना करके पूर्णिमा की देह पर यौवन की पहली फुहार बरसा दी। सूर्य किरणों ने उसकी नव पल्लवित देह के कांतिमय रोमों की आभा चार गुनी बढ़ा दी। खिलती सुमन लताओं ने देह को सुरभित कर दिया। पूर्णिमा की देह इस आनंदानुभूति से मंद-मंद कंपकंपाने लगी।

और जब माधव ने बताया कि कुँवर खुद चल कर उन्हें ओरछा में रहने के लिए आमंत्रित करने आए हैं, तो पूर्णिमा का मन मयूर नृत्य कर उठा। उसके स्वप्न में बेतवा नदी के किनारे बसा भव्य ओरछा नगर कई बार आया था। उसके अल्हड़ मन ने न जाने कितनी बार स्वर्ग लोक के समान ओरछा नगर में रहने का स्वप्न संजोया था। और आज उसका यह स्वप्न पूर्ण करने के लिए स्वर्ग लोक से इंद्र की भांति सुशोभित स्वयं राज कुँवर इंदजीत आये थे।

अपने राज्य के राज कुँवर के लिए पूर्णिमा के हृदय में सम्मान बढ़ गया था। संभवतः कुँवर इंद्रजीत का आभार प्रकट करने के लिए पूर्णिमा के नयन उनकी और उठे, तो वे उन्हें ही देख रहे थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पूर्णिमा ने एक क्षण इंद्रजीत से दृष्टि मिलाई और फिर शीघ्रता से नतमुख हो गई। इस समय पूर्णिमा की देह लाज से सिमट कर खिल रही थी और कुँवर इंद्रजीत उसके पल्लवित होते यौवन को देखकर ईश्वर से उसे अपनी प्रेयसी के रूप में माँग रहे थे।

✡✡✡

चंदेल राजाओं से जब परिहार नरेशों की पराजय हुई, तो ओरछा नगर भी वैभव हीन हो गया। मलखान सिंह अपनी राजधानी गढ़-कुंडार से ओरछा ले आये थे और जब इन्हीं मलखान सिंह के पुत्र प्रताप रुद्र राजा बने, तो ओरछा नगर का विकास पुनः प्रारम्भ हुआ। महाराज प्रताप रुद्र ने न केवल ओरछा नगर को वैभव प्रदान किया, अपितु उन्होंने नगर में एक शक्तिशाली दुर्ग का भी निर्माण करवाया। प्रताप रुद्र के पूर्वज काशी के गहरवाड़ वंश से संबंधित थे। इन्हीं प्रताप रुद्र के पूर्वज सोहनपाल ने खंगारों को पराजित करके गढ़-कुंडार पर अधिकार किया था। सोहनपाल से लेकर प्रताप रुद्र तक इनके पूर्वजों का गौरवशाली इतिहास है।

प्रताप रुद्र के पिता मलखान सिंह और बाबा अर्जुन सिंह थे। महाराज प्रताप रुद्र की दो रानियों से बारह पुत्र उत्पन्न हुए। महाराज प्रताप रुद्र ने राज्य की रक्षा के लिए सिकंदर लोदी और इब्राहिम लोदी से कई युद्ध किये थे और उनसे राज्य की रक्षा की थी। एक दिन जब प्रताप रुद्र वन मार्ग से किसी ग्राम को जा रहे थे, तो एक सिंह ने गाय पर आक्रमण कर दिया। सिंह से गाय की रक्षा करते हुए महाराज प्रताप रुद्र को बहुत से घाव आये और कुछ दिनों बाद वे इन्हीं घावों के कारण मृत्यु को प्राप्त हो गए।

महाराज प्रताप रुद्र की मृत्यु के बाद उनके ज्येष्ठ पुत्र भारतीचंद राजा बने। इन्होंने अपने पिता के शुरू कराये गए ओरछा किले को पूर्ण

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

करवाया। महाराज भारतीचंद के समय में शेरशाह ने कालिंजर के चंदेल राजा कीर्तिवर्मन पर भीषण आक्रमण किया। राजा भारतीचंद ने अपने भाई मधुकर शाह को एक सेना के साथ चंदेल नरेश की सहायता के लिए भेजा।

वीर कीर्तिवर्मन ने शेरशाह का वीरता से सामना किया, किन्तु मधुकर शाह की सहायता के पश्चात भी शेरशाह को विजय की प्राप्ति हुई। चंदेल नरेश कीर्तिवर्मन की पराजय के बाद भी इस युद्ध के परिणाम से मधुकर शाह को थोड़ी प्रसन्नता हुई। एक तो इस युद्ध में लगे घाव के कारण अंततः शेरशाह की मृत्यु हुई और दूसरे म्लेच्छों के किले में प्रवेश करने से पहले राजकुमारी दुर्गावती अपनी छोटी बहन कमलावती के साथ सफलतापूर्वक पलायन करने में सफल रही।

अपने पिता की मृत्यु से क्रुद्ध होकर सलीमशाह सूर ने, जो शेरशाह के बाद इस्लामशाह सूर के नाम से बादशाह हुआ, भारतीचंद के विरूद्ध एक अभियान करते हुए जतारा पर धावा बोलकर उस पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। सलीमशाह ने जतारा का नया नाम रखा – इस्लामाबाद। भारतीचंद ने तुरंत अपना कर्तव्य निश्चित किया और भीषण युद्ध के बाद जतारा को स्वतंत्र करा लिया।

इन्हीं प्रतापी भारतीचंद के समय में गढ़-कुंडार के स्थान पर ओरछा पूर्णरूप से राजधानी बनी।

अपने भाई भारतीचंद की मृत्यु के पश्चात मधुकर शाह महाराज हुए।

जिस समय मधुकर शाह पवित्र बुंदेली भूमि के राजा हुए, लगभग उसी समय अकबर मुगलिया सल्तनत का बादशाह बना। ये अकबर पानीपत के युद्ध में वीरवर हेमू को पराजित करके बादशाह हुआ था। विक्रमादित्य का विरुद धारण करने वाला हेमू अत्यंत ही वीर था और वो युद्धभूमि में अचानक आँख में तीर लग जाने से घायल हो गया था, अन्यथा उसने पानीपत के मैदान में अकबर की विशाल सेना को पराजित कर दिया होता। अकबर के आदेश से उसके सिपहसालार बैरम खाँ ने घायल हेमू का सर काट दिया और बाद में हेमू के सभी कुटुम्बी अकबर की आज्ञा से मार दिए

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गए। इनमें हेमू के पिता भी सम्मिलित थे, जिनकी अवस्था उस समय बहुत ही वृद्ध थी।

अकबर में मुग़लों का विशेष गुण 'क्रूरता' बचपन से विद्यमान होने के बाद भी वो विचारवान था। उसने विचार किया कि उसके पूर्ववर्ती कई तुर्क शासक बेहद क्रूरता के बाद भी सफलतापूर्वक इस देश पर राज नहीं कर पाये। अत:, उसने क्रूरता के साथ-साथ दिखावे के रणनीति भी अपनाई। उसने हिन्दू राजाओं को पहले शक्ति दिखाकर बाद में उनसे अपनी शर्तों पर संधियाँ की। इससे वो सरलता से उनके राज और उनकी कुमारियों का उपभोग करने को स्वतंत्र हो गया। 'संधि' की दया से बंधे हिन्दू राजा, मुगल सम्राट का विरोध करने के स्थान पर, उसके अंधभक्त बन गए और इन्ही अंधभक्तों ने अकबर का अपने ही बंधु-बांधवों के विरुद्ध साथ देकर उसके राज को मजबूत किया। अकबर हिन्दू राजाओं को अपने दरबार में बुलाकर विभिन्न युक्तियों से उन्हें हमेशा नीचा दिखने का प्रयत्न किया करता था। एक बार उसने आज्ञा दी कि उसके दरबार में कोई तिलक लगाकर और माला पहनकर न आये।

मुगलों के जोर के चलते मधुकर शाह ने शुरू-शुरू में उनसे प्रत्यक्ष कोई युद्ध नहीं किया, वो अपनी स्थिति और अधिक सुदृढ़ कर लेना चाहते थे। इन्ही वजहों से उन्होंने अकबर से मैत्री-मिलाप रखा, उसके दरबार भी गये।

जब अकबर ने तिलक न लगाने और माला न पहनने की आज्ञा दी, तो स्वाभिमानी मधुकर शाह को ये बहुत अखरा और वे जब अकबर के दरबार पहुँचे, तो उन्होंने तिलक लगाया हुआ था, माला धारण की हुई थी। अकबर अत्यंत क्रुद्ध हुआ और वो इन्हें प्रताड़ित करने का अवसर ढूँढने लगा। ऐसे ही एक बार जब वन में आखेट के समय मधुकर शाह ने शेर का आखेट करने से इसलिए मना कर दिया 'कि नरसिंह उनके आराध्य हैं', तो अकबर के हृदय में मधुकर शाह के प्रति वैमनस्य और बढ़ गया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुछ काल बाद अकबर ने अपने दो सिपहसालार नियामत कुली खान और अलीकुली खान के साथ एक विशाल लश्कर मधुकर शाह को नियंत्रण में लाने के लिए ओरछा भेजा, जिसे मधुकर शाह ने अपने योग्य सेना-नायकों की सहायता से पराजित करके खदेड़ दिया। क्रोधित अकबर ने जामकुली खान और सैयद कुली खान की सरपरस्ती में एक और लश्कर, ओरछा फ़तह करने के लिए भेजा, लेकिन इस लश्कर को भी मधुकर शाह की वीरता के आगे शिकस्त खानी पड़ी।

अब अकबर के क्रोध की सीमा न रही। ग्वालियर के राजा आसकरण तोमर, जो उसका मातहत था और मुहम्मद सादिक खाँ के नेतृत्व में उसने एक विशाल सेना मधुकर शाह को काबू में करने के लिए भेजी।

भीषण युद्ध हुआ। इस युद्ध में महाराज मधुकर शाह के दूसरे बेटे होरलदेव वीरगति को प्राप्त हुए और बड़े पुत्र रामशाह बुरी तरह से घायल हुए। बाद में महाराज आसकरण के प्रयास से दोनों पक्षों में संधि हो गई।

जिस समय पूर्णिमा राजकुमार इंद्रजीत की इच्छा से ओरछा पधारी, उस समय राजकुमार होरलदेव को वीरगति प्राप्त हुए एक-डेढ़ वर्ष ही बीता था। राजकुमार इंद्रजीत महाराज मधुकर शाह के आठ पुत्रों में से तीसरे क्रम के थे।

***

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राय प्रवीना

राजकुमार इंद्रजीत ने ओरछा में स्वयं पूर्णिमा और उनके माता-पिता का स्वागत किया, उनके निवास के लिए उत्तम महल का प्रबंध किया। राजकुमार इंद्रजीत ने आचार्य केशवदास से पूर्णिमा को काव्य और संगीत की शिक्षा देने का अनुरोध किया, जिसे आचार्य केशवदास ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। न केवल पूर्णिमा के सौंदर्य ने आचार्य केशव को मुग्ध किया, अपितु वे उसके गुणों से भी बहुत प्रभावित हुए। आचार्य केशव राजकुमार इंदजीत के गुरु, परामर्शदाता और उनके कृपापात्र थे। उनकी आयु कुमार इंद्रजीत से आठ-नौ वर्ष से अधिक न थी।

पूर्णिमा मनोयोग से आचार्य केशवदास से काव्य और संगीत की शिक्षा ग्रहण करने लगी। नृत्य की शिक्षा तो उसे अपनी माता सत्या से विरासत में मिली ही थी। आचार्य केशव पूर्णिमा की लगन और उसकी गुणों को ग्रहण करने की क्षमता देखकर अत्यंत प्रसन्न होते।

उस दिवस पूर्णिमा तन्मय होकर वीणा वादन कर रही थी। आचार्य केशव वीणा से निकलते सुरों का रसपान करते हुए मंद-मंद अपनी गरदन झींक रहे थे। पूर्णिमा द्वारा छेड़ी जा रही वीणा के तारों से निकले

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुरों का प्रभाव कुछ ऐसा था कि उस समय बहने वाली वायु तरंगित हो रही थी। कलियाँ पुष्प बनने को अकुला रही थीं। बिना पुष्पों की लताएँ भी आच्छादित होकर सौरभ की वर्षा कर रही थी। पक्षी स्थिर होकर वीणा से प्रस्फुटित होते सुरों का रसपान करके ऐसे कोलाहल कर रहे थे, जैसे वो वीणा की धुन पर नृत्य कर रहे हों। वीथियों के धूल-कण यूँ दिखाई देते थे, जैसे वो धरती के सितारे हों। सुदूर गन्धर्वलोक में भी बजते संगीत को इसलिए रोक दिया गया था, जिससे पूर्णिमा की वीणा से निकली धुन को सुनने में कोई व्यवधान उत्पन्न न हो।

जिस समय समस्त सृष्टि, पूर्णिमा की कचनार की कली-सी उँगलियों को वीणा के तारों पर नृत्य करते हुए एकाग्र होकर देख रही थी, उस समय राजकुमार इंद्रजीत ने वहाँ इस भांति प्रवेश किया, जैसे इंद्र अपनी रंगसभा में प्रवेश करते हैं।

जिस कक्ष में पूर्णिमा वीणा वादन कर रही थी, इंद्रजीत उस द्वार पर खड़े हो कर रसपान करने लगे। उनके नेत्र और कान दोनों ही रसपान कर रहे थे। कान वीणा से गुंजित होती धुन का और नेत्र नव नूतन मुग्धा पूर्णिमा के नयन मूंदे स्वर्ण आभा युक्त मुख का। इंद्रजीत कुछ देर वहीं द्वार पर ही खड़े रहे। उनका निश्चय वहीं द्वार पर खड़े-खड़े वीणा के संगीत का आनंद लेने का था। वो कक्ष में प्रवेश करके अपनी पदचाप से पूर्णिमा का ध्यान भंग नहीं करना चाहते थे। इससे पूर्व इंद्रजीत ने इतनी रसधार से भीगी कोई धुन नहीं सुनी थी। इंद्रजीत के संगीत अखाड़े में एक से बढ़कर एक रूपसी नर्तकियां थी, मधुर कंठों वाली गायिका थी, संगीत में निपुण वारांगनायें थीं। पर, उनमे से कोई भी पूर्णिमा का अंश मात्र भी नहीं थी।

यद्यपि राजकुमार इंद्रजीत ने वहीं द्वार पर मौन खड़े रहने का निश्चय किया था, किन्तु वे अपने निर्णय पर अटल न रह सके।

न जाने कैसा आकर्षण था, पूर्णिमा की देहयष्टि में, उसकी उँगलियों के नृत्य से वीणा के तारों से निकलती हृदयानुरागी धुन में, कि इंद्रजीत अवश हो कक्ष में यूँ प्रवेश कर गए, जैसे पूर्णिमा की सुंदरता और उसकी कला की सम्मिलित जंजीर, उनके पांवों को बंधन में लेकर भीतर खींच रही हो।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

या तो इंद्रजीत की मद्धम पदचाप का प्रभाव था या फिर धुन पूर्ण हो चुकी थी, इंद्रजीत ज्यों ही पूर्णिमा के समीप पहुँचे, पूर्णिमा की उँगलियाँ शांत हो गई। उँगलियों के शांत होते ही पूर्णिमा ने आँखे खोल दी। उन युगल नेत्रों के खुलने से इंद्रजीत को ऐसा लगा जैसे देवी रति के काम-विलास से परिपूर्ण नेत्रों ने किसी प्रेम पाश का प्रहार कमान नुमा भौंहों पर संधान करके किया हो। इंद्रजीत अबोल-अडोल पूर्णिमा के रूप लावण्य से धधकते ज्वालामुखी के ताप में पिघलते हुए न जाने कब तक खड़े रहे होते, अगर नेत्र खुलते ही पूर्णिमा उन्हें अपने समक्ष पाकर, वीणा एक तरफ रख कर, हड़बड़ाकर उठ न गई होती।

हाथ जोड़कर पूर्णिमा ने नतमुख होते हुए इंद्रजीत को "प्रणाम राजकुमार" कह कर उनका अभिवादन किया। राजकुमार इंद्रजीत अभी भी कुछ नहीं बोले। संभवतः वे अभी भी पूर्णिमा के सौन्दर्य जाल और काल पाश में उलझे हुए थे। अब तक आचार्य केशव के भी लोचन खुल चुके थे। राजकुमार इंद्रजीत को देख उन्होंने भी अभिवादन करके उन्हें आसंदी पर बैठने को कहा। इंद्रजीत आचार्य को प्रणाम करके आसंदी पर विराजमान हो गए। उनके नेत्र अभी भी पूर्णिमा पर स्थिर थे और पूर्णिमा अभी भी पूर्ववत खड़ी थी।

"कुँवर साहब रत्न को परखने की कला आप से अधिक मैंने किसी में नहीं देखी।"- एक दासी को जलपान की व्यवस्था करने का निर्देश देकर आचार्य केशव ने राजकुमार इंद्रजीत से कहा।

"मैं आपकी बात का आशय नहीं समझा, आचार्य?"- कुँवर इंद्रजीत की आँखें पहली बार पूर्णिमा के मुख से हटीं।

"पूर्णिमा जैसी अमूल्य रत्न को एक दृष्टि में परख कर उसे ओरछा लाने का निर्णय, इस समय संसार में केवल आप ही ले सकते हैं, कुँवर इंद्रजीत।"- आचार्य ने कहा तो पूर्णिमा की झुकी दृष्टि अपनी प्रशंसा सुनकर तनिक और झुक गई और इंद्रजीत का चौड़ा वक्ष सगर्व थोड़ा और चौड़ा हो गया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"कुछ रत्न इतने ओजस्वी होते हैं, आचार्य कि उन्हें परखने की आवश्यकता ही नहीं होती, वे स्वयं अपनी आभा से संसार को दैदीप्यमान करने लगते हैं।"- पहली बार बोलते हुए कुँवर इंद्रजीत की आँखें पुन: पूर्णिमा पर जा टिकी थी, जो अब तक खड़ी ही थी। इंद्रजीत कुछ क्षण पूर्णिमा को नख-शिख देखने के बाद बोले- "देवी प्रवीना आप खड़ी क्यों हैं, आसन ग्रहण कीजिये।"

"राजकुमार को संभवतः दासी का नाम विस्मरण हो गया।"- राजकुमार इंद्रजीत को एक बार पुन: प्रणाम करके पूर्णिमा उसी स्थान पर बैठ गई, जहाँ अभी कुछ समय पूर्व बैठी वीणा वादन कर रही थी।

"देवी, आपके वीणावादन का प्रभाव कुछ ऐसा है कि बड़े से बड़े वैरागी में भी प्रेमानुराग जाग्रत हो उठे, विस्मृत स्मृतियाँ यूँ खिल उठें, जैसे सूर्य की प्रथम रश्मियों के सानिध्य से कलियाँ खिल उठती हैं। फिर कुछ भी भूल जाने का प्रश्न ही कहाँ हैं देवी?"

"किन्तु कुँवर आप थोड़ी त्रुटि तो कर रहे हैं।"- आचार्य केशव इंद्रजीत और पूर्णिमा की वार्ता में हस्तक्षेप करते हुए बोले।

"कैसी त्रुटि आचार्य? आप कहें, मैं किसी भी मूल्य पर अपनी त्रुटि को सुधारना चाहूँगा।"- इंद्रजीत ने आचार्य केशव से विनम्रता से पूछा। उनकी इस विनम्रता को देखकर और अपने लिए कहे जा रहे 'देवी' जैसे सम्माननीय सम्बोधन को सुनकर पूर्णिमा का हृदय राजकुमार इंद्रजीत के प्रति आदर से भरता जा रहा था।

"शायद कुँवर किसी और ध्यान में थे, तभी पूर्णिमा को प्रवीना नाम से सम्बोधित कर उठे। जबकि इस कला पारंगत कन्या का नाम पूर्णिमा ही है।"- आचार्य बोले, तभी दासी जलपान लेकर आ गई। आचार्य के निर्देश पर वहाँ उपस्थित सभी के समक्ष जलपान के पात्र रखकर दासी चली गई।

"ये सत्य है, आचार्य कि मैं किसी और ध्यान में था।"- इंद्रजीत ने जलपान में आये मिष्ठान्न का एक टुकड़ा उठाकर खाते हुए कहा।

"किस ध्यान में थे कुँवर जू, कहीं मुगल सम्राट अकबर पुन: हम पर आक्रमण की योजना तो नहीं बना रहा, अभी पहले ही हुए धन-जन-हानि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के ही घाव नहीं भरे हैं।"- आचार्य केशवदास के मस्तक पर चिंता की लकीरें उभर आई थी।

"अकबर तो अपनी दुष्ट चालों से बाज नहीं आयेगा। पिता महाराज, भईया रामशाह और अनुज वीरसिंह सम्पूर्ण समय अकबर के आक्रमण से रक्षा के लिए शक्ति उत्सर्ग की योजनाएँ बनाते रहते हैं।"- राजकुमार इंद्रजीत पूर्णिमा के नेत्रों पर पलकों के आवरण को देखते हुए बोले - "किन्तु इस समय हम वीणा की उस धुन को बजाने वाली के ध्यान में थे, जिसे आज से पहले हमने कभी नहीं सुना। आचार्य ऐसी प्रवीणता से सिद्धहस्त कन्या का नाम तो प्रवीना ही हो सकता है - राय प्रवीना।"

"उत्तम! अति उत्तम!! राजकुमार।" आचार्य केशवदास प्रफुल्लित दिखे और पूर्णिमा अपनी कला की प्रशंसा सुन कर प्रमुदित।

"देवी को मेरे दिए इस नाम 'राय प्रवीना' को स्वीकार करने में कोई बाधा तो नहीं है?" पूर्णिमा से पूछते समय इंद्रजीत अपने स्थान से उठ गये थे। इस समय उनकी आँखों में पूर्णिमा के लिए प्रेम स्पष्ट झलक रहा था, जिसे आचार्य केशव ने जान लिया था। संभवतः पूर्णिमा को भी इंद्रजीत के नेत्रों में अपने प्रति उपजे प्रेम का ज्ञान हो गया था, इसलिए वो चाहकर भी कुँवर इंद्रजीत से आँखें नहीं मिला पा रहीं थी। राजकुमार इंद्रजीत को खड़ा होते देख पूर्णिमा और आचार्य केशव भी खड़े हो गये थे।

राजकुमार इंद्रजीत की आँखों में अपने प्रति प्रेम से कंपित होती पूर्णिमा मौन थी, तभी इंद्रजीत ने पुन: प्रश्न किया - "देवी क्या आप हमें खुद को प्रवीना कहने का अधिकार देंगी?"

इंद्रजीत के स्नेहिल और प्रेममय वचनों से भीगती पूर्णिमा झुककर कुँवर इंद्रजीत के पाँव के निकट बैठते हुए बोली - "कुँवर जू, दासियों को आज्ञा दी जाती है, उनसे अनुमति नहीं ली जाती। हे कुँवर! आपका दिया हुआ ये नाम हम शिरोधार्य करते हैं। आप सदैव हमें अपने चरणों में स्थान दिए रहना।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"उठो प्रवीना, तुम्हारा स्थान हमारे संगीत अखाड़े में है, हमारे हृदय में है।"- इंद्रजीत अपने पाँव में झुकी प्रवीना को उठाने के लिए स्वयं झुक चुके थे।

***

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पातुर

राजकुमार इंद्रजीत कुशलतापूर्वक अपने पिता महाराज मधुकर शाह के दिए हुए प्रशासनिक कार्य करते और इनसे बचा हुआ अपना सारा समय संगीत में लगाते। इंद्रजीत को संगीत से अत्यंत लगाव था और इसके लिए उन्होंने एक संगीत अखाड़ा बनवाया हुआ था। इस संगीत अखाड़े में पाँच रूपवती गायन एवं नृत्य विद्या में पारंगत पातुर थी। इन पाँचों पातुर, जिनसे इंद्रजीत का संगीत अखाड़ा, देवराज इंद्र की सभा सा प्रतीत होता, उनके नाम थे - रंगराय, नवरंग राय, त्रयरंगी, विचित्रलोचना और ललित लोचना। इंद्रजीत की सभा इन नर्तकियों के गायन और नृत्य से इस प्रकार परिपूर्ण होती कि स्वर्ग में देवेंद्र भी ईर्ष्या कर उठते। इतनी सुन्दर नवयौवन से लदी पांच-पांच पातुर होने के बाद भी इंद्रजीत एक कमी का अनुभव करते। वो कमी थी - शची सी सुन्दर और गुणवान प्रियतमा होने का।

जिस दिवस राय प्रवीना आचार्य केशव के साथ राजकुमार इंद्रजीत के संगीत अखाड़े में पहली बार आयी, उस समय प्रवीना जगत की अद्वितीय सुंदरी प्रतीत हो रही थी। इंद्रजीत समेत सभा में उपस्थित प्रत्येक जन प्रवीना को देखकर स्तब्ध था। उन्होंने इससे पहले इतनी सुन्दर नव पल्लिवत युवती देखी नहीं थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रवीना भी हृदय ही हृदय में कुँवर इंद्रजीत को समर्पित हो चुकी थी। और जब आचार्य केशव ने उन्हें इंद्रजीत का वो संदेशा दिया - कि उन्हें कुँवर ने ससम्मान अपने संगीत अखाड़े में बुलवाया है तो वे भाव-विभोर हो उठी। इसे अपने प्रियतम का बुलावा समझकर प्रवीना ने एक समर्पित प्रेयसी की भांति, अपने प्रियतम की सभा में उपस्थित होने से पूर्व लगन पूर्वक रुच-रुच के शृंगार किया। इसमें उनकी सहायता की उनकी बालपन की सखी महुवा ने।

उस दिवस प्रवीना भोर में ही उठकर बहुत समय तक अपनी अलसाई देह की विभिन्न अंगड़ाइयां लेते हुए अपने सुडौल अंगो के कलरव देखकर खुद ही कभी प्रसन्न होती, कभी लजाती, प्रेम की कामना से कांपती और कभी इंद्रजीत के अंकपाश से सिहर जाती।

बहुत देर तक अंगाड़ियाँ लेने के बाद जब प्रवीना की अलसाई देह थोड़ी सचित्त हुई तो वे स्नान के लिए स्नानगार में गई। महुवा ने आज प्रवीना के स्नान के लिए पुष्पों के सुगंधित जल का प्रबंध किया था। आज प्रवीना प्रथम बार राजकुमार इंद्रजीत की संगत सभा में जा रहीं हैं, ये महुवा को भी ज्ञात था इसलिए उसने आज प्रवीना के लिए सभी विशेष प्रबंध किये थे।

सुगंधित जल से अंगो को मल - मल के स्नान करने के बाद प्रवीना दर्पण के सामने आकर खड़ी हो गई। महुवा ने श्रृंगार पेटिका खोल के दर्पण के निकट एक काष्ठफलक पर रख दी।

दर्पण के सामने स्वयं को अपलक देखती हुई प्रवीना घड़ी दो घड़ी खड़ी रहीं जैसे उनकी देह अभी भी आलस्य में हो। उन्हें यूँ खड़ी देख महुवा उन्हें स्मरण दिलाते हुए बोली - "सखी श्रृंगार आरम्भ करें, राजकुमार की सभा में समय रहते पहुँचना चाहिए।"

महुवा की बात सुनकर प्रवीना ने मुस्कराकर देखा और आलस्य त्याग कर कपूर से अपनी पलकों को मलने लगी। स्वच्छ वस्त्र पर गुलाबजल का फुलेल लेकर उन्होंने पलकों को साफ किया और फिर कस्तूरी व जुवाद को रगड़कर उसका अंजन लगाया।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

माथे और कंधे पर बिखरी अलकों को मोतियों जड़ी लाल डोरियों से गूथ कर प्रवीना ने फिर कुछ समय अपने कमल सरीखे नेत्रों से स्वयं को दर्पण में देखा। तत्पश्चात अनुपम उरोजों पर रजत धागों से बनी अँगियां चढ़ाई जिसके बांध महुवा ने प्रवीना की पीठ पर कुछ ऐसी सख्ती से बांधे कि उरोजों के शिखर बिंदु अंगिया के आवरण में भी स्पष्ट स्तंभित दृष्टिगोचर हो उठे।

यूँ बहुत देर तक प्रवीना महुवा की सहायता से साज श्रृंगार कर कुँवर इंद्रजीत की सभा में जाने के लिए सज्ज हुई। आचार्य केशव निवास के बाहर प्रवीना की प्रतीक्षा कर रहें हैं, ये जानकार वे बाहर आयीं। कुँवर इंद्रजीत ने उन्हें लिवा लाने के लिए पालकी भेजी थी। गुरु केशव को प्रणाम कर हृदय में ईश्वर का ध्यान करते हुए प्रवीना पालकी में बैठी।

✿✿✿

राय प्रवीना ने सभा में यूँ प्रवेश किया जैसे देवी रति ने सौंदर्यसभा में प्रवेश किया हो। वहाँ उपस्थित सभी जन के हृदय प्रवीना को देखकर यूँ डगमगाए जैसे वे सौन्दर्यसागर में मानो बिना पतवार की नौका की तरह डोल रहें हो। वहाँ उपस्थित वो पांचो रूपसी नर्तकियां जो इंद्रजीत की सभा में रंभा, उर्वशी, मेनका, घृताची और तिलोत्तमा के सदृश थी वो भी प्रवीना के रूप लावण्य को देखकर दांतों में ऊँगली दबा कर उन्हें देखती रहीं।

इंद्रजीत ने जब मदभरी चाल से चलकर सभा में आते हुए प्रवीना को देखा तो उन्हें लगा आज उनकी ये सभा और हृदय की अभिलाषा पूर्ण हुई।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रजत जटित जूतियों में बंधी पद्मपादों से स्वच्छ स्फटिक पर चलती हुई राय प्रवीना सभा के मध्य में स्वर्णरश्मि सी इंद्रजीत के सामने खड़ी हो गई।

इंद्रजीत ने कला की अधिष्ठात्री देवी प्रवीना का खड़े होकर स्वागत किया। इंद्रजीत को सभा में अपने सम्मुख खड़े देख प्रवीना दुविधा में पड़ गई। इतने बड़े राज्य का राजकुमार एक साधारण कन्या के समक्ष सभा में अपने आसन से खड़ा हो जाए, ये उन्हें नीतिसंगत नहीं लगा।

राजकुमार इंद्रजीत को उनके आसन पर बिठाने का मार्ग प्रवीना ने शीघ्र ही ढूंढ लिया। वे विनयवत बोली - "हे राजकुमार आपने मुझ साधारण कन्या पर अब तक अत्यंत उपकार किये हैं। आपकी कृपा से ही, मैं आचार्य केशव की शिष्या बनने का सौभाग्य प्राप्त कर पाई हूँ। अपने माता-पिता और गुरु से मैने अब तक क्या सीखा है, यदि आपको आज्ञा पाउँ तो प्रदर्शित करूँ।"

प्रवीना के शील भरे वचन सुनकर इंद्रजीत प्रसन्नचित्त बोले - "अवश्य देवी, अवश्य, हम खुद आपकी कला का दर्शन पाने को लालायित हैं।"

"कुँवर जू, जब कोई नृत्यांगना अपनी नृत्यकला का प्रदर्शन करती हैं, तो सभी उसका बैठकर आनंद लेते हैं।"- राय प्रवीना की नीतियुक्त बात सुनकर मन ही मन उनकी बुद्धिमता की प्रशंसा करते हुए इंद्रजीत अपने स्थान पर विराजमान हो गए। उन्होंने एक दृष्टि प्रवीना पर डाली और संकेत से उनकी सहमति पाकर वादकों को संगीत आरम्भ करने को कहा।

राजकुमार इंद्रजीत के संकेत से वादकों ने अपने यंत्रों से सुर छेड़ने आरम्भ कर दिए। प्रवीना नृत्य करने को सज्ज हो उठी किन्तु उससे पहले ही इंद्रजीत बोल उठे - "यदि देवी चाहें तो नृत्य से पूर्व हम कुछ क्षण उनकी वीणा के सुर सुनना चाहतें हैं।"

प्रवीना ने इंद्रजीत के निवेदन को आज्ञा मानकर शिरोधार्य किया। एक उचित आसन पर बैठ देवी प्रवीना अपनी कोमल किसलय उँगलियों से वीणा के तार झंकृत करने लगी। कई क्षण प्रवीना अपनी मृणाल बाँहों से वीणा से क्रीड़ा करके वो मूर्तिमान राग बजाया कि उपस्थित सभी जन-मूर्ति सदृश हो उठे। जब राग समाप्त हुआ तब भी बहुत देर तक लोग इसी तंद्रा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

में तल्लीन रहे। जब इंद्रजीत के ओठों से 'वाह' निकली तो सभा की तंद्रा भंग हुई। करतल ध्वनि के मध्य राय-प्रवीना इंद्रजीत से सांकेतिक अनुमति पाकर नृत्य के लिए सज्ज हो उठीं।

प्रवीना नृत्य की मुद्रा में ज्यों ही सभा के मध्य में आयी, वाद्यों के स्वर परिवर्तित हो उठे। सभा में उपस्थित सभी के नेत्र अपलक देवी प्रवीना पर स्थिर हो गए। नृत्य आरम्भ हुआ।

जैसे कलियों पे भँवरे डोलते हैं, ऐसे ही उस नृत्य को देख मेघ किसी भँवरे के रूप में यूँ उमड़ उठे, जैसे वो, नृत्य की देवी का आलिंगन करने को व्याकुल हो। सारी सभा देवी प्रवीना के सुखचलि, शब्दचलि नृत्य को देख वाह-वाह कर उठी। आचार्य केशव प्रवीना का नृत्य देख गर्वित हो उठें। इंद्रजीत की मन की साध पूरी हुई।

नृत्य अपने चरम पर पहुँचकर समापन की और अग्रसर था। सभी टकटकी लगाए प्रशंसा में कभी "वाह", कभी "अद्भुत", कभी "अद्वितीय" तो कभी "अप्रितम" कह रहे थे।

तभी प्रशंसा के उन्हीं सामूहिक स्वरों में एक स्वर गूंजा - "इस से पूर्व किसी पातुर को को इतना निपुण नृत्य करते नहीं देखा।"

देवी प्रवीना के विद्युतीय गति से थिरक रहे पद्मपदों में मानो किसी ने लौह श्रंखलाएं डाल दी हो। अभी कुछ क्षण पहले नृत्य से सराबोर उनके पाँव स्फटिक भूमि पर चिपक कर रह गए। मुख पर नृत्य के परिश्रम से उपजे स्वेदबिंदु कानो में पड़े कटु शब्दों से उष्मित होकर वाष्पकण बनके वायु में विलीन होने लगे। मुख पर दुःख और क्षोभ के मेघ झलक उठे। देह अपमान से कांपने लगी।

इंद्रजीत ने उनकी दशा का अनुमान किया। ये देवी प्रवीना का अपमान था। प्रवीना का अपमान अर्थात उनका अपमान। इस अपमान के फलस्वरूप उपजा क्रोध उनकी जिव्हा पर बैठकर सभा में प्रकट हुआ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"देवी प्रवीना के लिए ये अपमानजनक बात कहने वाला कौन है, ये धृष्ट, सामने आये?"- राजकुमार इन्द्रजीत दहाड़ते हुए अपने आसन से उठ खड़े हुए।

☼☼☼

"माधव ये क्या कह रहे हो तुम, अभी तो प्रवीना ने काव्य शिक्षा ग्रहण करना आरम्भ किया है। जैसे हम कुँवर इंद्रजीत के कहने से उनके लिए 'रसिक प्रिया' ग्रंथ लिख रहे हैं वैसे ही उनकी आज्ञा से हम प्रवीना को कविता के गुण सिखाने के लिए 'कवि प्रिया' की रचना कर रहे हैं। तुम देखना माधव तुम्हारी पुत्री को पहले से ही गायन और नृत्य में पारंगत है वो 'कवि प्रिया' की सहायता से शीघ्र ही काव्य कला में प्रवीन हो जायेगी। ये समय प्रवीना के उत्कर्ष का है, इस समय जो उसका विवाह कर दिया गया तो पति के आधीन होकर गृह-गृहस्थी में उलझकर एक साधारण स्त्री बनकर रह जाएगी। उसके भीतर की कलायें दम तोड़ देंगी।"

कहते-कहते आचार्य केशव पीठ पर हाथ बांध कर उठ कर टहलने लगे। व्यग्रता और निराशा उनके मुख पर छलक पड़ी थी।उन्हें खड़ा होकर टहलते देख माधव भी उठकर खड़ा हो गया। कुछ देर आचार्य को टहलते हुए माधव देखता रहा फिर अपने स्थान पर खड़े हुए वो हाथ जोड़कर बोला - "आचार्य! मेरी कन्या साधारण कन्या बनी रहेगी तो कोई न कोई लड़का उसे अपनी जीवन संगिनी बना लेगा। यदि वो कलावंत बन गई तो उसका हाथ कौन थामेगा। सब उसे वही समझेंगे, वही कहेंगे जो उस दिन कुँवर जू की सभा में उस दरबारी ने कहा। और आप तो जानते हैं आचार्य, ऐसी स्त्रियों के साथ कोई गृहस्थी नहीं बसाता। मैं नहीं चाहता आचार्य कि मेरी पुत्री हमेशा अविवाहित रहे और समाज-संसार उसे पातुर कहे।"

प्रवीना के लिए उसके पिता की जिव्हा से ही 'पातुर' सुनकर आचार्य के मुख के निराशा के भाव क्रोध में बदल गए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"माधव...!"- वो गुस्से से उबलते हुए माधव की ओर पलटकर उसे कठोर शब्दों में ताना देना चाहते थे किन्तु माधव की आँखों से बह रहे आसुंओ को देखकर शांत हो गए। माधव की अवस्था देखकर कुछ पलों में चेहरे से क्रोध के लक्षण जाते रहे।

माधव के करीब आकर उसके कंधे पर हाथ रखकर आचार्य केशव अपने स्वर को नरम रखते हुए बोले - "माधव तुम प्रवीना के पिता हो। उसके बारे में चिंतित होना, उसके भविष्य को लेकर विचार करना तुम्हारा कर्तव्य है। किन्तु प्रवीना का भविष्य उसके कलावंत बनने में ही है। कुँवर इंद्रजीत भी यही चाहतें हैं। वो तुम्हारे पुत्री का बेहद सम्मान करते हैं इसलिए तो उन्होंने उस दिन अपने दरबारी को उचित दंड दिया।"

"आचार्य! कुँवर इंद्रजीत के बहुत उपकार हैं हम पर। हमें वारद्वारा से लेकर यहाँ ओरछा लाये। हमारे रहने के लिए भव्य गृह दिया, मुझे शस्त्रागार में अधिकारी का कार्य दिया। मेरी पुत्री पूर्णिमा को आप जैसे योग्य शिक्षक के पास शिक्षा के लिए भेजा किन्तु आचार्य आप तो जानते हैं कि किसी कन्या का सबसे ज्यादा सम्मान तभी होता है, जब वो विवाहित बने। और आचार्य एक नर्तकी को ये सम्मान कौन देगा?"

"माधव जो तुम्हारी आज्ञा और प्रवीना की सहमति होगी तो उसे ये सम्मान मैं दूंगा।"

रौबीले स्वर के तरफ आचार्य केशव और माधव ने एक साथ देखा तो वहाँ कुँवर इंद्रजीत प्रवेश कर रहे थे। आचार्य केशव और इंद्रजीत ने एक-दूसरे का अभिवादन किया। माधव अपने सामने राजकुमार इंद्रजीत को देखकर ससम्मान उनके पाँव में झुक गये।

माधव को अपने कदमो से उठाते हुए इंद्रजीत बोले - "यदि तुम्हारी अनुमति हो तो मैं प्रवीना से विवाह करना चाहता हूँ।"

माधव, राजकुमार इंद्रजीत के मुख से प्रसन्नता देने वाले वचनों को सुनकर हर्षित होते हुए विभोर हो मौन बने रहे। उन्हें वो समय स्मरण हो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उठा, जब पूर्णिमा के पाँव में बने पद्म को देखकर पंडित ने उसके राजरानी बनने की भविष्यवाणी की थी।

आचार्य केशव की और मुड़कर कुँवर इंद्रजीत बोले - "आचार्य, क्या आपका आशीर्वाद इस विवाह के लिए प्राप्त होगा?"

"अवश्य इंद्रजीत जू! आपकी कीर्ति प्रवीना को पत्नी के रूप में स्वीकारने से और अधिक बढ़ेगी। किन्तु आपको एक वचन देना होगा।"

"कहिये आचार्य, कैसा वचन। प्रवीना के जीवन को सुखमय बनाने के लिए हम कोई भी वचन देने को तैयार हैं।"

"तो कुँवर जू, आप प्रवीना पर, उसकी शिक्षा पर, कोई बंधन नहीं डालेंगे। उसके गायन, नृत्य और काव्य करने की स्वत्रंता अक्षुण रहेगी।"

"वचनबद्ध हुए आचार्य।"- कहकर इंद्रजीत ने पुन: माधव से पूछा - "क्या तुम्हारी अनुमति है?"

"मैं धन्य हुआ"- कहकर माधव ने कुँवर के सामने हाथ जोड़ दिए।

***

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राजरानी

सत्या ने जब सुना उसकी पुत्री पूर्णिमा राजरानी बनेगी तो वो हजार-हजार बार श्रीकृष्ण जू को आभार प्रकट करती रही।

कुँवर इंद्रजीत ने प्रवीना की सहमति जानने के लिए उनसे मिलने की इच्छा कही।

जब प्रवीना कुँवर इंद्रजीत से मिलने के लिए कक्ष में जा रही थी तो उन्हें छेड़ते हुए महुवा बोली - "देख पुनिया, वहाँ कुँवर जू अकेले होंगे, संभल के रहियो, कहीं ऐसा न हो, चट मंगनी पट ब्याह की तरह सुहागरात की मीठी पीड़ा का भी अनुभव करा दें।"

महुवा की चुहल से प्रवीना लाल होते हुए जब पलटवार करते हुए बोली - "चल तूँ साथ चल, दो जनि रहेंगी तो शायद पीड़ा कम होगी।"

"जा हम नहीं चलते साथ, हमारे पाँव में कौन सा पद्म है जो हम राजकुमारों की दी हुई पीड़ा झेलें।"

महुवा ने कहा और फिर हँसते हुए प्रवीना को उस कक्ष छोड़ गई जहाँ कुँवर इंद्रजीत उसकी प्रतीक्षा में थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रवीना उनके सामने जाकर चुपचाप खड़ी हो गई। आज उनका हृदय कुछ इस प्रकार चंचल हो रहा था कि उन्हें कुँवर जू को प्रणाम करने की सुध तक न रही थी।

कुछ देर कक्ष में मौन पसरा रहा जिसे कुँवर इंद्रजीत ने भंग करते हुए प्रवीना से पूछा - "देवी आपको आपके पिता ने हमारी इच्छा के बारे में बताया होगा। उन्होंने अपना आशीर्वाद दे दिया है। मेरी इच्छा को आचार्य केशव का भी आशीर्वाद प्राप्त है, क्या हम आपकी राय जान सकते हैं?"

"यदि कुँवर जू की आज्ञा हो तो क्या हम अपनी राय देने से पहले उनसे कुछ पूछ सकते हैं?"- कहते हुए प्रवीना अब नतमुख नहीं रही थी। उनकी आँखें इंद्रजीत के चेहरे की थाह माप रहीं थी।

इंद्रजीत को अपने मुख को देखते हुए प्रवीना बड़ी भली लग रही थी वे बोले - "देवी प्रेम कुछ भी पूछने की आज्ञा नहीं देता अधिकार देता है। आप जो भी पूछना चाहती हैं साधिकार पूंछे।"

कुँवर इंद्रजीत की जिव्हा से 'प्रेम' शब्द सुनकर प्रवीना की मानो सारी मुराद पूरी हो गई। उनके बंजर हृदय की भूमि पर जैसे आषाढ़ के मेघ बरस उठे थे।

लरजते स्वर में प्रवीना ने पूछा - "कुँवर जू प्रेम अवश्य ही प्रश्न करने का अधिकार देता है किन्तु प्रेम तो प्रेमी और प्रेमिका के स्वीकार करने पर होता है। कुँवर जू, जो कोई भी बात स्वीकार या अस्वीकार तभी की जाती है जब वो कही गई हो। जहाँ तक मुझे स्मरण है आपने इस घड़ी से पूर्व कभी भी मुझसे प्रेम करने की बात नहीं कही।"

"देवी मैने तो कई बार कहा और आपने उत्तर भी दिया। और आपका उत्तर, हमेशा हाँ में था।"- कहकर इंद्रजीत हँस पड़े। प्रवीना उन्हें देखती रहीं। इंद्रजीत की कही बात प्रवीना के समझ में नहीं आयी थी किन्तु उन्हें उनका हँसना बड़ा ही भला लगा था।

कुछ देर बाद प्रवीना ने हँसते हुए इंद्रजीत से अपने रक्तिम अधरों पर हास्य लेकर कहा - "कुँवर जू ने अवश्य ही ये सब बातें स्वप्न में की होंगी।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"देवी, ये बातें हम स्वप्न में भी करते जो मेरी आँखों में बसी आपकी छवि, मेरी आँखों में नींद आने देती।"

"ओह तो कुँवर जू के नेत्रों में हमारी छवि है और उस पर आरोप है कि उसने ओरछा के राजकुमार की निद्रा को उनसे दूर कर रखा है।"

"हाँ, ऐसे और भी कई आरोप हैं, आपकी छवि पर ही नहीं, आप पर भी।" कुँवर फिर हँसे थे।

"अच्छा तनिक मैं तो जानूं क्या क्या-आरोप हैं हम पर।" प्रवीना ने मुख पर गाम्भीर्य लाते हुए पूछा।

"एक आरोप तो ये है कि देवी ने कभी हमारी आँखों को ध्यान से नहीं देखा। यदि देखा होता तो उन्हें अवश्य ही मेरी आँखों से उनको दिए गए प्रेम सन्देश का भान हुआ होता।"

राजकुमार इंद्रजीत की बात सुनकर प्रवीना की आँखें बरबस ही उनकी आँखों में उतर गईं। वहाँ प्रवीना के लिए प्रेम का सागर ठांठे मार रहा था। अपने लिए अथाह प्रेम देखकर प्रवीना ने नेत्र झुका कर कहा - "कुँवर जू, आपका ये आरोप स्वीकार है कि आपकी नेत्रों की भाषा पढ़ने में असफल रहे किन्तु आपने ने मेरे हृदय की बात भी तो कभी न पूछी।"

"जैसे मेरे हृदय की बात मेरी आँखों में थी वैसे ही देवी की हृदय की बात भी उनके आँखों में थी और मैं आचार्य केशव की लिखी जा रही 'रसिक प्रिया' को पढ़-पढ़ कर नेत्रों को पढ़ने की कला जान गया हूँ।"

"और मेरे नेत्रों में क्या पढ़ा कुँवर जू ने?"

"अपने लिए अपार प्रेम।"

कुँवर की बात सुनके प्रवीना लजा उठीं थी। उनका मुख झुक गया। इंद्रजीत ने उनकी चिबुक को हथेली से पकड़ के मुख ऊपर करते हुए कहा - "अब देवी जो प्रश्न करना चाहती थी प्रेम के अधिकार से निसंकोच पूछे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इंद्रजीत के स्पर्श से प्रवीना की देह रोमाँचित हो उठी। किसी पुरुष ने प्रथम बार प्रेम के अधिकार से उन्हें छुवा था। उनके शब्द कंठ में अटक के रह गए। वो मौन हो अपने प्रियतम इंद्रजीत की आँखों को देखती हुई खड़ी रहीं।

इंद्रजीत ने प्रवीना की ठोड़ी से हाथ हटा कर, उनके कंधे पर रखते हुए, जब वापस दोहराया - "देवी निसंकोच अपना प्रश्न पूछे" तो प्रवीना की श्वांसे दुकुल हो गई।

किसी पुरष के प्रथम स्पर्श से प्रवीना की नवनुतन मुग्धा देह ऐसी चटकी जैसे ओस कणों के पड़ने से कली पुष्प बनने को बेताब हो उठती है। अपनी दुकूल श्वासों और कुँवर इंद्रजीत की छुवन से सिहरती देह को नियंत्रित करती हुई उन्होंने पूछा - "कुँवर जू, जबकि प्रभु श्रीराम ने एक धोबी के कहने पर माता सीता का परित्याग कर दिया था, तो भी आप मुझे स्वीकार कर रहें हैं, अपनी एकनिष्ठ होने का सम्मान प्रदान कर रहे हैं?"

"देवी प्रवीना! मैं न तो श्रीराम की तरह ईश्वर हूँ और न ही मैं उनकी तरह आदर्श स्थापित कर सकता हूँ। प्रभु श्रीराम ने उस समय जो किया संभवतः ये उस देशकाल की आवश्यकता होगी और जो मैं कर रहा हूँ, वो इस देशकाल के योग्य है। देवी को यदि मेरी बात में कोई त्रुटि दिखाई पड़ती है तो उन्हें अपना निर्णय लेने का अधिकार और स्वतंत्रता दोनों है।"

कुँवर इंद्रजीत की बात सुनके प्रवीना झुकी और उन्होंने कुँवर के चरण स्पर्श किये।

"अरे ये क्या कर रही हो"- कुँवर ने प्रवीना को उठाते हुए कहा - "तुम्हारा स्थान तो मेरे बराबर खड़े रहने का है।"

"कुँवर जू, पति का चरणस्पर्श तो हर स्त्री का अधिकार होता है।"- प्रवीना बोली।

"तो देवी को मेरी बात स्वीकार है?"

"हाँ, पर कुँवर जू को मेरी एक आन पूरी करनी होगी।"

"कहें देवी...प्राणप्रण से पूरा करूँगा।"

"कुँवर जू, मुझे देवी न कहें, केवल प्रवीना कहें।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"अवश्य किन्तु देवी को भी मेरी एक आन निभानी होगी।"

"क्या?"

"देवी भी मुझे 'कुँवर जू' न कहेंगी।"

"आपकी आज्ञा का पालन होगा।"

✿✿✿

आचार्य केशव ने कुँवर इंद्रजीत और प्रवीना के ब्याह का शुभ मुहर्त निकाला। इंद्रजीत ने अपने राजसी परिवार में से किसी को नहीं बुलाया था, ऐसा उन्होंने आचार्य केशव के परामर्श पर किया था। आचार्य केशव ने उनके इस विवाह को गंधर्व विवाह कहा था। ब्याह में आचार्य केशव, उनकी पत्नी और प्रवीना के माता-पिता के अतिरिक्त उनकी बालपन की सखी महुवा उपस्थित थी।

सभी के आशीर्वाद से इंद्रजीत और प्रवीना जुगुल किशोर के मंदिर में गंधर्व रीति से पति-पत्नी बन गए।

राजकुमार इंद्रजीत ने प्रवीना के लिए एक भव्य महल बनवाने की योजना सोची थी, किन्तु इतनी शीघ्र महल का बनना कठिन कार्य था। इसलिए फ़िलहाल उन्होंने अपने संगीत अखाड़े के निकट ही प्रवीना के लिए एक निवास आरक्षित किया था। ब्याह के बाद वे अपनी नवोढ़ा पत्नी को लेकर वहीं आये।

महुवा अपनी सखी के साथ आयी थी। महल की दासियों के साथ उसने रुच-रुच के अपनी सखी का सुहाग कक्ष और सेज सजाई।

नियत समय पर सूरज अपनी रश्मियों के साथ पश्चिम में नीचे उतर गया। ठंडी पूर्वा, उपवन में खिले पुष्पों का पराग, नयी कलियों के सृजन के लिए बहाने लगी। चन्द्रमा सुहागसेज पर प्रियतम की प्रतीक्षा में बैठी प्रवीना की सुंदरता से ईर्ष्या करके, कभी मेघ के पीछे छिपता तो कभी उनके लावण्य का रसपान करने के लिए सभी मर्यादायें तोड़कर, कक्ष

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के गवाक्ष से सीधे भीतर झाँकने लगता। चंद्र की किरणें भी प्रवीना को शूल सी चुभती। वो घबरा कर अपने पुष्ट वक्षों पर अपना उत्तरीय यूँ व्यवस्थित करती जैसे शशिकिरणों के ताप से अपने पयोधर बचाने का प्रयास कर रहीं हो।

इधर चन्द्रमा की गति प्रवीना को सता रही थी तो उधर कुँवर इंद्रजीत, आज चन्द्रमा की धीमी गति से क्रोधित हो रहे थे। नवविवाहित पत्नी की सुहागसेज पर जाने का मुहर्त आज चन्द्रमा की धीमी गति के कारण निकट ही नहीं आ रहा था। वे घोर बैचेनी में अपने कक्ष में टहल रहे थे।

महुवा ने आकर राजकुमार इंद्रजीत से आकर उनके मन को भाने वाले ये वचन कहे - "कुँवर जू, देवी आपकी प्रतिक्षारत हैं, यूँ इस प्रकार प्रथम रात्रि पत्नी को प्रतीक्षा करवाना किसी भी पुरुष के लिए शास्त्रों में वर्जित है।"- महुवा प्रवीना की भगिनी के समान सखी थी। इंद्रजीत उसे स्यालिका समझते थे, अपने निजी अंगरक्षक लाखा से उसके ब्याह की सहमति प्रदान कर चुके थे। यद्यपि इंद्रजीत ओरछा के राजकुमार थे और महुवा एक साधारण कन्या, किन्तु इस समय स्वयं को कुँवर की स्यालिका होने के नाते, उसने अपनी बात कहते हुए ठिठोली भी की।

महुवा की ठिठोली से कही गई बात कुँवर इंद्रजीत को बड़ी भली लगी और वे मुस्कराते हुए सुहाग कक्ष की ओर जाने लगे। उन्हें यूँ आतुरता से जाते हुए देख महुवा आनंदित हुए बोली - "कुँवर जू, शास्त्र कहते हैं कि सुहागसेज पर जाने से पहले पान ताम्बूल का सेवन करना चाहिए।"

महुवा की बात सुनकर कुंवर इंद्रजीत पलटें तो वो हाथ में एक थाली थी जिसमे सुगन्धित पान का बीड़ा था। पान को मुख में रखकर इंद्रजीत ने हँसते हुए पूछा - "महुवा तुम्हे जो शास्त्रों का इतना ज्ञान है तो अवश्य ही वात्स्यायन के कामसूत्र का भी ज्ञान होगा। क्या आज के लिए आप उसमें से कोई विशेष बात मुझे सिखा सकती हैं।"

कुँवर इंद्रजीत की बात सुनकर महुवा ने निरुत्तर होकर लाज से सर नीचा कर लिया और उसे उसी अवस्था में छोड़कर इंद्रजीत उस ओर गए जहाँ उनकी प्रेयसी उनके इंतज़ार में बैठी थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कक्ष में प्रियतम के पदचाप की आहट से प्रवीना की देह कुसमित होकर सुवासित हो उठी, हृदय की गति अनियंत्रित होने लगी। संयम धरते हुए वे सुहागसेज से उठी और पति के चरण स्पर्श कर किये। उन्हें वापस उठने में पति की शक्तिशाली बाहों की सहायता मिली। अपने कंधो पर प्रियतम के हाथों का भार उठाते हुए वो ओठों से अबोल और नेत्रों की भाषा से अपना समर्पण प्रदर्शित करती रहीं।

कुँवर ने अपनी समर्पित प्रेयसी को देखा। उनके अल्हड़ यौवन समय कामनीय रति की भांति दृष्टिगोचर हो रहा था। इस यौवन को पूर्णतया देखने की लालसा में इंद्रजीत ने प्रवीना की देह से आभूषण और वस्त्रों को विलग करना आरंभ किया। प्रवीना ने कोई विरोध नहीं किया। पति से कैसा विरोध। प्रथम मिलन के सुअवसर पर वस्त्रों के आवरण का कार्य भी क्या?

कुछ क्षणों में संसार की सर्वाधिक सुन्दर स्त्री अपने पति के सामने नैसर्गिक अवस्था में थी। सरस्वती के समान मुख, काली अलकों की लटें, लालिमा भरे थरथराते अधर, कामोत्तेजक मृगशावक सी आँखें, पुष्ट उभरे हुए वर्तुल और उर्ध्वगामी युगल स्तन, लालमणि के समान लाल हाथ, पतली कमर, पुष्ट नितम्ब और जंघाएँ, धनुष की भांति तिरछी भृकुटि सा काम स्थल।

इंद्रजीत ने अवश हो प्रवीना को अंक में भरा तो वो उनसे प्रियंगु लता के समान लेट गई। किसी पुष्प की भांति प्रेयसी को देह को बाहों में भरे इंद्रजीत शैय्या पर चढ़े।

कभी मृदुल छुवन, कभी सख्त मर्दन, कभी चुंबन, कभी सख्त अंकपाश में कसमसा कर कभी सिसकती, कभी उसकती, कभी मसकती अमृतरस से भरे ओंठ आम्ररस से पल्लिवत देह सबकुछ अपने हृदय के साथ अपने प्रियतम को समर्पित करने को प्रवीना स्वयं आतुर हो उठीं।

और फिर मिलन की उस शुभ घड़ी में कोई व्यवधान न पड़े इसलिए मेघ ने चन्द्रमा को अपने आवरण में छुपा लिया। शुभ घड़ी में कुँवर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इंद्रजीत का दैहिक सानिध्य पा कर प्रवीना का अल्हड़ यौवन पूर्णता को प्राप्त हुआ। रात्रि की ना जाने कितनी घड़ियाँ, वातायन से आ रही ठंडी पवन से, संभोग श्रम से उपजे स्वेद कणो को सुखाते हुए, मतवाले भ्रमर से घिरे, खिले कंद पुष्प की भांति, प्रवीना इंद्रजीत के वक्ष पर बिखरीं, आलिंगबद्ध रही।

"प्रिये प्रवीना! तो तुमने क्या कह कर मुझे बुलाने का निर्णय लिया है, अब तक बताया नहीं?"- कुँवर इंद्रजीत के हाथ कभी उनकी पीठ तो कभी केश सहला रहे थे।

पति की बात सुनके प्रवीना ने अपनी शिथिल देह को तनिक समेटा और इंद्रजीत के वक्ष से मुख उठाकर उनकी आँखों में देखते हुए कहा - "जीत, अब से जीत कह कर बुलाऊंगी, मैं आपको प्राणनाथ।"

इंद्रजीत ने प्रवीना की बात सुनी और उन्हें वापस अपनी अंक में भींच लिया।

***

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

किरणवती

"जहाँपनाह आप हिन्द के शहंशाह है आपके क़दमों में सारी दुनिया झुकती है, फिर ओरछा की हैसियत ही क्या है, वो आपके सामने किसी कीड़े से ज्यादा औकात नहीं रखता। आप जिस दिन चाहेंगे उस दिन उसे अपनी जूती के नीचे मसल देंगे।"- अबुलफजल ने व्यग्रता से टहल रहे बादशाह अकबर को आदर के साथ कहा।

"अबुलफजल हम तीन-तीन बार पूरी ताकत से लाखों का लश्कर जाबांज सिपहसालारो की सरपरस्ती में ओरछा भेज चुकें हैं। लेकिन हमारे हाथ क्या आया, केवल मायूसी और शिकस्त। उस पाजी मधुकर शाह ने हर बार मुगलिया लश्कर को धूल में मिलाकर, हमारी शान में बट्टा लगाया है। और अबुलफजल हम इस वक्त दरबार में नहीं हैं जो तुम हमारी फतह और दरियादिली का खुत्बा पढ़ो। क्या तुम नहीं जानते वो सिसोदिया प्रताप, मुगलिया परचम की आन नहीं मानता। मुट्ठी भर राजपूत और भीलों को साथ में लेकर हल्दीघाटी में उसने न केवल भरी शाही सेना को तितर-बितर किया बल्कि उसके बाद मेवाड़ के ज्यादातर गढ़ उसने हमसे छीन लिए हैं। एक प्रताप कम था क्या जो

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अल्लाह ने मेरे सीने पर, ये मधुकर शाह नाम का एक काफिर और बिठा दिया है।"

"जहाँपनाह आप सबर रखिये, जैसे हमारे लश्कर ने गोंडवाने की सरकश रानी दुर्गावती को शिकस्त दी थी वैसे ही हम जल्द ही ओरछा को अपने काबू में करेंगे और वहाँ का राव या तो जहन्नम जाएगा या आपके मातहत आपका मनसबदार बनके आपकी जी हुजूरी बजायेगा, आपकी पवित्र जूतियों का बोसा लेगा।"

"दुर्गावती को कैसे शिकस्त दी आसफ खान ने क्या हम नहीं जानते अबुलफजल। उस काफिर औरत ने न जाने कितनी बार मुगलिया परचम को अपने कदमो तले रौंदा। मुगलिया सल्तनत की इस बेअदबी की वजह से, हम उस सरकशी काफिर रानी को, अपने हरम में लेकर, सजा के तौर पर हमेशा ले लिए उसे अपनी रखैल बनाकर रखना चाहते थे। किन्तु वो जाबांज औरत ने मरना कबूल किया लेकिन आसफ खां के हाथ नहीं पड़ी।"

"आलमपनाह वो उपद्रवी औरत भले ही आपके हरम की जीनत न बनी हो लेकिन उसकी पुत्रवधु और बहन कमलावती तो आपके हरम को रोशन कर रहीं हैं।"

"खामोश..." अकबर गला फाड़ के चीखते बोला - "खामोश हो जाओ अबुलफजल क्या हम नहीं जानते कि खुश करने के लिए दुर्गावती की दो दासियों को उसकी बहन और पुत्र की पत्नी बताकर मेरे हरम में भेज दिया गया। दुर्गावती और प्रताप हमारे सीने में खंजर से चुभते हैं। और तुम हमें दासियों को दुर्गावती की बहन और बहू बताकर तसल्ली देने की कोशिश कर रहे हो।"

"मुहाफ़ करें अख़वंदे आलम, खाकसार से गलती हुई"-अबुलफजल अकबर के चेहरे पर जलाल के निशान देख कर डर कर चाटुकारी करते बोला - "लेकिन काफिरों का हौसला जमींदोज करने के लिए झूठी कहानियो को गढ़कर उन्हें प्रचारित करना ही होता है। और फिर वैसे भी दुर्गावती का सूबा आलीजाह के क़दमों की शोभा है और रही बात दुर्गावती

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की तो उस जैसी ना जाने कितनी राजपूत रमणियाँ आपके बिस्तर की जीनत बनकर हरम में रह रही हैं।"

"इन काफिरों का हौसला तोड़ने के लिए, हमने क्या-क्या नहीं किया अबुलफजल। एक काफिर के खिलाफ दूसरे काफिर को मदद की। भाई से भाई को लड़वाया। इन काफिरों को अपने लश्कर का रुतबा दिखाकर, उनकी जमीन, उनके पुत्रों को बंधक बनाकर उनकी पुत्रियों को समर्पित करने के लिए मजबूर किया। हिन्दू कुमारियों के जिस्म को भोगने और उन्हें मुगल हरम की लौंडी बनाने के लिए हम उनसे विवाह-निकाह का ढोंग करते हैं। फिर भी अबुलफजल, कुछ शातिर काफिर राय, न तो हमारी मातहती कबूल करते हैं और न कुछ राजपूती औरतें तमाम कोशिशों और दबाव के बाद भी मेरे साथ हमबिस्तरी को राजी नहीं होती हैं।"

"कौन है वो बदनसीब काफिर औरत जो जहाँपनाह की मसर्रत से महरूम रहना चाहती है। हुजूर इशारा करें हम उसे आपके हरम में लाने के लिए किसी काफिर राय को ही जिम्मेदारी सौपेंगे। हुजूर देखेंगे की कुछ दिनों में ही वो हिन्दू औरत आपके हरम में आपकी कदमबोसी कर आपकी इनायत कबूल कर रही होगी।"

"अबुलफजल उस सरकशी औरत को कहीं से लाने की जरूरत नहीं है वो यहीं आगरा में ही है"- अकबर हाथ मसलते हुए बोला - "ख़ैर कोई नहीं हम कोई न कोई तरकीब अमल में लाकर उसे हांसिल कर लेंगें। तुम ओरछा को कैसे फतह किया जाए इसकी योजना बनाकर हमें बताओ।"

"जो हुक्म जहाँपनाह।"- अबुलफजल शंहशाह अकबर की कदमबोशी करके चला गया। उसके चले जाने के बाद अकबर धूर्तता से बुदबुदाया - "काफिर प्रताप हम तुम्हें शिकस्त नहीं दे पाये, तुम्हारी पुत्री - बहन को लौंडी बनाकर मुगल हरम में न ला सके। पर हम जल्द ही ऐसी औरत को काबू में लायेंगे, जो तुम्हारे खानदान से ताल्लुक रखती हो और प्रताप, यही तुम्हारी शिकस्त होगी।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बीकानेर बसाने वाले राव बीका के पुत्र कल्याणमण के ग्यारह पुत्रों में एक थे, पृथ्वीराज। अपने तीन अन्य भाई सुरताण, रायसिंह और रामसिंह के साथ पृथ्वीराज का जन्म, माता भक्तिमति के गर्भ से हुआ था। भक्तिमति अखैराज सोनगरा की पुत्री थी।

राजकुमार पृथ्वीराज के तीन रानियां थी। दो पत्नियां लालदे और चम्पादे जैसलमैर के रावल हरराज की कुमारियाँ थी और तीसरी रानी किरणवती मेवाड़ के प्रतापी प्रताप के भाई शक्तिसिंह की पुत्री थी।

खानवा के मैदान में राणा सांगा की ओर से बाबर से युद्ध करने वाले कल्याणमल को, इसके लिए सजा के तौर पर जब अकबर ने अपने विशाल मुगल लश्कर से उनकी प्रजा में आतंक मचाकर, जिस समय अपने दरबार में अपमानित होकर आने को मजबूर किया तो लगभग उसी समय ओरछा के वारद्वारा में इंद्रजीत की प्रियतमा प्रवीना का जन्म हुआ था।

मुगल शहंशाह अकबर की साम, दाम, दंड, भेद की नीति से विवश होकर कल्याणमल को न केवल अपने पुत्र रायसिंह और पृथ्वीसिंह को मुगल दरबार में रखना पड़ा अपितु अपनी एक पुत्री को भी अकबर के हरम में भेजना पड़ा।

यद्यपि पृथ्वीसिंह मुगल दरबार में अकबर के दरबारी के भांति रहते थे किन्तु उनमें स्वाभिमान अभी बचा हुआ था। वो मुगल सल्तनत के सेवक होने के बाद भी राणा प्रताप की प्रशंसा दरबार में ही कर उठते थे। राणा प्रताप स्वतंत्रता के लिए जो अद्भुत संघर्ष कर रहे थे उससे पृथ्वीसिंह उन्हें समस्त हिन्दुओं का गौरव समझते थे।

एक बार जब कठिनाइयों से तनिक विचलित होकर राणा प्रताप ने अकबर को पत्र लिखा तो पृथ्वीसिंह ने प्रताप को पत्र लिखकर उन्हें उनका स्वाभिमान पुन: स्मरण कराया था। पृथ्वीसिंह एक कुशल योद्धा होने के साथ-साथ योग्य कवि भी थे। उन्होंने प्रताप को पत्र में कविता लिखकर भेजी थी जिसे पढ़कर प्रताप वापस अपने कर्तव्य पथ पर दृढ़ता से चल पाए थे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अकबर पृथ्वीसिंह से इस वजह से बेहद खफा था। वो पृथ्वीसिंह और प्रताप दोनों को नीचा दिखाने के मंसूबे सोचा करता था। एक दिन उसने एक बेहद खूबसूरत हिन्दू रानी की एक झलक देखी और उसे देखते ही कामुकता से भर उठा। उसके गुप्तचरों ने उसे बताया वो हिन्दू औरत बीकानेर के राजा के छोटे भाई पृथ्वीसिंह की पत्नी और मेवाड़ के राणा प्रताप के भाई शक्तिसिंह की पुत्री किरणवती है।

किरणवती की अस्मिता भंग करके अकबर न केवल जिस्मानी सुख हासिल करना चाहता था बल्कि इस तरह वो एक सिसोदिया स्त्री का मान भंग करके प्रताप और पृथ्वीसिंह को भी नीचा दिखा सकता था। अकबर ने किरणवती की अस्मिता भंग करने का फैसला कर लिया। वो हर साल नवरोज, जिसका कि उसने नाम बदल के खुशरोज कर दिया था, के अवसर पर मीणा बाजार लगवाता था। इस मीणा बाजार में सभी दरबारियों की कन्यायों और स्त्रियों का आना अनिवार्य और पुरुषों का आना वर्जित था। केवल अकबर अपने विश्वस्तों के साथ मीना बाजार में भ्रमण करता और जो स्त्री उसे पसंद आ जाती, वो छल, भय से उसकी अस्मिता भंग कर देता।

अकबर ने इस बार के खुशरोज में लगने वाले मीना बाजार में किरणवती को हासिल करने का मंसूबा बनाया था लेकिन उसके इस मनसूबे में सबसे बड़ी बाधा था बीकानेर का राजकुमार और किरणवती का पति पृथ्वीसिंह, जो कि एक महान योद्धा था। उसके रहते अकबर, किरणवती को हासिल करना तो दूर उस पर बुरी नजर भी नहीं डाल सकता था। अपने मंसूबे को पूरा करने के लिए पृथ्वीसिंह को आगरे से दूर भेजना जरुरी था।

अपने दिल की बात अकबर ने अपने करीबी दरबारी अबुलफजल को बताकर, उस से इस्लाह माँगी। अबुलफजल ने पृथ्वीसिंह को अच्छे घोड़ों की खरीद के लिए गुजरात भेजने का मशवरा दिया जो अकबर को अच्छा लगा और उसने वैसा ही किया। आगरा में खुशरोज के जश्न के आयोजन से कुछ दिन पहले जब पृथ्वीसिंह अकबर के हुक्म से

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गुजरात को कूच कर गए तो उसने बेहद संतोष का अनुभव किया। अब वो निर्विघ्न होकर अपना कुत्सित मंसूबा पूरा कर सकता था।

अकबर ने नियत समय पर खुशरोज का आयोजन किया। वास्तव में खुशरोज के अवसर पर खुश केवल अकबर होता था। वो रमणियाँ जिनकी देह की पवित्रता, खुशरोज के जश्न में समाप्त कर दी जाती थी, वो जीवन में कभी भी यथार्थ में खुश नहीं रह पाती थी। एक परपुरुष द्वारा अपने हनन के बाद कोई भी भारतीय स्त्री खुश नहीं रह सकती थी। अकबर ने इस बार खुशरोज के जश्न में सम्मिलित होने के लिए किरणवती को विशेष रूप से आमन्त्रित किया।

स्त्रियां मीणा बाजार में दुकान लगाकर वस्तुओं की बिक्री करती, जिन्हें खरीदने के बहाने अकबर को उनके करीब आने का अवसर मिलता। जब किरणवती को उसकी निजी परिचारिका ने बादशाह की इच्छा की सूचना दी तो किरणवती ने पहले तो मना कर दिया। किन्तु जब दासी ने अकबर के ताकतवर होने की ऊँच-नीच समझाई तो किरणवती ने केवल मेले में घूमने की हामी भरी। उन्होंने मेले में दुकान लगाने से मना कर दिया। नियत समय पर उस राजपूत रमणी ने खुशरोज के मेले में ऐसे प्रवेश किया जैसे चन्द्रमा मेघों का उत्तरीय उतार कर तारों से भरे आकाश में दिखता है। जब अकबर को अबुलफजल ने किरणवती के खुशरोज के मेले में आने की सूचना दी तो उस बादशाह के होठों पर कुटिल और कामुक मुस्कान तैर उठी।

अकबर अबुलफजल को साथ लेकर मीना बाजार में जा पहुँचा। अबुलफजल ने तो कूटनी स्त्री बुलवा रखी थी जो किसी किसी मनसबदार की शहजादी के रूप में खुशरोज के मेले में खरीदारी के लिए मौजूद थी। अबुलफजल ने उन्हें किसी भी प्रकार किरणवती को एकांत ने लाने का काम सौंपा था।

किरणवती ने मेले ले कुछ वस्तुओ को क्रय किया जिन्हे उनकी दासी संभाले हुए थी। जब उन्हें मेले में कोई और आकर्षण नहीं लगा तो वहाँ से जाने को उद्यत हुई। जिस समय किरणवती मेले से निकलने के लिए अपनी

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दासियों को हिदायत दे रही थी तभी वहाँ अबुलफजल की भेजी दोनों कूटनी औरतें नूरी और सलमा आयी और किरणवती को मुजरा कर उन्हें अपना परिचय देते हुए कहा कि वे दिल्ली से आई हैं। किरणवती ने भी उन्हें अपना परिचय दिया। नूरी और सलमा ने किरणवती से कहा कि उन्हें राजपूती पोशाक बहुत पसंद है और वो दोनों चाहती कि बाईसा उनकी मदद करें।

किरणवती ने जब उनकी बात स्वीकार करके राजपूती पोशाकों की दुकान के लिए मेले में इधर-उधर नजर फेरी तो सलमा तपाक से बोली - "बाईसा वो पोशाक पहनकर देखने में कोई दिक्कत न हो इसलिए उसका अलग इंतजाम उधर किया गया है।"

कहकर सलमा ने एक ओर अपना हाथ उठाया तो किरणवती ने देखा एक स्थान को कनातों से घेरा गया था और उसके भीतर शायद वस्त्रों की दुकाने लगी हुई थी।

किरणवती ने पहुँचकर देखा वहाँ गिनती की दो-तीन दुकाने थी और उन दुकानों से तनिक दूर कनातो को घेरकर छोटी-छोटी रावटी बनी थी, जिनमे स्त्रियां ख़रीदे गए वस्त्रों को पहनकर अपने बदन के हिसाब से उनके ठीक होने की पुष्टि लेती थी।

जब नूरी और सलमा किरणवती के परामर्श से वस्त्रों को खरीद चुकी तो उन्होंने एक पोशाक अपनी पसंद की खरीद के उसे तोहफे में किरणवती को देते हुए कहा - "बाईसा वैसे तो हम खूबसूरती और ठाठँ में आपके आगे कुछ भी नहीं फिर भी आपको ये तोहफा देने की हिमाकत कर रहे हैं। आप इसे कबूल करेंगी तो हमें अच्छा लगेगा।"

किरणवती ने न केवल उनका मन रखने के लिए उनका तोहफा ले लिया बल्कि जब नूरी और सलमा ने कहा वो बाईसा को इन वस्त्रों में देखना चाहती है तो एक रावटी में उन वस्त्रों को पहनने के लिए भी चली गई।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

✿✿✿

उस दिन सुबह से ही पृथ्वीसिंह खिन्न थे। जब सवेरे उनकी नींद टूटी थी तो इससे पहले उन्होने सपने में अपनी प्राणप्यारी किरणवती को देखा था। किरणवती शिविका में बैठी अपने महल से शाही महल की और जा रही थी कि अचानक पालकी के भीतर आग लग गई और किरणवतीके वस्त्र जलने लगे। इतना देखने के बड़ा पृथ्वीसिंह का स्वप्न टूट गया और वे व्यथित हो उठे। देखे गए सपने का क्या अर्थ हो सकता है, कहीं कुछ किरणदे के साथ अनिष्ट तो नहीं वाला सोचकर वे व्याकुल हो उठे।

पृथ्वीसिंह इस समय घोड़े खरीद कर आगरा लौट रहे थे और एक ग्राम में विश्राम हेतु पूर्व संध्या से ठहरे हुए थे। कल जब वो इस गाँव आये तो अधिक ध्यान नहीं दिया था। रात्रि को उनके घोड़ों के लिए घास और पानी का इंतजाम हो गया था किन्तु अब इस समय इतने घोड़ों के लिए कुंवे में पानी नहीं था। कुंवे की तलहटी में बस कुछ पानी नजर आ रहा था।

ये एक छोटा सा गांव था जिसमे कुछ घर ही थे। गाँव में केवल एक कुंवा था आसपास कोई नदी भी नहीं थी। सुबह देखे गए स्वपन से व्याकुल पृथ्वीसिंह अब चिंतित भी हो उठे। इतने अश्वों के लिए जल की व्यवस्था कैसे होगी? और ये गाँव के निवासी आज से बिना जल के कैसे जीवन यापन करंगे?

चिंतातुर और व्याकुल पृथ्वीसिंह जब समस्या के हल के लिए अपने साथियो से चर्चा कर रहे थे तभी वहाँ एक किशोरी कुएं पर पानी भरने आयी।

उस कन्या के माथे पर अपूर्व तेज शोभा पा रहा था। उसे कुंवे से पानी भरते देखे पृथ्वीराज ने उसके निकट आकर पूछा - ‘‘देवी क्या यहाँ आस-पास कोई अन्य कुआं या जलाशय है?

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"तो वो बोली नहीं बस यहाँ तो यही एक कुआं है"- फिर उसने हँसते हुए कहा वो कोई देवी नहीं बल्कि राजबाई है।"

पृथ्वीसिंह ने देखा राजबाई ने जो पानी कुएं से खींचा है वो बिलकुल स्वच्छ और निर्मल है, जबकि देखने पर तो कुएं में पानी के स्थान पर मिट्टी का घोल दिखाई देता है।

"क्यों हुकुम, आप दूसरे कुएं और जलाशय के बारे में क्यों पूछ रहे है?"

राजबाई ने पूछा तो पृथ्वीसिंह ने अपनी समस्या बताई जिसे सुनकर वो बोली मै कुंवे से पानी खींचती हूँ उसे आप अपने अश्वों को पिलाये।

उसके बाद तो जो हुआ वो चमत्कार था। राजबाई ने कुंवे से इतना निर्मल और साफ़ पानी निकाला कि वहाँ सभी उपस्थित जन तृप्त हो गए।

पृथ्वीराज राजबाई के चरणों पर गिरकर बोले - "आप देवी है सचमुच में देवी।"

राजबाई हँसकर बोली - "हुकुम हमारे निकट बहुत से देवी-देवता होते हैं, जिन्हे हम पहचान नहीं पाते।"

"अर्थात?"

"अर्थात हुकुम आज सुबह से अपनी रानी को लेकर इसलिए व्याकुल हैं क्योंकि वो नहीं जानते कि आग उनको नहीं जला सकती अपितु उनकी आग से कोई भी भस्म हो सकता है।"

पृथ्वीसिंह ने विस्मित होकर राजबाई को देखते हुए पूछा - "मेरी प्राणप्यारी रानी सा पर कोई संकट तो नहीं, कुछ अनिष्ट तो नहीं होने वाला उनके साथ?"

"संकट तो है किन्तु अनिष्ट नहीं होगा"- राजबाई ने आँख मूंदकर कहा - "हुकुम, आपकी रानी, देवी है, वो आये हुए संकट को टालने में सक्षम है।"

पृथ्वीसिंह विनयपूर्वक उस चारणी देवी राजबाई से बोले - "देवी मैं जानता हूँ आप साक्षात देवी हैं, आपसे मेरी विनती है कि मेरी पत्नी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पर जो भी संकट आया है, उसे दूर करने में उसकी सहायता करे। इसके बदले में आप जो कहेंगी मैं पूरा करने की कोशिश करूँगा।"

राजबाई बोली - "हुकुम, मैं बाईसा का साहस बनकर उनके साथ रहूंगी. आप निश्चिंत होकर जाए, वो आपके स्वागत में हंसती-मुस्कराती मिलेंगी।"

उसके बाद पृथ्वीसिंह ने वहाँ से कूच किया और जाने से पहले उन्होंने राजबाई की इच्छा से गांव में पांच कुएं और एक पोखर खुदवाने की व्यवस्था की।

✲✲✲

रावटी के भीतर जाकर किरणवती दर्पण के सम्मुख खड़ी हो गई। दासी ने रावटी के दरवाजे को कनाट से बंद कर दिया। किरणवती दर्पण के समक्ष खड़ी थी, दासी ने पूछा –"जो बाईसा का हुकुम पाऊँ तो वस्त्रों को पहनाने में मदद करूँ।"

किरणवती कुछ देर विचारपूर्वक मौन रहने के बाद बोली - "न हम ये वस्त्र महल चलकर ही पहनेंगे।"

"किन्तु बाईसा वो नूरी और सलमा आपको इन वस्त्रों में देखने की लालसा में रावटी के बाहर खड़ी, आपके हुक्म की प्रतीक्षा कर रही हैं।"

"उनसे कहो वे हमारे महल में आये, हम उनकी इच्छा वहीँ पूरी करेंगे।"- कहकर किरणवती पलट कर रावटी से बाहर जाने को उद्यत हुई, तभी बगल की रावटी में हलचल हुई, एक जगह से खिड़कीनुमा कनात हटाते हुए अकबर ने वहाँ घुसते हुए निर्लज्जता से कहा - "क्या सुंदरी मेरी भी इच्छा अपने महल में ही पूरी करेंगी?"

बादशाह अकबर को सामने देखकर दासी भय से कांपते हुए उन्हें सलाम बजा एक ओर दुबक गई। परम्परा का निर्वाह करते हुए रानी किरणवती ने बादशाह को प्रणाम किया और फिर पूछा - "मैं जहाँपनाह का आशय नहीं समझी। बादशाह सलामत की कौन सी इच्छा हम पूरी कर

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सकते हैं। बादशाह को तो संसार के सारे ऐश्वर्य, सारे सुख पहले से ही प्राप्त हैं। उन्हें किस बात की आकांक्षा हो सकती है?"

"हाँ, ये सच है कि बादशाह होने के नाते हमें सब जश्ने मसर्रत हासिल हैं लेकिन एक बादशाह होने की नाते ही हमारा इस संसार की हर खुश पर भी पहला हक़ है।"

मुगल बादशाह अकबर की कपटपूर्ण बात का अर्थ मन ही मन समझने का प्रयास करते हुए रानी किरणवती बोली - "बादशाह को ऐश्वर्य के साथ-साथ सामर्थ्य भी प्राप्त है, अतः उन्हें उनकी ख़ुशी प्राप्त करने से कौन रोक सकता है।"

"सच कहा रानी सहिबा, हम चाहें तो पलक झपकते जिसकी इच्छा करे, उसे हांसिल कर सकते हैं लेकिन जो चीज रजामंदी से हासिल होती है, उसकी मसर्रत कई गुना बढ़ जाती है।"

"हम बादशाह सलामत की बात का अर्थ नहीं समझे?"

किरणवती की बात सुनके अकबर डरी-सहमी दासी के पास गया और उसके हाथ में पकड़े वस्त्र लाकर, किरणवती को ऊपर से नीचे देखते हुए बोला - "रानी साहिबा की रजामंदी हो तो हम इन वस्त्रों में उन्हें देख कर उनकी खूबसूरती का लुत्फ़ उठा सकते हैं।"

अकबर की बात का अर्थ समझते हुए किरणवती बोली- "बादशाह सलामत इजाजत दे तो हमें यहाँ से जाना चाहिए। संभवतः बादशाह के अत्यधिक मदिरा सेवन से उन्हें ये भी मालूम नहीं कि उनके सामने कोई उनकी बेगम या रखैल नहीं अपितु मेवाड़ की शक्तावत कन्या खड़ी है।"

कहकर किरणवती रुकी नहीं और रावटी से बाहर जाने लगी।

अकबर ने मदिरा चढ़ी आँखों से जाते हुए किरणवती को देखा। रानी किरणवती के पुष्ट उरोज, क्षीण कटि और स्थूल नितम्बो के संयोग से उनकी चाल अत्यंत मनमोहक हो जाती थी। अकबर ने देखा, उसके कुटिल हृदय और आँखों में काम और हवस और बढ़ गई। उस

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कामपिपासु तुरुक अकबर ने आगे बढ़कर किरणवती का हाथ पकड़ लिया।

किरणवती ने पलट कर न केवल अकबर को आग्नेय नेत्रों से घूरा अपितु उस राजपूतानी ने झटका देकर अकबर की पकड़ से अपना हाथ भी छुड़ा लिया।

अकबर किरणवती को पकड़ने के लिए थोड़ा आगे बढ़ते हुए कहा - "अगर रानी साहिबा चाहेंगी तो उन्हें बादशाह की ओर से, उनकी सभी बेगमों से ज्यादा सुख-सुविधा मुहैया करा दिए जाएंगे।"

रानी किरणवती पीछे हटते हुए बोली - "हमें किसी सुख सुविधा की आवश्यकता नहीं, बादशाह सलामत अपनी मर्यादा न भूले। ध्यान रहे मैं विवाहित क्षत्राणी हूँ।"

"मुझे मालुम है, आप शादीशुदा हैं और बेहद खूबसूरत भी। लेकिन हम बादशाह है और हर खूबसूरत चीज पर हमारा हक़ है। हम उसे हासिल कर सकते है। रजामंदी से या फिर जबरन।"

कहकर अकबर किरणवती की और झपटा, किरणवती अकबर के किसी ऐसे घात से सावधान थी। उन्होंने पैतरां बदलकर अकबर को तीव्र धक्का दिया, वो लड़खड़ा कर एक तरफ गिरा। रानी किरणवती ने अपनी कमर में खुसी गुप्त कटार निकाली और क्षण के सौवें हिस्से से भी कम समय में अकबर के सीने पर चढ़कर उसकी गर्दन पर कटार रखते हुए बोली - "बादशाह सलामत मैं कोई 'वस्तु' नहीं जिसे कोई हासिल कर लो। मैं मेवाड़ की शक्तावत कन्या हूँ। तुम जैसे दस-पांच को तो खेल की तरह धूल चटा दूँ।"

इस समय रानी किरणवती किसी शक्ति देवी की तरह प्रतीत हो रही थी। उन्हें स्वयं भी अपने भीतर असीम और अद्भुत शक्ति का अनुभव हो रहा था। ये शक्ति निश्चय ही चारणी राजबाई की कृपा का फल था।

अकबर किरणवती के रौद्ररूप को देखकर डरा-सहमा भूमिसात था और रानी किरणवती, रणचंडी की भांति उस पर सवार, उससे कह रही थी - "ले अभी तेरा गला रेत देती हूँ।"

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"मुझे मुआफ़ करें रानी साहिबा,"- अकबर भय से बोला - "आईन्दा, मैं कभी भी आप पर बुरी नजर नहीं डालूंगा। वादा करता हूँ।"

"ये ख़ुशरोज में फिर कभी मीना बाजार लगवायेगा?"- किरणवती ने अकबर की गर्दन पर कटार का दबाव बढ़ाते हुए पूछा। अकबर की गर्दन से रक्त की कुछ बूंदे छलछला उठी और पीड़ा से उसकी आँखों में अश्क रवां हो उठे।

"अब कभी मीना बाजार नहीं लगेगा। बस आप हमें माफ़ कर दे।"- अकबर ने ऐसा कहते हुए अपने हाथ किरणवती के सामने जोड़े।

किरणवती कुछ देर अकबर को कठोर निगाहों से देखती रही और फिर उसके ऊपर से उठकर, अपनी कमर में कटार खोसकर सिंहनी की भांति रावटी से बाहर निकली। अपनी बाईसा की वीरता और हिम्मत देखकर गर्वित होती हुई दासी भी उनके पीछे-पीछे चली।

अकबर अपनी गिरी हुई मानसिकता की तरह बहुत देर तक भूमि पर गिरा हुआ पड़ा रहा।

***

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gr

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रुक्मणि कुंवरि का षड्यंत्र

इंद्रजीत के महल की अटारी से राय प्रवीना के महल का आँगन साफ़-साफ़ दिखाई पड़ता था। कभी-कभी कार्य की व्यस्तता के चलते जब प्रवीना का सामीप्य प्राप्त नहीं कर पाते तो थोड़ा सा समय निकाल के वो प्रवीना की छवि निहार लेते।

एक आकर्षक और शक्तिशाली देह का नवयुवक, इंद्रजीत की अटारी से राय प्रवीना के आँगन में मंत्रमुग्ध होकर देख रहा था।

राय प्रवीना कुछ बालक-बालिकाओं को नाट्यमंचन का प्रशिक्षण दे रही थी।

प्रवीना के निर्देशन में कुछ बालक मुगल सैनिकों के वेश में थे तो कुछ बुंदेली पोशाक में। उन सबके हाथों में उनकी अवस्था के अनुसार कटार, तीर कमान, भाले आदि अस्त्र-शस्त्र थे। मुगलिया लश्कर आगे बढ़ते हुए बुंदेली लश्कर में, युद्ध का अभिनय करते हुए, घुसने का प्रयास करते हैं। उनके आक्रमण के वेग से बुंदेली अव्यवस्थित होकर थोड़ा पीछे हटते हैं। अचानक बुंदेली सेना में एक सैनिक प्रकट होता है। वीरसिंह उसे देखकर चौंक पड़ते हैं। वो बिल्कुल वीरसिंह की तरह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वेशभूषा में है। वैसे ही वस्त्र, पाग, पादुका, हाथ में तलवार पकड़ने का तरीका।

जे बुंदेलखंड, जे ओरछा, हर हर महादेव का जयघोष करता हुआ वो मुगल लश्कर पर टूट पड़ता है। उसे यूँ मुगल वाहिनी में धंसता देखकर बाकि सभी बुंदेली - भाग मुराद, भाग सादिक खां कहते हुए मुगलों पर टूटते हैं। मुगल सेना के पांव उखड़ने लगते हैं।

"क्या देख रहे हो वीर?"

वीरसिंह ने देखा, इंद्रजीत वहाँ आकर खड़े हो गये थे।

"भैय्या इंद्रजीत, क्या हम इस कदर प्रसिद्ध हो गए हैं कि हमें नायक बनाकर नाट्यमंचन किया जाए।"

इंद्रजीत ने वीरसिंह की बात सुनी। प्रवीना के आँगन में देखा। वीरसिंह के वेश में बालक अब तक मुगल लश्कर को धूल में मिला चुका था।

"वीरसिंह, किस्सों-कथाओं, नाटक-रंगमंच में उन्हें ही नायक बनाया जाता है जो या तो प्रसिद्ध हो चुके होते है या जो भविष्य में प्रसिद्ध होने वाले होते हैं।"

इंद्रजीत की बात सुनकर वीरसिंह उन्हें विचारमग्न देखने के बाद बोले "जो प्रसिद्ध हो चुका हो वो तो ठीक है किन्तु कौन प्रसिद्ध होने वाला है, ये कैसे ज्ञात हो सकता है?"

"देवी प्रवीना केवल नृत्य, गायन, वादन और काव्यकला में ही प्रवीन नहीं है, अपितु उन्हें अन्य कई कलाये भी आती है। इनमें से एक कला ये भी है।"

इंद्रजीत ने सगर्व कहा तो वीरसिंह पुन: प्रवीना को देखने लगे।

प्रवीना को देखते हुए इंद्रजीत ने देखा, बोले - वीरसिंह चलो तुम्हारी भेंट कराते हैं देवी से।

कुँवर इंद्रजीत और वीरसिंह को आते देख, प्रवीना ने बच्चों को नाट्य मंचन समापन का संकेत कर, इंद्रजीत और वीरसिंह की अगवानी करने लगी। प्रवीना की वीरसिंह से ये पहली भेंट थी। उन्होंने वीरसिंह के चित्र देखे थे इसलिए वो उन्हें सरलता से पहचान गई थी।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वीरसिंह ने प्रवीना के पाँव छूने के बाद पूछा - "भाभी आपने तो हमें नायक बना दिया।

"तो क्या कुंवर वीर सिंह स्वयं को नायक नहीं मानते।"- प्रवीना ने पति और देवर को आसन पर बिठाकर दासी को जलपान लाने का निर्देश देकर कहा।

"भाभी अब तक हमने ऐसा कोई वीरोचित कार्य तो नहीं किया जो स्वयं को नायक समझूँ?"

"कुँवर आपने जो पराक्रम अकबर की भेजी सेना, जिसका नेतृत्व सादिक कर रहा था, के विरुद्ध दिखाया था, वो अद्भुत था और फिर पूत के पाँव तो पालने में ही नज़र आने लगते हैं।"

वीरसिंह ने सुना। गर्वित हुए। कहा - "भाभी उस युद्ध में तो वास्तविक पराक्रम भैय्या रामशाह और होरलदेव ने दिखाया था। भैय्या होरलदेव तो ओरछा की आन पर वीरगति को प्राप्त होकर स्वर्गगमन कर गए थे।"

"हाँ उस युद्ध में कुँवर रामशाह और होरलदेव ने बड़ी वीरता प्रदर्शित की"- दासी कलेवा ले आयी थी। प्रवीना कलेवा के पात्र इंद्रजीत और वीरसिंह को देते हुए बोली - "कुँवर वीरसिंह, किन्तु देव की इच्छा मुझे ये लगती है, आप ही वो वीर हो, जो बुंदेली गौरव महारानी दुर्गावती के पराक्रम की परम्परा का निर्वाह करते हुए, तुरुक अकबर को बुंदेलखंड की शक्ति का परिचय देंगे।"

प्रवीना की बात सुनकर, वीरसिंह को दोहरा गर्व हुआ। उनके हृदय में, अकबर को बार-बार पराजित करने वाली, महारानी दुर्गावती की ओजस्वी छवि कौंधी। देह गर्व से भर उठा। वीरसिंह ने सामने बैठी प्रवीना को देखा, उनके गुणों को जान गर्व हुआ। वे न केवल गायन-वादन में निपुण है, अपितु वे महारानी दुर्गावती के प्रेरणादायी जीवन को न केवल स्मरण करती हैं, बल्कि उससे जनो में हौसला भी भरती हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वीरसिंह ने वचन दिया कि वो सदैव प्रयासरत रहेंगे, जो आशा उनमें भाभी प्रवीना को दिखाई पड़ी है उसे पूरा करने में वे कोई कोर कसर न उठा रखेंगे। उन्होंने प्रवीना से प्रभावित होते हुए कहा - "वे अपने एक पुत्र का नाम प्रवीण राय रखेंगे।"- प्रवीना ने सुना, प्रसन्न और आह्लादित हुई।

कुछ समय अन्य विषयों पर चर्चा करने के बाद वीरसिंह ने जाने की अनुमति माँगी। इंद्रजीत ने जाने से पहले वीरसिंह से एक परामर्श माँगा। देवी प्रवीना के लिए एक विशेष महल का निर्माण करवाने की अभिलाषा बहुत दिनों से हृदय में रखे हुए थे,जिसे आज उन्होंने प्रकट कर दिया।

वीरसिंह ने इंद्रजीत के प्रस्ताव का समर्थन किया। और उसी समय राय प्रवीना के निवास के लिए एक त्रिखंडा महल बनाये जाने की रूपरेखा निर्मित हुई।

राय प्रवीना ने इंद्रजीत के प्रस्ताव को सुना, इंद्रजीत के प्रेम और अपने भाग्य पर गर्वित हुई। वीरसिंह का अनुमोदन बड़ा भला लगा।

वीरसिंह, इंद्रजीत और प्रवीना को प्रणाम करके चले गए। प्रवीना और इंद्रजीत ने प्रेमिल आँखों से एक-दूसरे को देखा। कुछ देर में ही प्रेम उनके हृदय और देह दोनों को मद्धिम-मद्धिम सहला रहा था।

☼☼☼

मेवाड़ के गौरव महान प्रताप द्वारा एक-एक कर गढ़ वापस छीन लिए जाने, बीकानेर के राजकुमार की पत्नी किरणवती की वीरता और पराक्रम के कारण उन्हें हासिल न कर पाने से आहत अकबर ने ओरछा को फतह करने के लिए पूरी ताकत झोंक दी।

उसने एक के बाद एक ओरछा पर दो शक्तिशाली हमले किये।

पहले उसने अब्दुल्ला खां और आसकरण की सरपरस्ती में एक लश्कर भेजा। रामशाह, इंद्रजीत, वीरसिंह और रत्नसिंह आदि राजकुमारों ने अपनी भूमि की रक्षा के लिए प्राण प्रण से युद्ध किया। आचार्य केशव ने

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अब तक प्रवीना को युद्धकला की शिक्षा देना आरम्भ कर दिया था। उन्होंने समय-समय पर इंद्रजीत और वीरसिंह को उचित परामर्श दिया, अपितु कभी-कभी तो वो युद्धभूमि में भी पहुँच गई। वीणा बजाने वाले हाथो में तलवार देखकर ऐसा प्रतीत हुआ जैसा महारानी दुर्गावती अवतार लेकर फिर से धरती पर आ गई हो।

ओरछा के रणबांकुरों के अप्रतिम युद्धकौशल से इस बार भी माँ रणचंडी ने विजय तिलक उनके भाल पर सुशोभित किया।

एक और पराजय से अकबर आग बबूला हो उठा। किसी भी कीमत पर वो ओरछा को फतह करने का मंसूबा रखता था। दो वर्ष बाद उसने अपने पुत्र शहजादे मुराद को एक विशाल लश्कर देकर ओरछा को काबू में करने के लिए भेजा। शहजादे मुराद के साथ मालवा का मुगल सूबेदार राज भी साथ था। मुराद ने अब से कोई सात साल पहले भी ओरछा पर हुए हमले में मुगल सेना का नेतृत्व किया था जिसका महाराज मधुकर शाह ने वीरतापूर्वक निषेध किया था। शहजादा मुराद इस बार अपनी पूर्व पराजय का बदला लेने का भी इरादा रखता था।

शहजादा मुराद विशाल लश्कर के मद में ओरछा में धंसता चला आया। ओरछा के वीर अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना सर्वोच्च्च बलिदान देने के लिए सज्ज हो उठे। यद्यपि ओरछा के सैनिक संसार के सर्वाधिक बहादुर सैनिको में से थे किन्तु अंत्यल्प साधन वाले ओरछा को साधन सम्पन्न मुगल साम्रज्य से सतत टकराना दुष्कर कार्य था। विवश होकर ओरछा को मुगलों से संधि करनी पड़ी। संधि की शर्तों के अनुसार ओरछा के एक भूमि खंड पर मुगलों का अधिकार स्थापित हो गया।

भग्न हृदय महाराज मधुकर शाह परलोकगमन कर गए। उनके स्थान पर राजा बने रामशाह को अकबर की सेवा में, उनके दरबार में रहने को बाध्य किया गया। ओरछा की देखरेख इन्द्रजीत और वीरसिंह करने लगे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रुक्मणि कुंवरि का षडयंत्र

मुराद को ओरछा से गए कुछ महीने व्यतीत हो गए। राय प्रवीना कुँवर इंद्रजीत के साथ मुगलों द्वारा सताई गई प्रजा के बीच आयी। मुगलों ने गाँव के गाँव उजाड़ दिए थे। फसलों में आग लगा दी थी। कुंवो और नदियों में शवों को डालकर जल को दूषित कर दिया। मुगल हमले से बचे हुए जन वन कंदराओं में जा छुपे थे। जब उन्हें पता चल मुगल लौट गए और ओरछा के महाराज उनके पुनर्वास की व्यवस्था कर रहे है तो वे ग्रामों में वापस लौट पड़े।

प्रवीना उनके दुःख देख कर द्रवित हुई। वे नदियों और कुंवों को स्वच्छ कराने में जुट गई। शीघ्र ही नदी और कुंवो का पानी पीने योग्य हो गया। लोग नदियों में मछली पालन करने लगे। प्रवीना के परामर्श से इंद्रजीत और वीरसिंह ने फसलों के लिए बीज उपलब्ध करवाए। कृषक कृषि कार्य में संग्लग्न हो गये। पशुओं के लिए चारे की व्यवस्था होने से पशु भी पहले की भांति हष्ट-पुष्ट होने लगे। दुधारू पशुओं के थनो से दोष मुक्त दुग्ध बहने लगा।

प्रजा ने राजकुमारों की जयकार की। साथ में राय प्रवीना की जय का भी निनाद गूंजा।

प्रवीना की ख्याति मुगल दरबार में अकबर तक पहुँची तो ओरछा के महल में भी उनके गुणों की चर्चा होने लगी। जहाँ बहुत से लोग प्रवीना के गुणों से अभिभूत हो उन्हें सम्मान देने लगे वही कुछ लोग इनकी प्रसिद्धि से ईर्ष्या भी करने लगे।

रुकमणी कुंवरि को प्रवीना का सम्मान और प्रसिद्धि बिल्कुल न सुहाई और वे उन्हें नीचा दिखाने के षड्यंत्र करने लगी।

रुकमणी कुंवरि, कुँवर इंद्रजीत की पत्नी थी वे न केवल प्रवीना के गुणों से जलती थी अपितु उन्हें प्रवीना का अपने पति इंद्रजीत के सामीप्य से भी डाह होता। रुक्मणि कुंवरि की दृष्टि में प्रवीना एक पातुर थी और एक पातुर किसी रानी और पत्नी की भांति उनके पति के साथ रहें ये उन्हें फूटी आँख नहीं सुहाता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

✿✿✿

"क्यों री मैना, तूँ ये कक्ष क्यों झाड़-बुहार रही है। उस अकबर और प्रवीना के कारण कुँवर जू को न तो हमारा स्मरण होता है और न हमारे महल का। कुँवर एक से युद्ध और दूसरी से प्रेम में लिप्त रहते है, उन्हें तो शायद ये भी याद नहीं कि रुक्मणि नाम की कोई उनकी रानी भी है। महारानी रुक्मणि कुंवरि ने कक्ष संवारती, अपनी व्यक्तिगत दासी मैना को टोका।

शैय्या सज्ज कर रही मैना हाथ में पकड़ी रंगीन बिछावन को तह करते हुए बोली - "महरानी! राजे-राव की तो बहुत सी पत्नियाँ और रखैल होती हैं। कुँवर जू की भी हैं। किन्तु उनमें महारानी एक ही होती है, वो आप हैं। सो आपको तो इस बात पर गर्व करना चाहिए।"

"जिस स्त्री का पति कई-कई मास उसके समीप न आता हो, वो स्त्री चाहें महारानी हो या फिर साधारण, उसका हृदय, पति के वियोग से, सदैव संताप से भरा रहता है।"- एक आसन पर धम्म से बैठकर, रुक्मणि कुंवरि, कातर स्वर में बोली - "मैना तूँ क्या जाने मेरे हृदय की गति, मेरे कुँवर जो मुगल बादशाह और पातुर प्रवीना के फेर में पढ़कर मेरे आलिंद का फेरा डालना ही भूल बैठें हैं।"

मैना ने महारानी की बात सुनी, कुछ देर विचार किया और फिर रुक्मणि कुंवरि के पाँव के निकट बैठते हुए बोली - "महारानी जब जंगल में चलते समय कोई काँटा पैर में चुभकर पीड़ा पहुँचता है तो हम दूसरे कांटे से पाँव का काँटा निकालते हैं।"

"देख मैना, मुझ से इस समय पहेली मत बूझ, जा जाकर कोई अन्य कार्य कर।"

"महारानी मैं कोई पहेली नहीं कह रही"- मैना, रुक्मणि कुंवरि के हौले-हौले पाँव दबाते हुए बोली - "मैं तो ये कह रही हूँ कि यदि आप

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चाहें तो कुँवर जू नित्य प्रति अपने चरणों से इस महल को पवित्र कर सकते हैं।"

"एक तरफ सबसे ज्यादा ताकतवर बादशाह की तलवार और दूसरी और संसार की सर्वाधिक सुंदर औरत के केशों के फंदे। मैं भला कैसे उनसे कुँवर जू को स्वतंत्र करा सकती हूँ। आज का दिवस क्या तूने पहेलियाँ और परिहास करने के लिए ही चुना है?"- रुक्मणि कुंवरि ने मैना को बरजा।

"महारानी सा, मैं न कोई पहेली बुझा रही हूँ और न ही परिहास कर रही हूँ। मैं तो केवल इतना कह रही हूँ कि अगर संसार के सर्वाधिक शक्तिशाली बादशाह और सबसे ज्यादा सुन्दर स्त्री को एक-दूसरे के फेरें में डाल दिया जाए तो कुँवर न केवल उनके फेरों से बच जाएंगे बल्कि उनके फेरे इस महल में भी लगने लगेगें।"

रुकमणी कुंवरि ने मैना की बात सुनी, समझी। उन्हें अब मैना की बात और उसका हौले-हौले पाँव का दबाना दोनों भला लगने लगा।

"मैना तूँ जल्द से जल्द कोई प्रबंध कर जिससे ये भाग्य और मार्ग का काँटा, पातुर प्रवीना, मुगल हरम में चली जाये।"

"प्रबंध क्या करना महारानी, हमें बस अकबर तक प्रवीना के सौंदर्य और कला की सूचना भेजनी है। रूपवती औरतों का रसिया अकबर, प्रवीना को पाने की लालसा में उसे किसी भी मूल्य पर अपने हरम बुला लेगा और एक कांटे से दूसरा काँटा निकल जाएगा।"

"चल चल समझ गई तेरी पहेली का अर्थ अब ये बता शहंशाह अकबर तक सूचना कैसे भिजवाई जाए?"

"महारानी को शहंशाह अकबर को सूचना थोड़े ही भिजवानी है।"

"फिर?"

"सूचना तो आगरा में रह रहे महाराज रामशाह को भिजवानी है।"

"जेठ इसके लिए क्योंकर मानेगें?"

"पत्र में ये भी लिखा जाये कि प्रवीना, कुँवर इंद्रजीत और वीरसिंह को महाराज रामशाह के विरुद्ध भड़काती है।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रुक्मणि कुंवरि को योजना जंची किंतु फिर भी उन्होंने संशय प्रकट किया - "यदि जेठ न माने?"

"कामसेना मना लेगी।"

"वो भला क्यों?"

"क्योंकि पातुर भी औरत होती हैं और औरत सदा ही एक-दूसरे की प्रसिद्धि से डाह रखती हैं।"

रुक्मणि कुंवरि ने मैना की 'औरत से औरत की डाह' वाली बात समझी और उसे लाल आँखों से घूरा। मैना ने भी रुक्मणि कुंवरि की लाल आँखों का अर्थ समझा और बोली - "पत्नी को अपने पति की दूसरी स्त्री से स्वतंत्र कराने को डाह नहीं कहा जाता।"

"तनिक यहाँ जांघों को भी दबा ना।"- मैना की बात सुनकर रुक्मणि कुंवरि ने प्रसन्न वदन अपनी दोनों टांगें फैलाकर कहा।

***

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शाही फरमान

रुक्मणि कुंवरि का मायका आगरा के पास एक गाँव में था। उस गाँव का एक स्वर्णकार वणिज के काम से आया तो उन्होंने उसे एक पत्र अपने पिता को ये लिखकर भिजवा दिया - इसके साथ का पत्र महाराज रामशाह को भिजवा दिया जाए। पत्र के साथ एक पत्र जेठ रामशाह के लिए भी था।

रुक्मणि कुंवरि के मायके का एक पुरोहित आगरा में महाराज रामशाह के महल में पूजा-पाठ को जाता रहता था। रुक्मणि कुंवरि के पिता ने अपनी पुत्री का पत्र, उस पुरोहित के हाथों, महाराज रामशाह तक पहुँचवा दिया।

अनुज इंद्रजीत की पत्नी महारानी रुक्मणि कुंवरि का पत्र पढ़कर, महाराज रामशाह क्रोधित अवश्य हुए पर वे क्रोधवश राय प्रवीना का कोई अहित नहीं करना चाहते थे। किन्तु रुक्मणि कुंवरि द्वारा की गई प्रार्थना पर भी विचार करना आवश्यक था। एक नर्तकी के द्वारा राज्य की हानि भी नही होनी चाहिये। रामशाह दुविधा में पड़ गए।

पातुर कामसेना के साथ अन्तरंग पल बिताने के बाद जब राजा रामशाह अपनी इसी दुविधा में डूबे हुए थे तो कामसेना ने उनसे उनकी चिन्ता की वजह पूछी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राजा रामशाह का कामसेना पर अगाध विश्वास था। वे उसे अपनी प्रेयसी की तरह ही सम्मान देते थे। उन्होने कामसेना को पूरा मुआमला बता दिया।

कामसेना एक चतुर स्त्री थी।

मन ही मन वो प्रवीना से जलन का भाव रखती थी। मुग़ल बादशाह के हरम की एकनिष्ठ नर्तकी बनने से प्रवीना के गुणों और सम्मान का ह्रास हो जाना तय था।

कामसेना भी यही चाहती थी कि प्रवीना अकबर के हरम में जाये, किन्तु यदि वो अपनी ये इच्छा सीधे प्रकट कर देती तो सम्भवत रामशाह को अच्छी न लगती और वे इंकार कर देते। इसलिए कामसेना ने अपनी बात बड़ी चतुराई से कही।

कामसेना चतुराई से बोली - "राय प्रवीना न केवल कुशल संगीतज्ञ और नर्तकी हैं, अपितु पारंगत कवियत्री भी हैं। वे अवश्य ही अपनी बुद्धिमता से यहाँ आकर सुरक्षित निकल जाएँगी। इससे कुछ दिनों के लिए कुँवर इंद्रजीत उनके कुचक्रों से बचकर महारानी रुक्मणि कुंवरि के समीप जायेंगे और प्रवीना की भी कोई हानि नहीं होगी।"

महाराज रामशाह को कामसेना का प्रस्ताव अच्छा लगा। बादशाह अकबर द्वारा प्रवीना को बुलवाने का कार्य कैसे करना है, इसकी जिम्मेदारी उन्होने कामसेना को ही दे दी।

अकबर के दरबार में एक शाही सितारवादक था। नाम था नियामत खां।

नियामत खां कभी-कभी कामसेना के नृत्य के साथ सितार की जुगलबंदी करता था।

एक दिन नियामत खान और कामसेना दोनों साथ मे अपनी-अपनी कला का रियाज कर रहे थे। रियाज की समाप्ति पर नियामत खान कामसेना के नृत्य की तारीफ़ करके, उनकी तरफ इस उम्मीद में बहुत देर देखता रहा कि कामसेना उसके सितार वादन की भी तारीफ़ करेगी।

जब कामसेना नियामत खान के सितार बजाने की प्रशंसा मे दो शब्द तक न बोली तो उसने खुद आगे होकर पूछा - "शायद मोहतरमा को खाकसार का सितार बजाना रास नहीं आया?"

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"न न ऐसी बात नहीं खान साहेब, आपने बहुत अच्छा सितार वादन किया किन्तु...।"- कामसेना ने कुछ सोचने का अभिनय करते हुए अपनी बात अधूरी छोड़ दी।

"किन्तु, किन्तु क्या?"- नियामत खान ने आतुरता से पूछा।

आपके सितार वादन से ना जाने क्यों वो रस नहीं मिलता जो उसके वीणा वादन से मिलता है खां साहेब।"

"मोहतरमा, कौन, वो कौन है, जो हमसे बेहतर वीणा वादन करता है?"

"करता नहीं, करती है, खां साहेब।"

"ये तो और भी हैरत की बात है। जरा हम भी तो जाने, कौन हैं वो खातून?"

"वो केवल वीणा बजाती ही नही बल्कि नये-नये रागों का सृजन भी करती हैं।"

"अच्छा... उनका नाम और मुकाम तो कहो।"

"प्रवीना...ओरछा की राय प्रवीना।"

नियामत खान ने दो-तीन बार प्रवीना का नाम होठों पर किसी आयत की तरह बुदबुदाया और फ़िर कामसेना से पूछा - "क्या उनके किसी बनाये हुए राग की मालुमात हो सकती हे?"

"जी जरूर।"- कामसेना मुस्काते हुए बोली। उनका तीर सही निशाने पर लग चुका था।

✿✿✿

"वाह...वाह सुभान अल्लाह। नियामत खां जी, आपने कितनी नफासत और खूबसूरती से सितार को छेड़कर राग निकाला है। सच कहूं तो इससे पहले आपकी वीणा वादन में आज जितना लुत्फ़ कभी हासिल नहीं हुआ।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बादशाह अकबर की बात का अनुमोदन करते हुए वहाँ मौजूद अबुलफजल, टोडरमल और तानसेन आदि दरबारियों ने भी नियामत खां के वीणा बजाने की प्रशंसा की। नियामत खां ने उठकर अकबर को सलाम बजाकर बाअदब कहा - "जहाँपनाह, आपने सही पहचाना आज से पहले मेरे सितार वादन में ये लुत्फ़ नहीं था। जहाँपनाह, सच तो ये है जो राग आज मैने बजाया है, वो मेरा नहीं है।"

"तुम्हारा नहीं है...फिर किसका है?"- बादशाह के भीतर इतना सुन्दर राग रचने वाले को जानने की उत्सुकता जाग चुकी थी।

"हुजूर इस राग को रचा है, ओरछा की नृत्यांगना और वीणावादक राय प्रवीना ने।"

नियामत खां की बात सुनकर अकबर ने विचार पूर्ण मुद्रा में अबुलफजल की ओर देखा तो अबुलफजल बादशाह का आशय समझते हुए कहा - "जहाँपनाह ठीक समझ रहें ये वही नर्तकी है जिसने ओरछा को फतह करने वाली हमारी आखिरी मुहीम में कभी-कभी जंग के मैदान में पहुँच कर वहाँ के शहजादों का हौसला बुलंद किया था।"

"हूँ...।"- अकबर धीरे से हुंकार जैसी भरकर खामोश हो गया।

नियामत खां बादशाह अकबर से कोई जवाब न पाकर बोला - "ऐसी बला की खूबसूरत और गायन, वादन, नृत्य में निपुण औरत तो हुजूर के दरबार की जीनत होनी चाहिए।"

अकबर ने सुना। एक नजर नियामत खां को देखा। बोला कुछ नहीं, बस महफ़िल से उठकर अपने निजी हुजरे में आ गया। उसने प्रवीना के बारे में पहले भी सुन रखा था। उसकी यक्ता खूबसूरती और फनों की महारत ने उसके प्रौढ़ शरीर में काम पिपासा की हूक भरी थी। आज फिर महफ़िल में प्रवीना का तजकरा सुनकर उसकी कामेच्छा बढ़ने लगी। वो अनिन्द सुंदरी प्रवीना को देखने और हासिल करने को लालायित हो उठा। उसके हवस पर प्रवीना ही प्रवीना ही छाई थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अकबर अपने भीतर जब प्रवीना को सोच-सोच कर बहुत ज्यादा बैचेनी महसूस करने लगा तो उसने एक गुलाम को अबुलफजल को बुला लाने को कहा।

अबुलफजल बादशाह के हुजूरे में पहुँचकर रस्मी सलाम कर के, उसके हुक्म के इन्तजार में खड़ा हो गया।

"अबुलफजल यूँ खामोश खड़े मत रहो, प्रवीना की तफ्सील बयाँ करो।"

"जहाँपनाह! जैसा कि नियामत खां ने कहा, प्रवीना आज के वक्त में हिन्दुस्तान की सबसे ज्यादा खूबसूरत रक्कासा है। वो गाने और वीणा बाजाने के फन में पारंगत है। ओरछा के महाकवि आचार्य केशव से उसने काव्यकला की तालीम ली है। उसके जंग के हुनर के बारे में तो हुजूर को पहले से ही मालुम है।"

"उसे मुगल लश्कर के खिलाफ तलवार उठाने की वजह से मुआफी के तौर पर हमारी महफ़िल में रक्स कर के हमारी दिलजोई करनी चाहिये।"

"मुआफ़ करें हुजूर, प्रवीना महफ़िल में रक्स नहीं करती।"

"तवायफ होकर महफ़िल में रक्स नहीं करती?"

"जहाँपनाह! प्रवीना ओरछा के शहजादे इंद्रजीत की निजी नर्तकी हैं, उनके अलावा वो किसी के सामने नहीं नाचती। इंद्रजीत और प्रवीना की आपस में बहुत मुहब्बत है। दोनों बीबी और शौहर के मानिंद रहते हैं।"

"हूँ...तो ये बात है। अबुलफजल।"

"जी जहाँपनाह, हुक्म फ़रमाइये।"

"इंद्रजीत को शाही फरमान भेजो कि वो प्रवीना को मुगल दरबार, आगरा में जल्द से जल्द भेजने का इंतजाम करें।"

"जी जिल्लेइलाही, आपके हुक्म की तामील होगी। प्रवीना बहुत जल्दी आपके रूबरू होगी। आप उसकी खूबसूरती और फनकारी का लुत्फ़ लेंगे। और यदि हुजूर ने चाहा तो...।"

"बात मुकम्मल करो अबुलफजल, तुम अच्छे से जानते हो हमें अधूरी बात कितनी नापसंद है।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"यदि हुजूर ने चाहा तो किरणवती को हासिल न कर पाने का दाग प्रवीना को अपनी लौंडी बनाकर धो सकते हैं। मैं दावे के साथ कह सकता हूँ, प्रवीना हुस्न और लज्जत के मामले में रानी किरणवती से इक्कीस ही होगी।"

"अबुलफजल, अब और ज्यादा उसकी बात करने में वक़्त ख़राब मत करो, जाओ, जल्द से जल्द उसे आगरा लाने का इंतजाम करो।"

अबुलफजल अकबर की कुचेष्टा पूरी करने के लिए वहाँ से जा चुका था और अकबर हवस पर तारी प्रवीना को हासिल करने के ख्वाब देखते हुए बेकरारी के आलम में टहलने लगा।

✡✡✡

"अबुलफजल, हमने तो सोचा था कि आप स्वयं ओरछा पधारें हैं तो अवश्य ही कुछ नीतिगत परियोजनाओं पर बात करेंगे। किन्तु आप...।"- कुँवर इंद्रजीत इस समय क्रोध पर किसी प्रकार नियंत्रण रखकर बोल रहे थे। हालाँकि क्रोध नियंत्रण के बाद भी उनके नथुने तीव्र गति से फूल-पिचक रहे थे।

"सारे हिंदुस्तान में बादशाह अकबर को न कहने वाला कोई नहीं शहजादे इंद्रजीत। हमें आपके भले की कह रहे हैं, प्रवीना को शाही दरबार में शहंशाह के सम्मान में भिजवा दीजिये। इससे बादशाह आपसे खुश रहेंगे, जागीर मनसब मिलेंगे। और प्रवीना के फ़न की असल कद्र बादशाह सलामत ही कर सकते हैं। आपको तो बादशाह के प्रस्ताव से खुश होना चाहिए था। आपके कई बंधू-बान्धवों ने तो बादशाह की कृपा हासिल करने के लिए, अपनी बहन-बेटियों को समर्पित कर चुके हैं और एक आप हैं कि एक तवयाफ के लिए इतना सोच विचार कर रहे हैं।"

"अबुलफजल..."- कुँवर इंद्रजीत दहाड़े - "राय प्रवीना हमारी पत्नी हैं, उनके बारे में कोई भी असभ्यतापूर्ण बात उनका अपमान माना जायेगा। और

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्मरण रहे कि इस समय आप राय प्रवीना के राज्य ओरछा की धरती पर बैठे हैं।"

"राजकुमार इंद्रजीत, हमें सब याद है, हम कहाँ बैठे हैं, क्या कर रहे हैं और क्या कह रहे हैं किन्तु आपको शायद याद नहीं कि अगर आपने प्रवीना को जहाँपनाह की सेवा में नहीं भेजा तो ये मुगलिया सल्तनत का अपमान होगा। और ये पूरा हिंदुस्तान जानता है कि मुगल सल्तनत का अपमान करने वाला का क्या हश्र होता है।"

"हम क्षत्रिय हैं अबुलफजल जी, धमकियां हम पर प्रभाव नहीं छोड़ती इसलिए हमें बादशाही का रुतबा दिखाकर भयभीत करने का प्रयास निरर्थक होगा।"

"कुँवर इंद्रजीत, मैं आपको एक बार फिर याद दिला देना चाहता हूँ कि प्रवीना को मुगल दरबार में बुलवाने के लिए शहंशाह ने सन्देश नहीं भेजा है बल्कि ये उनका हुक्म है, फरमान है। बादशाह की नाफ़रमानी से कहीं ऐसा न हो कि उनका कहर आप पर नाज़िल हो जाए।"

अबुलफजल, प्रवीना को आगरा भेजे जाने का बादशाही हुक्म लेकर ओरछा आया था और इसी बात को लेकर कुँवर इंद्रजीत और अबुलफजल में विवाद हो रहा था। वहाँ उपस्थित वीरसिंह जो अब तक मौन रहकर वार्तालाप सुन रहे थे, वो पहली बार वार्तालाप में हस्तक्षेप करते हुए बोले - "अबुलफजल साहब, क्या मुगल बादशाह ने हमें ये हुक्म भिजवाने से पहले, आगरा में उपस्थित, ओरछा के महाराज रामशाह से परामर्श किया है?"

"राजकुमार वीरसिंह! शहंशाह अकबर हिंदुस्तान के मालिक हैं, उन्हें अपने दरबार में किसी को बुलवा लेने के लिए किसी की इस्लाह की कोई जरुरत नहीं।"

"अबुलफजल, हमें शहंशाह का ये हुक्म मंजूर नहीं। जाकर उनसे कह दो।"- वीरसिंह ने शांतचित्त उत्तर दिया।

"एक रक्कासा के लिए आप सभी, अपना वैभव दांव पर लगा रहे है। एक बार फिर विचार कर लें।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"अबुलफजल, प्रवीना नृत्यांगना है, ये उनका गुण है कोई पेशा नहीं। वो हमारे घर की सम्मानित स्त्री हैं।"- वीरसिंह अभी भी शांत थे।

"कुँवर वीरसिंह, एक बार सोच लेते।"

"अबुलफजल..."- वीरसिंह कठोर स्वर में बोले - "अब यदि भाभी प्रवीना के बारे में कोई बात की तो हम नहीं, हमारी तलवार बात करेगी।"

अबुलफजल ने वीरसिंह के बात सुनी। राजकुमार वीरसिंह की क्रोधित भाव भंगिमा देख कर उसे भय लगा और उसने कुँवर इंद्रजीत की तरफ इस आशा से देखा शायद वो प्रवीना को आगरा भेजने को तैयार हो जाए। प्रवीना को लिए बिना खाली हाथ आगरा जाने से अबुलफजल को अकबर के कोप का भाजन होने का भी डर सता रहा था। किन्तु इंद्रजीत ने भी अपने प्रियतमा प्रवीना के बारे में कुछ भी और सुनने से मना करते हुए कहा - "मेरा निर्णय वही है, जो कुँवर वीरसिंह का है। हमारी तलवारें मुगल सेना का सामना करने के लिए सज्ज है पर प्रवीना को किसी भी तरह आगरा भेजना उन्हें स्वीकार नहीं है।"

☼☼☼

अबुलफजल निष्फल होकर आगरा लौट आया। बादशाह अकबर को उसने ओरछा में जो हुआ था वो काफी बढ़चढ़ कर बताया। प्रवीना की सुंदरता का बखान करते हुए उसे बेहद घमंडी औरत कहा। इंद्रजीत और वीरसिंह के इरादों के बारे में बताते हुए उन्हें मुगल सल्तनत के लिए खतरा करार दिया।

"अबुलफजल, वो काफिरों की किताब महाभारत में जैसे दुशासन ने द्रौपदी को खींच कर दरबार में लाया था, वैसे ही उस दो कौड़ी की लौंडी प्रवीना को हमारे सामने लाया जाए। इसके लिए जितने लश्कर और जितने सिपहसालारों की जरुरत हो उन्हें साथ लो और फ़ौरन से पेशतर ओरछा के लिए कूच करो।"- अपमान और क्रोध से बोलने के कारण अकबर के होठों से झाग निकल रहा था। बदन पेड़ से टूटे सूखे पत्ते के मानिंद लहरा रहा था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"जहापनाह! मुआफ़ करें, लेकिन द्रौपदी को खींच कर लाने वाले और खींच कर लाने का हुक्म देने वाले दोनों ही बड़ी ही बुरी गति को प्राप्त हुए थे।"- वहाँ उपस्थित रहीम खानखाना ने सर झुकाकर कहा था।

अबूदर्राहीम खानखाना अकबर के उस्ताद बैरमखाँ का पुत्र था। अकबर ने बैरमखाँ की साजिशन हत्या करवा के उनकी पत्नी अर्थात रहीम की अम्मी सलीमा बेगम से निकाह कर लिया था। रहीम अकबर के संरक्षण में ही पला-बढ़ा और शिक्षा ग्रहण की। वो तलवार और कलम दोनों को बखूबी चलाना जानता था।

एक बार मेवाड़ के राणा प्रताप के विरुद्ध रहीम के परिवार की औरतें राणा के सैनिकों के हाथ में पड़ गई थी। जब राणा प्रताप को ये मालुम पड़ा तो उन्होंने सम्मान समेत सभी औरतों को रहीम के खेमे में जाने दिया। रहीम के हृदय में तब से स्त्रियों एवं राणा प्रताप के प्रति बेहद आदर पैदा हो गया था।

अकबर, रहीम की विद्धता से प्रभावित रहता था। उसने रहीम की बात ध्यान से सुनी। उसे लगा अगर उसने प्रवीना को सेना भेजकर बलपूर्वक बुलवाया तो बड़ी संख्या में हिन्दू नाराज हो सकते हैं। अकबर का राज्य ही हिन्दुओं के दम पर टिका था इसलिए वो रहीम से बोला - "खानेखाना, तब तुम ही कोई रास्ता बाताओ।"

"हमें आगरा में मौजूद ओरछा नरेश रामशाह से बात करनी चाहिए। उन्हें साम, दाम, दंड, भेद से प्रभावित करके उनके द्वारा प्रवीना को आगरा बुलाये जाने का सन्देश पारित करवाना चाहिए।"

अकबर को रहीम की बात में दम लगा था। उसने अबुलफजल और रहीम दोनों को ये जिम्मेदारी सौंपी कि वे किसी तरह रामशाह को मनाकर प्रवीना को आगरा में लाने का इंतजाम करें।

***

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विजय

यद्यपि रामशाह चाहते थे कि कुछ दिनों के लिए प्रवीना ओरछा से दूर आगरा आ जाए। किन्तु अकबर की काम पिपासा के बारे में अच्छे से जानने के कारण उनका हृदय इस बात के लिए पूर्णतया सज्ज नहीं हो पा रहा था। उन्हें भय था कहीं अकबर प्रवीना के साथ बलात कोई दुष्कर्म न कर बैठे। प्रवीना, इंद्रजीत के प्रति एकनिष्ठ है ये वे भली भांति जानते थे।

खानेखाना रहीम ने रामशाह को परामर्श दिया कि प्रवीना को अपने गुरु केशवदास के साथ आने को कहें।

"अकबर विद्वानों की विद्वता और उनके तर्कों का लौहा मानता है। वो विद्वान जनों और फनकारों का बिना वजह अपमान करके, बमुश्किल बनाई गई अपनी अच्छी छवि का नुकसान नहीं कर सकता। यदि वो ऐसा करेगा तो न केवल उसके नवरत्नों में उसकी छवि ख़राब होगी बल्कि हिन्दू राजा भी उसकी अवेहलना करना शुरू कर सकते हैं। राय प्रवीणा स्वयं हर विद्या में प्रवीण है। वो अकबर को शास्त्रार्थ में आसानी से पराजित कर देंगी। आचार्य केशव के साथ होने से प्रवीना को अतिरिक्त बौद्धिक बल प्राप्त होगा। और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अगर फिर भी कुछ अनिष्ट होने की आशंका भी होगी तो मैं भी प्रवीना के हित में अपने सारे साधन इस्तेमाल करूँगा।"

रामशाह को खानेखाना रहीम की बात ठीक लगी। उन्होंने प्रवीना को आगरा भेजने का सन्देश ओरछा भिजवा दिया। ओरछा राज्य की भलाई के लिए अपनी इस बात पर अमल करने का परामर्श उन्होंने विशेष रूप से इंद्रजीत और वीरसिंह को भिजवाया।

महाराज रामशाह का सन्देश मिलने के बाद इंद्रजीत, वीरसिंह और आचार्य केशवदास गहन मंत्रणा में लीन थे। इंद्रजीत और वीरसिंह प्रवीना को आगरा भेजना नहीं चाहते थे पर महाराज रामशाह का सन्देश आने के बाद वे इसकी अवेहलना भी नहीं कर सकते थे। इंद्रजीत और वीरसिंह आशा भरी आँखों से आचार्य केशव को देख रहे थे जबकि केशवदास को भी कोई सम्मानपूर्ण हल सूझ नहीं रहा था।

"आई हौं बुझन मंत्र तुम्हें, निज खासन सौं सबरी मति गोई,
देह तजों कि तजो कुल कानि, हये न लजौ लजीहै सब कोई।
स्वारथ कौ परमारथ कौ पथ, चित्त विचार करो तुम सोई,
जामे रहे प्रभु की प्रभुता, अरु मोर पतिव्रत भंग न होई।"

लाखों हृदय को प्रसन्न करने वाले स्वर की ओर, वहाँ उपस्थित तीनों लोगों ने एक साथ देखा। देवी प्रवीना सधे क़दमों की लयताल पर चलती हुई, द्वार से कक्ष के मध्य में आ रही थी।

राय प्रवीना ने आचार्य केशव को अभिवादन किया, प्रियतम जीत पर बंकिम भृकुटियों प्रेम बरसाया। वीरसिंह ने उन्हें प्रणाम करके बैठने के लिए एक आसंदी देते हुए कहा - "भाभी आपने जो अभी छंद कहा उसका अर्थ भैय्या और आचार्य तो सरलता से समझ गए होंगे लेकिन मेरे मस्तिष्क का दीपक, काव्य के मामले में इतना तेज नहीं इसलिए मेरी आपसे विनती है, कृपया अभी कहे गए अपने छंद का अर्थ बतायें।"

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राय प्रवीना बैठने के बाद बोली – "मैं आप सबसे मंत्रणा करने आई हूँ क्योंकि जो निकट के परिजन हैं उनकी मति भंग हो गई है। अपने शरीर और मान को तजने से, मैं लज्जित होउंगी किन्तु उन्हें लज्जा का लेशमात्र भी अनुभव न होगा। इसलिए हमें विचार करके वो कार्य करना चाहिए जिससे ईश्वर की लाज भी न जाए और मेरा पतिव्रत धर्म भी न टूटे।"

वहाँ उपस्थित सभी ने प्रवीना की बात का मर्म समझा और लज्जित हुए। महाराज रामशाह का प्रवीना को आगरा भेजे जाने का निर्णय नीति और युक्तिसंगत नहीं था।

"भाभी, अब आप ही बतायें, क्या किया जाए?"- वीरसिंह ने पूछा।

"हमें आगरा जाना चाहिये।"- प्रवीना ने बिना किसी संशय के कहा मानो उन्होंने अपना पथ निश्चित कर लिया हो।

"ये जानते हुए भी कि तुरुक अकबर किस मानसिकता का आदमी है?"- कुँवर इंद्रजीत ने अपनी प्रेयसी के निर्णय पर प्रेमवश अवश होकर प्रश्नवाचक चिन्ह लगाया। उनकी आवाज़ इस समय पीड़ा में भीगी थी।

पति की पीड़ा का प्रवीना को भली भांति ज्ञान था किन्तु इस समय उन्हें अपने कर्तव्य के निर्वाह के लिए सज्ज होना था, इसलिए स्वयं को शांतचित्त रखते हुए उन्होंने कुँवर इंद्रजीत के प्रश्नवाचक चिन्ह का कोई उत्तर देने के स्थान पर पूछा - "जीत, मुझ पर कितना भरोसा है?"

"जितना प्रभु राम को माता सीता पर था।"

"फिर तो कोई बात ही नहीं है, प्राणनाथ, जैसे माता सीता रावण की लंका से पवित्र लौटी थी, वैसे ही, मैं भी पवित्र लौटूंगी आगरा से। आप विश्वास रखिये।"

राय प्रवीना के गुणी वचनों से न केवल कुँवर इंद्रजीत निरुत्तुर हुए अपितु आचार्य केशव और कुँवर वीरसिंह भी कुछ कह न सके। अपनी प्रेयसी की बात का सम्मान करते हुए कुँवर इंद्रजीत ने अपने हृदय पर शिलाखंड रखते हुए, उन्हें आचार्य केशव के साथ आगरा जाने की सहमति दे दी।

✪✪✪

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जैसे महल के कुचक्रों से भगवान राम वन गए थे वैसे ही महल के कुचक्रों से प्रवीना आगरा जाने को तैयार हुई।

नियत समय पर, प्रवीना आचार्य केशव के साथ ओरछा से आगरा जाने के लिए निकली। कुँवर इंद्रजीत ने आँखों में झिलमिलाते अश्रुकणों के साथ प्रवीना को कंठ लगाकर अपने हाथों से शिविका में बिठाया।

प्रवीना के नैनों में छाया हुआ रतन जल छलक कर कपोलों पर बह पाता उससे पूर्व ही उन्होंने पालकी के द्वार पर आवरण खींच लिया। आवरण खींचने से पहले प्रवीना ने अपने स्वामी अपने प्रियतम अपने जीत की छवि अपनी आँखों, अपने हृदय में धारण कर ली।

कहार, जब प्रवीना की पालकी उठाकर चले तो कुँवर इंद्रजीत बहुत दूर तक उसके पीछे-पीछे पैदल ही गए। राय प्रवीना ने पालकी से थोड़ा पर्दा सरका कर इंद्रजीत को अपने पीछे पैदल आते देखा। उनका जी किया कि अभी पालकी से कूद जाये और जाकर अपने प्रियतम को बाहों में भर ले। किन्तु वे ऐसा कर न सकी। अपने हृदय को बहलाते हुए उन्होंने इस समय प्रेम के ऊपर कर्तव्य को प्राथमिकता दी।

इंद्रजीत जैसा समर्पित और प्रेम करने वाला पति पाकर राय प्रवीना ने स्वयं को धन्य समझा।

✿✿✿

आचार्य केशव आगरा पहुँचने के बाद सबसे पहले खानेखाना रहीम से मिले। प्रवीना भी साथ थी। आचार्य केशव ने अपने आने की सूचना खानेखाना रहीम को पहले ही भिजवा दी थी। खानेखाना ने आचार्य केशव और राय प्रवीना को बेहद सम्मान देते हुए उनकी आवभगत की। राय प्रवीना से कुछ देर बात करने के बाद ही खानेखाना रहीम को ज्ञात हो कि राय प्रवीना न केवल कुशल नृत्यांगना, गायिका, मौसिकीकार है बल्कि वे आला दर्जे

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की विदुषी भी हैं। ऐसी विदुषी स्त्री जो किसी पुरुष की समर्पित पत्नी है, उसे यूँ विवश करके आगरा बुलाये जाने के लिए रहीम ने मन ही मन कामलोलुप अकबर को धिक्कारा।

यद्यपि खानेखाना रहीम ने राय प्रवीना और आचार केशव की अपने निवास में रहने की व्यवस्था की थी किन्तु राय प्रवीना ने रानी किरणवती के महल में रुकने की इच्छा जताई। राय प्रवीना, रानी किरणवती के चरित्र से अत्यंत प्रभावित थी और एक सम्मानित नारी के तौर पर वे उन्हें अपना आदर्श मानती थी।

राय प्रवीना की इच्छा का सन्देश खानेखाना रहीम ने रानी किरणवती के पास भेजा।

राय प्रवीना आगरा आयी है और उनके साथ रहने की अभिलाषा रखती हैं - ये जानकर किरणवती उन्हें लेने के लिए खानेखाना के निवास पर स्वयं पहुँची।

प्रवीना रानी किरणवती की सहृदयता से अभिभूत होते हुए उनके निवास पर जा कर रुकी।

✿✿✿

अपने पांवो में झुकी प्रवीना को उठाते हुए किरणवती ने कहा – "अरे एक विदुषी, एक कवियत्री को ये शोभा नहीं देता। कलावंतों का स्थान माथे पे होता है, चरणों में नहीं।"

किरणवती की बात सुनकर प्रवीना उदास हो गई थी। प्रवीना की उदासी और उदासी का कारण दोनों ही किरणवती से छिपे हुए नहीं थे। उन्होंने प्रवीना को ससम्मान बिठाते हुए कहा –"तुम्हारी उदासी का कारण हम जानते हैं। किसी स्त्री को बादशाह द्वारा यूँ दरबार में बुलवाया जाना अपमान का विषय है। प्रवीना तुम्हारे शोक का कारण यही अपमान है और तुम्हें स्वयं ही अपने इस शोक का निवारण करना होगा।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"मेरे भीतर आप जितना साहस नहीं रानी सा, जो बादशाह की गर्दन पर खंजर रख कर अपनी शुचिता की रक्षा कर सकूँ, अपमान का प्रतिशोध ले संकू।"

"प्रिये प्रवीना, क्या केवल मैं ही एक उदाहरण हूँ, संसार में, जिसके तौर-तरीके अस्मिता रक्षा और प्रतिशोध के लिए प्रयोग में लाये जाएँ।"

रानी किरणवती का प्रश्न सुनकर प्रवीना बोली - "देवी किरणदे, आपके अतरिक्त रानी पद्मिनी का उदाहरण हमारे सामने है किन्तु उनके तरीके से केवल अस्मिता की रक्षा होती है, प्रतिशोध की पूर्ति नहीं होती।"

राय प्रवीना थोड़ा सोच के फिर बोली - "इसके अतरिक्त मुझे आनिहलवाड की राजकुमारी देवलदेवी और देवगिरि की राजकुमारी छिताई याद हैं, जिन्होंने अपने अपमान का प्रतिकार खिलजी वंश से लिए किन्तु इसके लिए उन्हें अपनी अस्मिता का बलिदान करना पड़ा। इसलिए पूजनीय किरणदे, मुझे आप सी अन्य कोई वीरांगना भूत और वर्तमान में दृष्टिगत नहीं होती, जिसने अपने सम्मान की रक्षा इतने वीरोचित अंदाज में की हो।"

"प्रिये प्रवीना, वो मेरी शक्ति थी, जिससे मैने अपने सम्मान की रक्षा की और तुम्हारी शक्ति है तुम्हारी काव्यकला, तुम्हे उसी से बादशाह को नतमस्तक करना होगा। और मुझे पूरा विश्वास है तुम कल दरबार में अकबर को अपने काव्यकला की पराक्रम से अवश्य ही पराजित करोगी। और एक बात स्मरण रखना प्रवीना, ईश्वर उनकी ही सहायता करता है जो कठिन समय में अपनी रक्षा स्वयं करते हैं।"

प्रवीना ने आदरसूचक नेत्रों से रानी किरणवती को देखा और उनके पवित्र चरणों में झुकते हुए बोली - "कल के कठिन दिन में अपनी रक्षा के लिए मुझे आपके आशीर्वाद की आवश्यकता होगी।"

किरणवती ने इस बार प्रवीना को अपने चरणों में झुकने से नहीं रोका। उनका हाथ स्वतः ही प्रवीना के सर को सहलाने लगा था।

✪✪✪

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
विजय

प्रवीना को देखने की कुलालसा लिए अकबर सारी रात जागता रहा था। आफ़ताब तुलय से पहले कुछ घड़ी उसे मुश्किल से नींद आई लेकिन प्रवीना के ख्वाब से उचट गई।

समय से पहले ही अकबर दरबार में शानो-शौकत से जाकर मसनद के सहारे बैठ गया था। सभी दरबारी मौजूद थे, सिवाय खानेखाना रहीम के।

अकबर की निगाह दरबार के द्वार की ओर ही प्रवीना के इन्तजार में लगी हुई थी। खानेखाना रहीम के साथ आचार्य केशव दरबार में आये। उनके साथ प्रवीना को न देखकर अकबर को निराशा हुई।

खानेखाना रहीम ने आचार्य केशव का परिचय बादशाह को दिया। आचार्य केशव ने बादशाह को रस्मी अभिवादन किया और उन्हें अपनी काव्य पुस्तक 'रसिक प्रिया' के कुछ छंद सुनाये, उसके बाद एक सवैया सुनाया –

हाथी न साथी न घोरे न गाँव न ठाँव को नाम विलैहैं।
तात न मात न मित्र न पुत्र व वित्त अंगहु संग न रैहैं।।
केशव नाम को राम विसारत और निकाम न कामहि ऐहैं।
चेत रे चेत अजौं चित्त अंतर अन्तक लोक अकेले ही जैहैं।।

आचार्य केशव का सवैया सुनकर अकबर ने खानेखाना की ओर उसका अर्थ जानने के लिए देखा तो खानेखाना ने आचार्य केशव के छंद का अर्थ स्पष्ट करते हुए कहा -

– "इस संसार के समस्त वैभव को छोड़कर अंत में प्रत्येक व्यक्ति को इस संसार से अकेले ही कूच करना होता है। संसार से जाते समय हाथी, अश्व, मित्र, पुत्र, दान, महल, गांव, देह, धन आदि में से कुछ भी साथ नहीं जाता। यदि व्यक्ति राम को भूल जाता है तो कोई निष्कामता उसके काम नहीं आती। इसलिए चित्त को निर्मल रखना ही श्रेयस्कर होता है क्योंकि उस लोक में अकेले जाने से केवल निर्मल चित्त ही अपना सहायक होता है।"

सवैये का अर्थ सुनकर अकबर झेंप उठा। अपनी इस झेंप को मिटाने के लिए वो बोला – "आचार्य केशव आप तो महाकवि है आपकी काव्यकला

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

की प्रशंसा करना भी सरल कार्य नहीं है। हम आप से प्रभावित हैं। निश्चय ही आप जैसे श्रेष्ठ कवि की शिष्या काव्यगुणों में निपुण होगी। अब हम और ये सारा दरबार राय प्रवीना की कलाओं का रस पान करना चाहते हैं।"

आचार्य केशव की सूचना पर राय प्रवीना चार दासियों के साथ दरबार में आयी। दो दासियाँ ओरछा से प्रवीना के साथ आयी थी और दो दासियाँ रानी किरणवती ने उनकी सेवा में दी थी।

राय प्रवीना मुगल दरबार में उस भांति उपस्थित हुई जैसे रक्तबीज के दल में माता दुर्गा ने प्रवेश किया होगा। उनकी सुंदरता, उनका आभमंडल देखकर प्रौढ़ अकबर की आँखें खुली की खुली रह गयी। राय प्रवीना के मुख पर इतना तीव्र तेज विद्यमान था कि अकबर उन्हें दरबार में नृत्य करने की आज्ञा देने मात्र के विचार से विचलित हो उठा। आत्मविश्वास से भरी राय प्रवीना के मुख के तेज को कम करने के विचार से अकबर ने उनके सामने कुछ समस्या पूर्ति दी जिन्हें राय प्रवीना बात ही बात में छंद बनाकर प्रस्तुत कर दिया।

जब अकबर की समस्या पूर्ति समाप्त हो गई तो राय प्रवीना ने अपने छंद सुनाने आरम्भ किये। सारी सभा प्रवीना की काव्यकला देखकर वाह-वाह कर रही थी। आचार्य केशव अपनी शिष्या पर गर्व कर रहे थे। खानेखाना रहीम मुग्धता से प्रवीना को देख रहे थे। अकबर की नजरें लज्जित हो रही थी।

राय प्रवीना ने अकबर के मुख पर पसरी झेंप को स्पष्ट देखा और फिर उन्होंने मुगल दरबार में मुगल बादशाह अकबर के सामने सगर्व आत्मविश्वास से भरकर अपना वो छंद सुनाया जिसे उन्होंने विशेष रूप से अकबर के लिए रचा था।

श्वेत रंग सबसे भले श्वेत भले नहीं केश।
रमणी रमै न रिपु डरे, सुनहु शाही जनेश।।

राय प्रवीना केवल छंद सुनाकर नहीं रुकी उन्होंने उसका अर्थ स्पष्ट करते हुए बताया - "हे शंहशाह! श्वेत रंग भले ही सबसे अच्छा होता हो किन्तु जब

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ये श्वेत रंग केशों पर अधिकार करता है तो फिर न ही स्त्री प्रेम करती है और न ही शत्रु भय मानते हैं।"

राय प्रवीना का छंद और उसका अर्थ सुनकर अकबर को अपनी वृद्ध होती अवस्था और सर पर सफ़ेद हुए केश का भान हुआ। छंद के द्वारा राय प्रवीना की दी हुई शिक्षा और व्यंग्य को समझकर वो अपने तख़्त पर कसमसा उठा। राय प्रवीना के तेज और काव्यकला के प्रकाश का सामना न कर पाने के कारण उसने दरबार बर्खास्त करने को कहा तो राय प्रवीना ने अपने स्वर में विनती के पुट में लाते हुए निवेदन किया –

"हे हिंद के शहंशाह, मैने सुना है आप फनकारों के कद्रदान हैं। मैं एक छोटी सी फनकार हूँ, जो बादशाह के सामने अपनी काव्य कला का प्रदर्शन करने के लिए ओरछा से आयी हूँ। आज के बाद फिर पता नहीं मुझे बादशाह के दर्शन और उनके सामने छंद सुनाने का अवसर मिलेगा या नहीं, इसलिए मेरी बादशाह से प्रार्थना है कि दरबार समाप्त करने से पहले मुझे एक दोहा आपकी सेवा में सुनाने की अनुमति प्रदान करें।"

यद्यपि अकबर राय प्रवीना के छंदो में छुपे व्यंग्य से भयभीत और लज्जित हो रहा था और वो प्रवीना को दोहे के माध्यम से अन्य कोई व्यंग्य नहीं करने देना चाहता था किन्तु बीच दरबार में प्रवीना की गई विनती को उसे मानना पड़ा।

बादशाह अकबर की अनुमति पाकर राय प्रवीना ने काव्य के माध्यम से अपनी उस शक्ति का प्रदर्शन किया जो कालजयी थी -

विनती राय प्रवीन की सुनिए साहि सुजान।
जूठी पातर भखत हैं बारी, वायस, स्वान।

कवियों, विद्वानों की संगत में रह कर अकबर छंदो का कुछ-कुछ अर्थ समझने लगा था। राय प्रवीना के इस दोहे का अर्थ उसने कुछ समझा, कुछ नहीं समझा। जितना समझा था उससे उसके भीतर क्रोध की लकीरें शिराओं में बही और उसने प्रवीना को दोहे का अर्थ बताने को कहा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अकबर को क्रोधित जानकर भी प्रवीना ने तनिक भी भयभीत हुए बिना दोहे का अर्थ बताने लगी - "हे ज्ञानी सम्राट, ये राय प्रवीन का नीतियुक्त वचन है कि झूठी पत्तलों को इकठ्ठा करने वाले बारी, कौवे और कुत्ते ही खातें हैं।"

दोहे का अर्थ बताकर राय प्रवीना ने अपनी दृष्टि अकबर के मुख पर गड़ा दी। राय प्रवीना के दोहे से अकबर के भीतर अपार क्रोध उमड़ा किन्तु वो राय प्रवीना की आँखों के तेज को न सहकर ,दरबार से उठकर अपने हुजरे में चला गया।

दरबार में उपस्थित ओरछा के महाराज रामशाह ने गर्वित नेत्रों से प्रवीना की प्रशंसा की, करतल ध्वनि से उनका अभिनन्दन किया।

अपने कक्ष में पहुँचकर अकबर ने खानेखाना रहीम को तुरंत तलब किया।

जब खानेखाना अकबर के हुजरे में पहुँचे तो वो अव्यवस्थित ढंग से चहलकदमी कर रहा था। केश बिखरे थे, मुख कर स्वेद छलछला रहा था। कंधे झुके से थे। उसकी दशा ऐसी थी जैसे वो किसी जंग के मैदान से शिकस्त खाकर लौटा हो। रहीम ने बादशाह को पूरी तरह से सलाम बजा भी नहीं पाया था कि अकबर शिकायत करने के लहजे में बोला - "ओरछा की नर्तकी बड़ी ही गुस्ताख़ और नाफ़र्माबरदार है।"

"गुस्ताखी मुआफ़, हो जहाँपनाह लेकिन ओरछा की कवियत्री ने जो कहा उससे आपकी गरिमा बढ़ी ही है।"

"सो कैसे?"- अकबर ने अपनी प्रतिष्ठा बढ़ने की बात जानकार पहले की अपेक्षा सयंत आवाज में पूछा।

"राय प्रवीना ने आपकी उम्र और रुतबे की नजर से ही वो दोहा कहा है।"

अकबर ने खानेखाना रहीम की बात सुनी, कुछ विचार किया और फिर बोला - "तो खानेखाना, आप उस नर्तकी के साथ कैसा सुलूक तजवीज करते हैं?"

"जहाँपनाह! राय प्रवीना को ससम्मान ओरछा भेज दे। इस से मुगल सल्तनत और बादशाह की कीर्ति बढ़ेगी।"

अकबर ने रहीम की बात सुनी और हाथ मलते हुए कहा –"अगर आप सबकी इच्छा ऐसी है तो ऐसा ही होगा।"

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"जहाँपनाह का इकबाल हमेशा बुलंद रहे।"- राय प्रवीना के मान की न केवल रक्षा हो चुकी थी अपितु उनकी कीर्तिलता भी पल्लवित हो चुकी थी। इसकी ख़ुशी इस समय खानेखाना रहीम के चेहरे पर झलक रही थी।

राय प्रवीना का नाम महाराणा प्रताप, महरानी दुर्गावती और महारानी किरणवती के साथ उस सूची में सम्मिलित हो चुका था, जिन्होंने अकबर को पराजित किया था।

सच में ये ओरछा की कवियत्री और वीणा वादक राय प्रवीना की मुगल बादशाह अकबर के ऊपर विजय थी।

***

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इंद्रप्रिया

आगरा से बड़ी शान के साथ राय प्रवीना आचार्य केशव के साथ ओरछा के लिए निकली थी। अपने प्रियतम इंद्रजीत से विछोह उन्हें अब कतई नहीं सुहा रहा था। उनका जी करता कि पालकी में पंख लग जाए और वे उड़कर अपने 'जीत' के समीप पहुँच जाएँ।

जहाँ एक ओर, प्रियतम इंद्रजीत से मिलने की प्रसन्नता प्रवीना के भीतर थी वहीं उन्हें कुछ बातें भीतर तक कचोट रही थी। ये बाते उन्हें आगरा प्रवास में रानी किरणवती और अबुलफजल से सुनने को मिली थी।

अकबर के दरबार से जब विजयी होकर राय प्रवीना रानी किरणवती के निवास में आयी तो रानी ने उन्हें प्रसन्नता से अंक में भर कर ढेरो आशीष दिए थे। दोनों साथ काफी समय बैठी थी साथ में भोजन किया। ढेरों बातें की। इन्ही बातों में राय प्रवीना ने रानी किरणवती से पूछा था – "जिस भांति रानी दुर्गावती ने वीरतापूर्वक न केवल युद्ध किया अपितु वीरगति प्राप्त करके अपने मान की भी रक्षा की। क्या उसी तरह उनकी बहन कमलावती और पुत्रवधु अपनी अस्मिता की रक्षा नहीं कर सकती थी। उन्होंने अपनी महारानी दुर्गावती से कोई शिक्षा लेने की कोई कोशिश क्यों नहीं की?"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राय प्रवीना की बात सुनकर रानी किरणवती गंभीरता से बोली थी "प्रिये प्रवीना! जिसके हाथ में कृपाण होती है कभी-कभी कलम भी उसके पक्ष में लिखती है।"

"अर्थात...?"

"अर्थात ये कि बादशाह की चाटुकारिता में किसी ने दो दासियों को पकड़कर शहंशाह की सेवा में रानी दुर्गावती की कुटुंब की स्त्री बताकर भेज दिया और किसी ने उन दसियों को अपनी पुस्तक में रानी दुर्गावती की बहन और पुत्रवधु लिख दिया। और जानती हो प्रवीना जब कोई बात लिख दी जाती है तो वो दस्तावेज बन जाती है और फिर धीरे-धीरे संसार में वही बात सच के रूप में स्वीकृत हो जाती है।"

"इसका अर्थ ये कि महारानी दुर्गावती की कुटुंब की स्त्रियाँ म्लेच्छों के हाथ में नहीं लगी और उन्होंने समय रहते जौहर कर लिया।"

"हाँ।"- रानी किरणवती ने छोटा सा उत्तर दिया था। इस समय उनके मुख पर इस बात का अपार दुःख हिलोरे मार रहा था कि रानी दुर्गावती के कुटुंब की दो स्त्री मृत्यु के बाद भी अपमानित की जा रही हैं। उन्हें पुस्तकों में अकबर के हरम में उसकी रखैल बनकर रहते हुए - लिखा जा रहा है।

"क्या अकबर को ज्ञात है कि उसके हरम में दुर्गावती के कुटुंब की स्त्रियों के स्थान पर दासी उनके नाम से रहने को बाध्य की गई हैं?"- राय प्रवीना का सच जानकर अत्यंत विस्मित थी।

"हाँ अकबर को सब पता है और अब वो भी यही चाहता है कि दासियों पर कमलावती और दुर्गावती की पुत्रवधु का पर्दा पड़ा ही रहे। ऐसा करके वो रानी दुर्गावती को वर्तमान और भविष्य में अपमानित करने का अपना मंसूबा रखता है।

राय प्रवीना ने रानी किरणवती से महारानी दुर्गावती के कुटुंब की स्त्रियों का सच जाना तो उनका हृदय अकबर और अबुलफजल के प्रति घृणा से भर उठा। वो अबुलफजल ही था जिसने अपनी किताब अकबरनामा में दासियों को रानी दुर्गावती की बहन और पुत्रवधु लिखा था।

आगरा से निकलने की पूर्वसंध्या पर आचार्य केशव और राय प्रवीना के सम्मान में खानेखाना ने दावत का इंतजाम किया था। मुगल दरबार के बहुत से दरबारी इस दावत में मौजूद थे। अबुलफजल भी था।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अबुलफजल जब से वहाँ आया था वो प्रवीना से मिलने के लिए एकांत की तलाश कर रहा था। जब राय प्रवीना अबुलफजल को एकांत में दिखाई दी तब तक दो प्याले मदिरा के पी चुका था और तीसरा हाथ में था।

"बहुत ही बेबाक लिखती हैं, आप।"

अबुलफजल ने राय प्रवीना की निकट पहुँचकर कहा और फिर प्याले से एक घूंट मदिरा का भर लिया। उसके होठों से मदिरा की कुछ बून्द टपक कर उसके वस्त्रों में विलीन हो गई।

"बेबाक नहीं स्पष्ट लिखती हूँ।"- राय प्रवीना ने कहा था।

"हाँ असल में मैं वही कहना चाहता था पर मुझे इस समय 'स्पष्ट' शब्द सुझा ही नहीं और मेरे मुँह से बेबाक निकल गया।"

"संभवतः आप लेखन कार्य मदिरापान करने के बाद ही करते हैं। इसलिए आपको समय पर सही शब्द नहीं सूझते और आप दासी के स्थान पर कमलावती लिख देते हैं।"

राय प्रवीना की स्पष्टवादिता और तीखी नजरों से अबुलफजल के मस्तिष्क से अब तक पी गई मदिरा का प्रभाव जाता रहा। वो प्रवीना की कही बात का अर्थ सपष्ट रूप से समझ गया था। कुछ देर वो मौन इस भांति खड़ा रहा जैसे प्रवीना को उत्तर देने के लिए सही शब्दों का चुनाव कर रहा हो। अबुलफजल, अकबर की तरह आसानी से इस कवियत्री से हार मानना नहीं चाहता था।

"मोहतरमा प्रवीना, अजीम लेखकों की कलम से लिखी गई बातें --खुद-ब-खुद सच हो जाती हैं और आने वाली नस्ले उन्हें निःसंकोच स्वीकार करती हैं। क्या घटित हुआ इसका महत्व, बड़े लेखक ने क्या लिखा है, उसके आगे बेहद कम होता है। दुर्गावती के परिवार की स्त्रियों के बारे में मेरी किताब में जो लिखा गया, अब वही सच माना जायेगा क्योंकि इसे लिखने वाला एक महान लेखक है।"

"मेरे नजर में ऐसा लेखक महान नहीं, अपितु छद्मी होता है।"

"फिर तो आपके गुरु आचार्य केशव भी छद्मी लेखक हुए।"- अबुलफजल ने प्रवीना की बात सुनकर कुटिल मुस्कान के साथ कहा।

अबुलफजल की बात सुनके प्रवीना अपने स्वर को तीखे स्वर में बोली - "अपने गुरु के संदर्भ में हम कोई भी ओछी बात नहीं सुनेगें।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"ठीक है ओछी बात नहीं करते। आपके गुरु छद्मी नहीं बल्कि महान कवि हैं। और उन महान कवि ने अपनी पोथी में जो आपके बारे में लिखा है वो फिर सत्य ही होगा।"

"क्या लिखा है आचार्य ने मेरे बारे में?"

"आचार्य ने आपको मद से भरी पातुर लिखा है।"- अबुलफजल निर्लज्जता से बोला।

राय प्रवीना कोई कटु वचन अबुलफजल को कहती उससे पहले ही उसने कहा - "अगर मोहतरमा चाहें तो कविप्रिया पुस्तक में इस छंद बयालीस, तिरालीस को पढ़कर तसदीक कर सकती हैं कि आचार्य केशव ने आपको छः पातुरों में अव्वल रखा है।"

अबुलफजल की बात सुनकर राय प्रवीना को धक्का लगा, वो वहाँ से जाने को तत्पर हुई तो उनके सामने आते हुए अबुलफजल बोला - "अब अगर एक पातुर के बारे में मेरा जैसा अजीम लेखक ये लिख दे कि वो अपनी मर्जी से शहंशाह के हरम में प्रसन्नता से उनकी रखैल बनकर रही तो क्या आने वाले वक्त में ये सच न मान लिया जाएगा।"

अबुलफजल कुटिलता से हँसता हुआ राय प्रवीना का मार्ग रोके खड़ा था। राय प्रवीना जो कि उसकी बातों से दग्ध हुए खड़ी थी, आज पूर्ण स्वर में बोली - "मार्ग छोड़ता है या चाहता है, मैं फिर वही कर दिखाऊं जो रानी किरणवती ने अकबर के साथ किया था।"

राय प्रवीना का हाथ कमर में खुसी कटार पर सख्ती से कस चुका था। अबुलफजल ने देखा और भय खाते हुए एक ओर नजर नीची किये हुए सरक गया।

✪✪✪

आगरा से ओरछा के मार्ग में एक ग्राम में आचार्य केशव ने विश्राम हेतु पड़ाव डाला।

राय प्रवीना अनमनी सी थी। आचार्य केशव ने भी देखा। उन्होंने सोचा शायद मार्ग की थकान के कारण प्रवीना अनमनी होगी। रात्रि भोजन के समय प्रवीना भोजन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

के लिए तो बैठी किन्तु एक दो ग्रास खा कर उठने लगी तो आचार्य ने उनके चेहरे पर अनगढ़ भावों के बारे में पूछा।

आचार्य केशव की बात सुनकर प्रवीना पुन: बैठ गई थी। आचर्य केशव को देखते हुए बोली - "जिस स्त्री का गुरु ही उसे पातुर माने तो उसे अगर तुरुक बादशाह अपने दरबार में बुलाये तो इसमें गलत क्या है? जो आप ओरछा की अन्य पातुरों की भांति मुझे पातुर का विशेषण न देते तो मुगल बादशाह मुझे दरबार में न बुलाता। आखिर एक वैश्या को तो कोई भी बुलायेगा। इसमें उसका क्या दोष?"

बाल वयक्रम बाल सब, रूप शील गुण बृद्ध
यदपि भरो अवरोध षट,पातुर परम प्रसिद्ध।
रायप्रवीण प्रवीण अति, नवरगराई सुवेश
अति विचित्र नैना निपुण, लोचन नलिन सूतेश।

स्वयं के संदर्भ में आचार्य केशव के लिखे छंद का अंश कहते हुए राय प्रवीना के ह्रदय और नेत्रों दोनों का तटबंध टूट गया था।

आचार्य केशव कुछ पल मौन रहकर बोले - "तुम व्यर्थ ही दुखी हो रही हो। मैने तो तुम्हें देवी पार्वती और सरस्वती के समान मान कर तुम्हरा महिमामंडन किया है। राय प्रवीना की देवी सरस्वती और पार्वती से तुलना करने वाला छंद आचार्य केशव सुनाने लगे।

रत्नाकर ललित सदा, परमानंदनहि लीन,
अमल कमल करनीय कर, रमा की राय प्रवीन।
राय प्रवीण कि शारदा, सूचि रूचि राजत अंग,
वीना पुस्तक धारिणी, राजहंस सूत संग।

-वह लक्ष्मी के समान दमकते रूप लावण्य वाली सभी कलाओं में प्रवीण है। हाथों में वीणा और पुस्तक धारण करने वाली तथा राजहंस पर बैठने वाली सरस्वती की भांति विद्या और बुद्धि से भरपूर है। वह प्रवीण राय है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आचार्य केशव छंद कहने के बाद उसका अर्थ भी बताते चले गए थे। प्रवीना ने सुना। आचार्य केशव ने और बहुतेरे ढंग से उन्हें समझाया। यद्यपि राय प्रवीना का आचार्य प्रति की क्षोभ समाप्त हो गया किन्तु उनके हृदय में ये गांठ बनी रही कि उनके गुरु ने ही उन्हें पातुर लिखा।

✩✩✩

राय प्रवीना के आगरा जाने के बाद कुँवर इंद्रजीत का किसी भी कार्य में कहीं भी मन नहीं लगता। वे आठों जाम या केवल अपनी प्रेयसी की यादों में ही खोये रहते या फिर उनके लिए निर्मित हो रहे महल की देख-रेख किया करते। भूख प्यास उन्हें मानो लगती ही नहीं थी। बहुत कहने पर थोड़ा सा अन्न-जल ग्रहण करते।

"राय प्रवीना ससम्मान विजयी होकर आगरा से लौट रही हैं"- ये सूचना मिलते ही इंद्रजीत का का मन मयूर नृत्य कर उठा। वे प्रवीना की एक झलक देखने को विकल हो उठे। संसार ने एक योद्धा की आँखों से अपनी प्रियतमा के लिए झरते हुए अश्रुकणों को देखा।

राय प्रवीना के स्वागत में समस्त ग्राम में दिए जलाये गए। सम्पूर्ण बेतवा नदी असंख्य दीपमालाओं के झालर से अलंकृत की गई। इंद्रजीत श्वेत अश्वों से जुता हुआ रथ लेकर प्रवीना की अगवानी को नगर के बाहर पहुँचे।

आचार्य केशव को प्रणाम करके इंद्रजीत प्रवीना की पालकी की ओर बढ़े। प्रवीना अधखुले नेत्रों से जीत को देखते हुए पालकी से बाहर आयी। बहुत समय तक चंद्र और चकोर बस एक-दूजे को मौन रह देखते रहे। नेत्रों में अश्रुकण झिलमिलाते रहे। अधर थरथराते रहे। देह कम्पित होती रही। हृदय की धड़कने विरह और संयोग दोनों के राग पर धड़कती रहीं।

राय प्रवीना दाएं नेत्र को मूंदकर अपने शुभ वाम नेत्र से प्राणप्यारे इंद्रजीत को को हृदय में बसाते हुए बोली –

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सीतल समीर ढार, मंजन के घनसार
अमल अगौछे आछे मन में सुधारि हौं।
देहौं न पलक एक लागन पलक भर,
मिली अभिराम आधी तपन उतरिहौं।
कहत "प्रवीन राय" अपनी न ठौर पाये,
सुन वाम नैन, या वचन प्रतपारि हौं।
जब भी मिलेंगे मोह, इंद्रजीत प्राणप्यारे,
दाहिने नयन मूंद तोहि सौं निहारि हौं।

राय प्रवीना एक समर्पित अर्धांग्नी की भांति इंद्रजीत के चरणों में झुकी तो इंद्रजीत ने उन्हें उठाकर कंठ से लगा लिया। प्रवीना कुँवर इंद्रजीत की बाहों का सहारा लेकर श्वेत अश्वों से जुते रथ पर चढ़ी। इंद्रजीत ने रथ पर उनके बगल में बैठते हुए सारथी को देवी प्रवीना के लिए निर्मित नवीन महल की ओर चलने को कहा।

राय प्रवीना का रथ ओरछा की वीथियों, मार्ग और हाट से होते हुए उनके महल की और बढ़ा। दो युवक सैनिक अश्वों पर उनके बगल में चल रहे थे। बलिष्ठ पर्वत जैसे ऊँचे कंधों वाले कुँवर इंद्रजीत, मृगलोचनि राय प्रवीना के साथ रथ पर इस भांति सुशोभित थे जैसे राजा नल, दमयंती के साथ सुशोभित होते हैं। आज इंद्रजीत का अपनी प्रियतमा प्रवीना से पुनर्मिलन हुआ था जैसे कभी नल अपनी पत्नी दमयंती से मिले थे, विरह-वेदना का घात सहने के बाद।

राय प्रवीना के कानों में मत्स्याकार बड़ी-बड़ी बालिया झूम रही थीं। हृदय के ऊपर उन्नत वक्षों पर मणिमाला शोभायमान थी। बालो में मोतियों के वेणी यूँ गुथी हुई थी जैसे अमवस्या में आकाश में नक्षत्र और धूमकेतु चमकते हैं। ओरछा के राजपथों और प्रसादों की अटारी पर जनसमूह मुगल बादशाह अकबर को पराजित करके लौटीं, अपनी प्रिये कलावंत के स्वागत में उमड़ी हुई थी। उनके हाथों में सुरभित पुष्प और उनसे गुथी हुई मालाएं थी। जिस स्थान से प्रवीना का रथ निकलता, उन पर पुष्पवृष्टि होती। कुछ युवक आगे बढ़कर अपने हाथ से गुथी मालाएं पकड़ाते तो प्रवीना हँसते हुए उसे अपने गले में डाल लेती। बहुत से स्त्री-पुरुष रथ को छूकर अपने माथे से लगाते और राय प्रवीना की जयकार करते। अपनी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्राणप्रिया की जयकार सुनकर कुँवर इंद्रजीत का चौड़ा वक्ष और अधिक चौड़ा हो जाता।

महल में जाने से पूर्व प्रवीना ने रथ को रामराजा मंदिर की ओर ले चलने को कहा। वहाँ पूजन-अर्चन के पश्चात वे अपने महल को चली।

राय प्रवीना का रथ त्रिखंडा महल के सामने जाकर रुका। वे महल के भीतर कुँवर इंद्रजीत की बाँहों का सहारा लेकर गई और भीतर पहुँचते ही उनका संयम टूट गया और वे इंद्रजीत के वक्ष से चिपट गई थी। इंद्रजीत के बाहुपाश ने प्रवीना की देह को अपने आलिंगन में कस लिया था।

वे बहुत देर तक आलिंगबद्ध देहरस का आस्वादन करने का श्रम करते रहें। जब उनकी देह तृप्त होने के बाद एक दूसरे से मुक्त हुई तो उनपर परिश्रम के स्वेदकण बिखरे हुए थे। देह का स्वेद सुखाने के लिए इंद्रजीत प्रवीना की मृणाल बाँह पकड़ के उन्हें आनंद मंडल बाग़ में ले आये।

यहाँ राय प्रवीना की वीणा रखी हुई थी। वीणा को देख कर प्रवीना ने इंद्रजीत की आँखो में देखा और उनका संकेत पाकर वीणा को प्रणाम कर उसके तारों पर उँगलियाँ फेरने लगी।

जहाँ एक ओर समस्त ओरछा राय प्रवीना के स्वागत में प्रसन्न था वहीं रानी रुक्मणि कुंवरि के हृदय पर सांप लौट रहे थे। उन्होंने ये सोचा था कि प्रवीना, आगरा जाकर मुगल दरबार में नर्तकी बनकर रह जाएंगी और कभी ओरछा नहीं लौट पायँगी किन्तु वह तो ओरछा लौट चुकी थी, वो भी ढेरों मान-सम्मान के साथ। आज समस्त ओरछा ही नहीं अपितु भरतखण्ड में प्रवीना के यश के चर्चे हो रहे थे। अब रुक्मणि कुंवरि और अधिक व्याकुल रहने लगी। उनकी ये व्याकुलता उनके पुत्र ने भी देखी। अपनी माता के कष्ट निवारण का उसने संकल्प किया। रुक्मणि कुंवरि के इस पुत्र का नाम उग्रसेन था।

अब प्रवीना के आचरण में उदात्त संस्कृति का समवेश हो गया था। वो अपने पति जिन्हे वह प्रेम से 'जीत' कह कर बुलाती उनकी समर्पित पत्नी की भांति रहती। उनके पतिव्रत धर्म की प्रसिद्धि चहुँ ओर व्याप्त हो चुकी थी। वह नियमित रूप से माता शीतला और रामराजा की पूजा-वंदना करती। जब भी महल से बाहर वह अपने पद्मपद रखती उनके माथे पर अर्द्धघूंघट सुशोभित रहता। वह कुँवर इंद्रजीत के साथ उनके राज-काज में भी परामर्श देती, उनकी सहायता करती। उनके

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आचरण, उनके शील और उनकी राजकीय कुशलता पर समस्त ओरछा मुग्द्ध था, सभी उन पर गर्व करते।

राय प्रवीना की बढ़ती ख्याति से रुक्मणि कुंवरि के रात्रि-दिवस समान हो गए। न ही उन्हें निद्रा आती, न ही घड़ी भर चैन। एक लोहार की बेटी, एक पातुर प्रवीना, राजरानी की भांति, कुँवर इंद्रजीत का सामीप्य पाकर ठाठ से त्रिखंडा महल में रहती और एक राजरानी रुक्मणि कुंवरि अपने पति से दूर, किसी परित्यक्ता की भांति जीवन बिताती। अपनी माँ को घुलती देखकर, कुँवर उग्रसेन ने उनके दुःख के निवारण के लिए त्रुटिपूर्ण मार्ग के चयन का निश्चय किया।

एक दिवस जब इंद्रजीत किसी राजकार्य से महल से बाहर निकलकर गए ही थे, तभी वहाँ कुँवर उग्रसेन पधारे। रुक्मणि कुंवरि के पुत्र होने के कारण राय प्रवीना भी उन्हें पुत्रवत ही मानती थी। उग्रसेन के हृदय में छिपी प्रतिशोध की ज्वाला से अनभिज्ञ वो जब उनके लिए दासी को जलपान लाने का निर्देश दे रही थी तो उग्रसेन ने कमर में खुसी कटार से आक्रमण कर दिया। यद्यपि प्रवीना ने शस्त्र शिक्षा ली थी किन्तु उग्रसेन शक्तिवान नवयुवक था। वो बहुत देर तक उसके प्रहारों से स्वयं की सुरक्षा नहीं कर सकती थी। और जब उन्हें लगा अब वो अपने प्राण नहीं बचा सकती, उनका अंत निकट है तभी वहाँ इंद्रजीत आ गए। वो कुछ आवश्यक वस्तु भूल गये थे, जिसे लेने के लिए वो महल में वापस आये तो वहाँ का दृश्य देखकर उनके पाँव तले से धरती खिसक गई। उनका पुत्र उग्रसेन उनकी प्राणप्रिया प्रवीना पर कटार से प्रहार कर रहा था और प्रवीना इधर-उधर हट के, पैंतरा बदल के स्वयं की रक्षा के लिए प्रयत्नशील थी। उनके देह पर कई जगह घाव थे और वहाँ से रुधिर बह रहा था। इंद्रजीत ने प्राणप्रिया को इस अवस्था में देखा तो उनके हृदय में हूक उठी। भागकर उन्होंने प्रवीना को अपने अंक में भर लिया और धक्का देकर उग्रसेन को गिरा दिया। पिता कुँवर इंद्रजीत को सामने देख कर उग्रसेन भयभीत हो उठा।

इंद्रजीत ने तुरंत वैद्य को बुलवाकर प्रवीना का उपचार आरम्भ करवाया। उग्रसेन से डपटते हुए पूछा - "उसने ऐसा दुःसाहस क्योंकर किया?"

उग्रसेन यद्यपि भयभीत था फिर भी उसने कहा - "कि एक पातुर के लिए आप माता रुक्मणि कुंवरि को भूले बैठे हैं इसलिए मुझे ऐसा करना पड़ा।"

उग्रसेन के दुष्कृत्य लिए इंद्रजीत ने उसे उचित दंड दिया किन्तु उनके मन में प्रवीना के लिए कहा गया 'पातुर' शब्द सालता रहा। प्रवीना पहले ही आचार्य

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

केशव द्वारा 'पातुर' लिखे जाने से आहत थी, अब वह और अधिक शोकग्रस्त हो गई। वो बहुधा मौन रहती, अकेली बैठी-पड़ी रहती। भोजन-जल लेने की भी सुध नहीं रहती। इंद्रजीत उन्हें इस प्रकार देखते और मन ही मन कुढ़ते। उग्रसेन द्वारा प्रवीना की देह पर दिए गए घाव तो भर चुके थे किन्तु उनके हृदय का घाव रिसता रहता। अंततः इंद्रजीत ने एक निर्णय लिया।

यद्यपि इंद्रजीत ने प्रवीना से गंधर्व विवाह किया था। दोनों एक दूसरे के प्रति पति-पत्नी की भांति समर्पित थे, पर इंद्रजीत ने अब शुभ मुहर्त देखकर प्रवीना के साथ सप्तपदी लेकर बहुत से जनों के समक्ष उन्हें अपनी ब्याहता पत्नी का सम्मान देते हुए कहा - "प्रवीना मेरी ब्याहता पत्नी है, उस पर किया गया कोई भी घात और कटाक्ष किसी भी मूल्य पर बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। जो भी ऐसा करेगा उसे कठोर दंड दिया जाएगा।"

इंद्रजीत के इस कृत्य से प्रवीना भावविह्वल हो उठी। भावना के अतिरेक में उन्होंने अपनी दोनों आँखें इंद्रजीत के चरणों पर रख दी। उनकी आँखों से निकलती गंगा-जमुना की धार इंद्रजीत के पांवो को जब पवित्र कर रही थी तब उनके रक्तिम अधरों ने कहा "जीत, आज आपके इस सम्मान से मैं सम्पूर्ण हुई, निष्कलंक हुई, धन्य हुई। आज मैं, आचार्य केशव ने जिसके लिए कविप्रिया और आपके लिए रसिकप्रिया लिखी उसके पवित्र संगम से इंद्रप्रिया हो गई।"

***

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

युद्ध

इधर ओरछा में सभी की दृष्टि में प्रवीना का अत्यंत सम्मान था किन्तु आगरा में अकबर अब तक अपना अपमान पूरी तरह भूला नहीं था। प्रवीना का ओरछा में बेहद आदर है, ये बात जब उसे पता चली तो ओरछा को सजा देने का उसने मंसूबा बाँधा। इस काम के लिए उसने अबुलफजल को मुकर्रर किया। अकबर ने एक राजपूत को दूसरे राजपूत से लड़वाकर, भाई को भाई से लड़वाकर अब तक कई हिन्दू रियासतों का पतन किया था। उसने अबुलफजल को ओरछा में इसी नीति का अनुसरण करने का सुझाव दिया। अबुलफजल निजी रूप से प्रवीना से द्वेष रखता था इसलिए वो ओरछा और प्रवीना को नीचा दिखाने के लिए योजना बनाने लगा।

✪✪✪

अब तक प्रवीना के परामर्श से इंद्रजीत और विशेषकर वीरसिंह मुगलों के आधिपत्य से ओरछा की भूमि को स्वत्रंत कराने लगे थे। वीरसिंह ने

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इंद्रजीत की सहायता से पांवया, तोमरगढ, नरवर और कोलारस को मुगलों से स्वतंत्र कराने के बाद भांडेर पर धावा बोल दिया। यहाँ का मुगल सूबेदार हसनखां बिना लड़े ही भाग गया और भांडेर मुगल दासता से स्वतंत्र हो गया। भांडेर जैसा ही हश्र एरच के ईसा खां का हुआ हुआ।

एक के बाद एक पराजय से अकबर तिलिमला उठा और उसने अबुलफजल को जल्द से जल्द कुछ करने को कहा। अबुलफजल निजी रूप से इंद्रजीत से मिला और उन्हें ओरछा का राज्य देने का प्रलोभन देकर वीरसिंह के विरुद्ध मुगलों की सहायता देने को कहा।

"ओरछा का राज्य उनके बड़े भाई रामशाह का है"- ऐसा कहकर कुँवर इंद्रजीत ने अबुलफजल का प्रलोभन ठुकराते हुए उसकी बहुत भर्त्स्ना की।

इंद्रजीत से निराश होकर अब अबुलफजल ने रामशाह को इंद्रजीत और वीरसिंह की बढ़ती शक्ति का डर दिखाकर उससे कहा कि कहीं ऐसा न हो एक दिन ये दोनों आपको ओरछा राज्य से बेदखल कर दे। पहले तो रामशाह ने ऐसी किसी भी सम्भावना को ख़ारिज कर दिया पर कहते हैं कि बार-बार घिसने से रस्सी भी पत्थर को काट देती है। अत: जब अबुलफजल ने बार-बार यही बात रामशाह से कही तो वो अपने भाइयों की बढ़ती शक्ति से आशंकित हो गया। अबुलफजल ने उसे इंद्रजीत और वीरसिंह की बढ़ती शक्ति पर अंकुश लगाने के लिए आगरा से ओरछा जाने की सलाह दे दी।

रामशाह को कूटनीति से अपने भाइयों के विरुद्ध कर पाने में सफल होने के बाद, अबुलफजल अब वीरसिंह, इंद्रजीत और राय प्रवीना का दमन करने के लिए ओरछा आ पहुँचा।

खुद सुसज्जित शिविर में बैठकर अबुलफजल ने वीरसिंह और इंद्रजीत के विरुद्ध रामशाह और आसकरण की सरपरस्ती में लश्कर भेज दिया। हाय रे भाग्य की क्रीड़ा, एक विदेशी तुरुक की इच्छा पूर्ति के लिए भाई-भाई आमने-सामने मैदान में आ डटे।

भाई-भाई को यूँ युद्ध के लिए सज्ज देख प्रवीना को अपार दुःख हुआ। उन्होंने आचार्य केशव से भाईयो की आपस में सुलह कराने का जोर दिया। आचार्य केशव ने सुलह की कोशिश की किन्तु वे निष्फल रहे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

युद्ध में वीरसिंह और इंद्रजीत विजयी रहे। रामशाह के पुरोहित मायाराम का युद्धक्षेत्र में वध हो जाने से उनका उत्साह भंग हो गया और वे युद्ध भूमि से वापस चले गये। मुगलिया लश्कर बुंदेलों की मार से तितर-बितर हो गया।

पराजय से बौखलाए अबुलफजल ने आगरा से विशाल लश्कर बुलवाया। ओरछा के रामशाह ने अपने काका दुर्गादास को मुगलों की सहायता के लिए भेजा। अब्दुल्ला खान और दुर्गादास के नेतृत्व में अबुलफजल ने लश्कर को पवाया पर आक्रमण करने भेजा। इंद्रजीत, प्रतापराव को साथ लेकर वीरसिंह समरभूमि में आ डटे। इधर बुंदेले वीर मुगल सेना के दांत खट्टे कर रहे थे उधर अबुलफजल एक लश्कर सजाकर बड़ौनी जा पहुँचा।

बड़ौनी वीरसिंह की व्यक्तिगत जागीर थी जिसे उनके पिता मधुकर शाह ने उन्हें प्रदान किया था। इस समय बड़ौनी में बहुत थोड़े से सैनिक थे किन्तु उन्होंने बड़ी वीरता से अबुलफजल की विशाल सेना का सामना किया, किन्तु वे सब कब तक ठहरते। बीस-बीस मुगलों को काटने के बाद वो भी रणभूमि में कट गिरे। वहशी और क्रूर अबुलफजल ने बड़ौनी को लूटने, औरतों के बलात्कार और कत्लेआम का हुक्म दे दिया। लूटी-उजड़ी बड़ौनी को अबुलफजल ने अपने मन की सांत्वना के लिए अग्नि के हवाले कर दिया।

अबदुल्ला खां को हराकर वीरसिंह अभी घोड़े की पीठ से उतरे भी न थे कि उन्हें बड़ौनी के भस्म होने की शोकातुर सूचना मिली। इस समय राय प्रवीना भी पवाया में उपस्थित थी और वीरसिंह तथा इंद्रजीत को युद्ध के परामर्श दे रही थी। बड़ौनी भस्म की खबर पाकर वीरसिंह हताश अस्वथा में प्रवीना के पास पहुँचे।

"युद्द में विजय के बाद भी ये मलिन मुख?"- राय प्रवीना ने अपने पराक्रमी देवर वीरसिंह के मुख पर छाई निराशा को देखकर पूछा।

"जब अपनी पैतृक सम्पत्ति भस्मीभूत हो जाए तो प्राप्त हुई विजय का कोई मूल्य नहीं रह जाता, भाभी।"

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"पैतृक सम्पत्ति...?"- धम्म से बैठे निराश वीरसिंह को जल का पात्र देते हुए प्रवीना ने पूछा।

वीरसिंह जल पीने लगे और तभी वहाँ इंद्रजीत ने आकर बताया - "प्रवीना, हम यहाँ युद्ध में रत थे और वहाँ अबुलफजल ने अवसर देखकर बड़ौनी में लोमहर्षक अत्याचार किये। लूट, कत्ल, बलात्कार के बाद भी उसका दिल नहीं भरा तो उस दुष्ट ने बड़ौनी को जला कर राख कर दिया।"

"ये अबुलफजल बुंदेलखंड ही नहीं सारे हिन्दुस्तान का अपराधी है। जीत, वीरसिंह..."- राय प्रवीना पति और देवर दोनों को ललकारते हुए बोली - "कलम और कृपाण धारण किये हुआ, यदि पूर्वाग्रह से भरा हो तो वह समाज, राष्ट्र, वर्तमान ही नहीं अपितु भविष्य के लिए भी अत्यंत हानिकारक होता है। ऐसे दुष्ट व्यक्ति का जीवित रहना समाज और राष्ट्र दोनों के लिए अहितकर है। अब अबुलफजल को जीवित रहने का कोई अधिकार नहीं है।"

किन्तु अबुलफजल अकबर को अत्यंत प्रिय है उस के वध से अकबर अपनी पूरी सेना के साथ यहाँ आ धमकेगा और हम सैन्य रूप से अभी इतने शक्तिशाली नहीं जो आमने-सामने के युद्ध में उसे पराजित कर संके।"- वीरसिंह ने हताशा में अपनी दुविधा कही।

वीरसिंह की दुविधा जानकार प्रवीना कुछ पल मौन रहकर विचार करने के बाद बोली - "जैसे अकबर ने आप भाइयों को आपस में लड़वाया है, वैसे ही आप लोगो को अकबर के पुत्र सलीम का उपयोग उसके विरुद्ध करना चाहिए। यदि वे हम में फूट डालकर अपना प्रयोजन सिद्ध करते हैं तो हमारे ऐसा करने में भी कोई त्रुटि नहीं, कोई लांछन हम पर नहीं लगेगा। अब तो जैसे भी हो साम, दाम, दंड, भेद, मानवता के अपराधी अबुलफजल का वध होना ही चाहिये।"

इंद्रजीत और वीरसिंह दोनों ने दुर्गा सी दहाड़ती प्रवीना की हुंकार सुनी। उनके भीतर स्फूर्ति रक्त बनकर प्रज्वल्लित हुई। मुख और देह से नैराश्य के भाव जाते रहे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

 Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

"ऐसा ही होगा।"- इंद्रजीत और वीरसिंह दोनों दृढ़ता से बोले। उनके हाथ तलवार पर सख्ती से कसे हुए थे।

इस बीच अबुलफजल ने इंद्रजीत के छोटे भाई हरिसिंह जो भसनेह के जागीरदार थे, उनके विरुद्ध खड़गराय की सरपरस्ती में मुगल लश्कर भेजा। इस युद्ध में हरिसिंह वीरगति को प्राप्त हुए। अब अबुलफजल के अत्याचार असह्य हो गये थे। उसके कुकृत्यों का उचित दंड देने का समय आ पहुँचा था।

अबुलफजल इस समय पराईछे में डेरा डाले हुए था।

वीररसिंह, इंद्रजीत और चम्पतराय के साथ वहाँ आ पहुँचे। शीघ्र ही दोनों सेनाओ में तुमुल युद्ध होने लगा। मुगल सेना संख्या की दृष्टि से आठ गुना अधिक थी। यद्यपि युद्ध में बुंदेलों की भी क्षति हुई किन्तु उनकी ये क्षति उस समय नगण्य हो गई जब वीरसिंह ने अबुलफजल का शीश उसके धड़ से उतार के शीतला माता का जयनिनाद किया।

त्रेता युग में माता सीता की रक्षा के लिए उनके पति राम और देवर लक्ष्मण ने रावण का वध किया था और आज देवी प्रवीना की प्रेरणा से उनके पति इंद्रजीत और देवर के हाथों अबुलफजल का वध हुआ था। आज ओरछा में सभी पुष्पवृष्टि कर वीरसिंह, इंद्रजीत और राय प्रवीना के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर रहे थे।

***

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अंतिम यात्रा

मेवाड़ के सूर्य महाराणा प्रताप से मिली लगातार शिकस्त और ओरछा की नक्षत्र राय प्रवीना के सामने भरे दरबार में निरुत्तर और पराजित होने वाला अकबर अपने सीने में ये दर्द लिए अत्यधिक मदिरा सेवन से क्षत-विक्षत हुए गुर्दों के कारण दुनिया से अलविदा कर गया।

शहजादा सलीम अकबर की मृत्यु के बाद जहांगीर के नाम से मुगल सल्तनत का स्वामी हुआ। वीरसिंह के साथ मित्रता निभाने के लिए उसने उन्हें ओरछा का राजा बनाने के लिए सेना भेजी। रामशाह जिन्हें अब तक अकबर की कृपा प्राप्त रही थी उन्होंने मुगल लश्कर को समझाने के लिए इंद्रजीत को भेजा। इंद्रजीत भी यही चाहते थे कि उनके कुटुंब का मामला घर में ही सुलझ जाए। रामशाह या वीरसिंह में कोई भी ओरछा का राजा रहे। दोनों ही उनके भाई थे। इंद्रजीत को अपने लिए कुछ नहीं चाहिए था। उनके पास राय प्रवीना का प्रेम था जो संसार में उनके लिए सबसे बहुमूल्य था।

इंद्रजीत मुगल लश्कर को समझा बुझाकर वापस करने के लिए उनके खेमों के निकट गये। मुगल लश्कर के जाने के बाद, उन्होंने आचार्य केशव

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और अन्य संभ्रांत व्यक्तियों की सहायता से रामशाह और वीरसिंह के मध्य सुलह-समझौते का विचार रखा।

मुगल सेना में एक सैनिक अबुलफजल के रिश्ते वाला था। इंद्रजीत को मुगल खेमों में आया देख, उसने घात लगा कर उन पर हमला कर दिया। अचानक हुए इस आक्रमण से इन्द्रजीत घायल हो गए। इंद्रजीत के साथ गए, कुछ अंगरक्षक सैनिक उनकी रक्षा करते किसी प्रकार मुगल खेमों से दूर ले गये।

वीरसिंह को जब इस दुःखद घटना की सूचना मिली तो उन्होंने मुगल लश्कर की भर्तस्ना की। मुगल लशकर के सिपहसालार ने इंद्रजीत पर हुए हमले के लिए मुआफी माँगते हुए दुःख प्रकट किया।

अब वीरसिंह ओरछा के राजा हुए।

प्रवीना जख्मी इंद्रजीत की सेवा में मनोयोग से जुट गई। उनकी सेवा और पतिव्रत धर्म की शक्ति से इंद्रजीत शीघ्र ही स्वस्थ्य हो गए। प्रवीना भाई-भाई के युद्ध से अत्यंत व्यथित थी। उन्होंने अपनी व्यथा इंद्रजीत से कही। दोनों ने ओरछा छोड़कर अपनी व्यक्तिगत जागीर कछौआ लौटने का निर्णय लिया। कछौआ और वारद्वारा लौटने की बात से प्रवीना के चेहरे पर कमलपुष्प खिल उठे। उन्हें रह-रह के अपने बचपन के दिन याद आने लगे।

ओरछा से विदा लेने से पहले राय प्रवीना इन्द्रजीत के साथ आचार्य केशव के निवास पर गई। आचार्य केशव के चरणों मे झुक कर प्रवीना ने प्रणाम किया। आचर्य केशव ने गर्व से अपनी शिष्या के सर पर हाथ फ़ेरते हुए उन्हे आशीर्वाद दिया। केशवदास बोले - "राय प्रवीन मैंने तुम्हारे लिए जो पातुर लिखा उसके लिये क्षमा माँगता हूँ। तुमने अपनी कलाओं से मुझे और ओरछा दोनों को धन्य कर दिया है।

प्रवीना ने आचार्य केशव को, अपनी शिष्या बनाकर जो उसे कलाओं में पारंगत किया, उसके लिए ढेरों आभार प्रकट किया। गुरुपत्नी प्रवीना को पुत्री मानती थी। प्रवीना के ओरछा से जाने की बात सुनकर उनके नेत्र सजल हो गये वह प्रवीना से गले लगकर मिली।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बचपन में पाँव में पद्म देख कर राजरानी बनने की ज्योतिष की भविष्यवाणी सत्य सिद्ध करते हुए वारद्वारा की पुनिया, सावित्री कुँवर इंद्रजीत की रानी, इंद्रप्रिया बनकर अपने गाँव लौटी।

गाँव वालों के लिए प्रवीना स्वर्ण थी तो इंद्रजीत पारस। दोनों के कछौआ आगमन में मंगल गीत गाये गये। वीथियाँ, हाट दीपों से सजाये गये।

इंद्रजीत के सखा लाखा और प्रवीना सखी महुवा पहले से जागीर संभालने के लिए कछौआ में थे।

प्रवीना महुवा से मिलकर आनन्दित हुई। बचपन के दिन याद आ गए। दोनों सखियाँ वो सभी जगह घूमी, जहाँ बचपन में घूमती थी। जंगल के किनारे सरोवर के उस घाट गई, जहाँ स्नान करते समय उन्हें पहली बार लाखा और इंद्रजीत मिले थे।

दोनों सखियाँ मत्स्य परियों की तरह सरोवर मे वैसे ही बहुत देर तक कलरव करती रही जैसे बचपन में किया करती थी।

कछौआ में इंद्रजीत और प्रवीना सुखपूर्वक रह कर प्रजा के कल्याण लिए कार्य करने लगे। प्रवीना प्रजा के मध्य उनकी पुत्री के समान थी। सभी के दुःख और सुख में वे तत्परता से सम्मिलित रहती। उनके अथक परिश्रम की परिणिती के रूप में उनकी देह निर्बल होकर हृदय रोग की शिकार हो गई।

इंद्रजीत ने कुशल वैधों से प्रवीना का उपचार करवाया किन्तु सब व्यर्थ रहा। प्रवीना का रोग दिन पे दिन बढ़ता गया। और फिर वो दिन भी आया जब प्रवीना की दिव्य आत्मा परलोक की यात्रा पर निकल गई।

अपने अंतिम समय में प्रवीना अपने प्रियतम इंद्रजीत की गोद में सर रख कर लेटी थी। इंद्रजीत की आँखों से झर-झर आसूं बह रहे थे। प्रवीना उन्हें दिलासा देते हुए बोली -जीत, ये अंत नहीं है, अब तो हमारे प्रेम की शुरुआत हो रही है। तुम शोक ग्रस्त क्यों हो रहे है।"

प्रवीना की बात सुनकर इंद्रजीत की कंठ से हिचकियाँ उबल पड़ीं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपनी सौगंध देकर इंद्रजीत को विलाप करने से रोकते हुए प्रवीना ने पूछा - "जीत क्या आप हमें अगले जन्म में अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करेंगे? क्या मुझे हर जन्म में इंद्रप्रिया बनने का सौभाग्य मिलेगा?"- इस समय एक क्षीण मुस्कान उनके ओठों पर खेल रही थी।

इंद्रजीत प्रवीना के केश सहलाते हुए बोले - "ये इंद्रजीत तुम्हारे बिना अधूरा है। तुम्हारे बिना इस जीवन का मूल्य ही क्या है? यदि मैने जीवन में कोई सत्कर्म किये हैं, तो ईश्वर उनके बदले मुझे हर जन्म में पत्नी के रूप में तुम्हें ही प्रदान करें।"

इंद्रजीत की बात सुनकर प्रवीना ने उन्हें एक बार खुले नेत्रों से यूँ देखा जैसे प्रियतम की छवि वे जन्म-जन्मांतरों के लिए अपने भीतर समाहित कर रही हो। उनके मुख की चमक बढ़ गई। उनके मुख की बढ़ी ये चमक बुझते दिये की बढ़ती लौ की भांति थी। उनकी आत्मा नश्वर देह का परित्याग कर अनंतयात्रा पर निकल गई थी।

इंद्रजीत बहुत देर तक प्रवीना का पार्थिव शरीर देखते रहे। प्राणप्यारी प्रवीना की दी गई सौगंध के कारण उनकी आँखे नहीं रो रही थी लेकिन उनका हृदय फटा जा रहा था।

इंद्रजीत ने अपने हाथों से प्रवीना का श्रृंगार किया। इस समय प्रवीना यूँ प्रतीत होती थी जैसे वे नृत्य की मुद्रा में विश्राम कर रही हो। इंद्रजीत उनके माथे से घूँघट हटाकर उनकी माँग में सिंदूर भरा तो सारी सृष्टि प्रवीना को नमन कर उठी। वारद्वारा की वो लड़की, जिसे न जाने कितनों के साथ उसके गुरु आचार्य केशव तक ने पातुर कहा था, वो इंद्रप्रिया बनकर ओरछा के राजकुँवर के कन्धों पर अंतिम यात्रा पर निकली।

इंद्रजीत ने इंद्रप्रिया की अर्थी को कांधा दिया। रास्ते में कन्धा देने वाले अन्य व्यक्ति बदलते रहे किन्तु इंद्रजीत मौन रुदन करते प्रवीना की अर्थी को कन्धा देते रहे। समस्त वारद्वारा और कछौआ के लोग रास्ते में खड़े होकर अपनी पूर्णिमा को रोते-बिलखते विदाई दे रहे थे। न जाने कितने लोग प्रवीना की चिता सजाने शमशान पहुँचे।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चन्दन की सुरभित लकड़ियों से इंद्रजीत ने चिता सजाई और उस पर प्रवीना की देह को लिटा कर उन्हें अपलक देखते रहे। प्राणप्यारी के माथे और अधरों के चुम्बन के बाद उन्होंने मंत्रोच्चार के बीच चिता में अग्नि लगा दी। प्रवीना की चिता और इंद्रजीत का हृदय एक साथ धू-धू करके जल उठा। प्रवीना की देह के पंचतत्त्व में विलीन होने तक इंद्रजीत चिता के सामने खड़े रहे थे।

प्रवीना के परलोकगमन के बाद इंद्रजीत के लिए ये संसार निरर्थक हो गया था। सत्य ये तो था कि इंद्रजीत और प्रवीना एक-दूसरे के बिना अपूर्ण थे। इंद्रजीत और राय प्रवीना के अगाध प्रेम को देखकर ईश्वर उन्हें अधिक दिनों तक अलग नहीं रख सकता था।

एक दिन जब इंद्रजीत राय प्रवीना के ध्यान में बैठे थे तो दूर क्षितिज से प्रवीना ने इंद्रजीत की तरफ मुस्करा कर अपनी मृणाल बाहें फैलाई। खुद को बुलाती प्रवीना को देख कर इंद्रजीत उनकी ओर आकुलता से बढ़े।

इंद्रजीत की देह से प्रकाश पुंज निकल कर क्षितिज की ओर चला और उनका ध्यानस्थ शरीर भूमि पर एक ओर लुढ़क गया।

इंद्रजीत की देह से निकले प्रकाश पुंज को इंद्रप्रिया की देह के प्रकाश पुंज में मिलते हुए अंतरिक्ष में खड़े देवताओं में अपनी आँखों से देखा था।

समाप्त

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लेखक परिचय

नाम - सुधीर मौर्य

जन्म - ०१/११/१९७९, कानपुर

माता - श्रीमती शकुंतला मौर्य

पिता - स्व. श्री राम सेवक मौर्य

पत्नी - श्रीमती शीलू मौर्य

शिक्षा: अभियांत्रिकी में डिप्लोमा, इतिहास और दर्शन में स्नातक, प्रबंधन में पोस्ट डिप्लोमा।

सम्प्रति: इंजिनियर, और स्वतंत्र लेखन।

कृतियाँ:

1) एक गली कानपुर की (उपन्यास)
2) अमलतास के फूल (उपन्यास)
3) संकटा प्रसाद के किस्से (व्यंग्य उपन्यास)
4) देवलदेवी (ऐतहासिक उपन्यास)
5) मन्नत का तारा (उपन्यास)
6) माई लास्ट अफ़ेयर (उपन्यास)
7) वर्जित (उपन्यास)
8) अरीबा (उपन्यास)
9) स्वीट सिकस्टीन (उपन्यास)
10) पहला शूद्र (पौराणिक उपन्यास)
11) बलि का राज आये (पौराणिक उपन्यास)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

12) रावण वध के बाद (पौराणिक उपन्यास)

13) मणिकपाला महासम्मत (आदिकालीन उपन्यास)

14) हम्मीर हठ (ऐतिहासिक उपन्यास)

15) अधूरे पंख (कहानी संग्रह)

16) कर्ज और अन्य कहानियां (कहानी संग्रह)

17) ऐंजल जिया (कहानी संग्रह)

18) एक बेबाक लडकी (कहानी संग्रह)

19) हो न हो (काव्य संग्रह)

20) पाकिस्तान ट्रबुल्ड माईनरटीज (लेखिका - वींगस, सम्पादन - सुधीर मौर्य)

पत्र-पत्रिकायों में प्रकाशन - खूबसूरत अंदाज़, अभिनव प्रयास, सोच विचार, युग्वंशिका, कादम्बनी, बुद्ध्भूमि, अविराम, लोकसत्य, गांडीव, उत्कर्ष मेल, अविराम, जनहित इंडिया, शिवम्, अखिल विश्व पत्रिका, रुबरु दुनिया, विश्वगाथा, सत्य दर्शन, डिफेंडर, झेलम एक्सप्रेस, जय विजय, परिंदे, मृग मरीचिका, प्राची, मुक्ता, शोध दिशा, गृहशोभा आदि में।

पुरस्कार - कहानी 'एक बेबाक लड़की की कहानी' के लिए प्रतिलिपि २०१६ कथा उत्सव सम्मान।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

@AuthorSudheerM
sudheermaurya1979@gmail.com
@SudheerMaurya
sudheer_maurya

इंद्रप्रिया

अपने समय की सर्वाधिक सुंदर स्त्री, एकनिष्ठा नर्तकी, कुशल कवियत्री, समर्पित प्रेयसी, ओरछा की राय प्रवीना की केवल कथा भर नहीं है, अपितु यह दस्तावेज है, उस वीरांगना का जिसने कामुक शहंशाह अकबर के मुगल दरबार में अपनी विद्वत्ता से न केवल अपनी अस्मिता की रक्षा की बल्कि उसने अकबर को पराजित भी किया।

साहित्य विमर्श
उत्कृष्ट साहित्य के प्रसार के लिए समर्पित

MRP: ₹ 149/-

sahityavimarsh.in

COVER & LAYOUT : bookbabustudio@gmail.com

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant